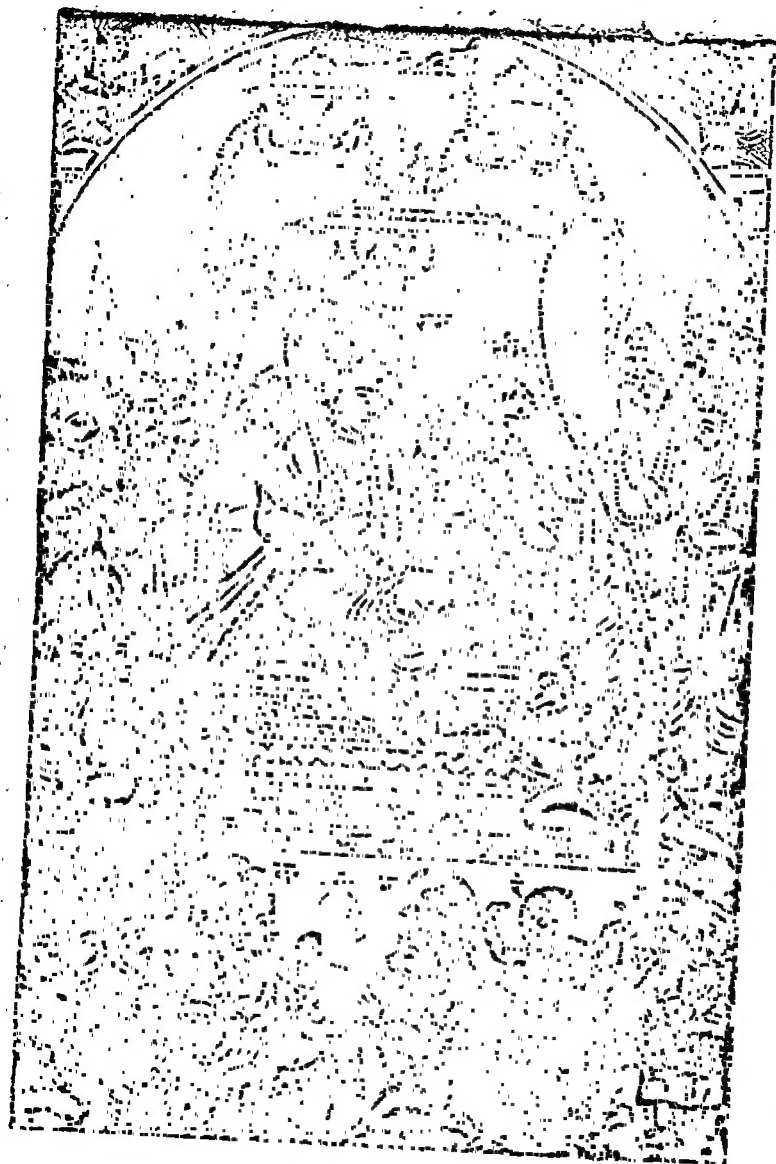
श्रीराधाकृष्णाय नमः ।





विज्ञापन ।

प्रिय रसिक सिरोमणी महा मित्रों! जरा इसेभी बाँचकर आनंद लीजिये यह सुदबुद सबलंगाके सात जन्मकी वार्ता० नवरस पूरित वाटिकाकी सहल कीजिये इस्में (शृंगार वीर करुणाद्भुत हास्य भयानकाः विभत्स शान्ति वात्सल्य रसाः) अति मनोहररसिक छंद बद्ध व वार्तिक वर्णनकी है जिस्में० सातज्ञन्म जैसें

(कवित छप्पै) **प्रथमज रंभारूप दूसरो बनचर जानों ॥ तीजोरूप कुम्हार चतुर कपि फेर बखानों ॥ पूरुप सुगंधा नाम पांचवो नृपघर रहिये ॥ छटो अनसना नाम कूख दासीकी लहिये ॥ सब लंग अंग चंपक बरन जन्म सातवों जानिये ॥ शिवकरण कहे भावी प्रबल रंभ कथा बाखानिये १**

(इस प्रकार सातही जन्ममें पाक मोहोबत रहके पीछे इन्द्रलोक पहुँचकर मुक्तिको प्राप्त भये ऐसी चमत्कारिक रसीली वार्ता रचनाकर आप प्रिय मित्रोंको भेट करताहूं सो स्वीकार करें और भिन्नाभिन्न भेद अनुचित वाक्य होयसो दयालुतासे क्षमा करें ।



आपका कृपाभिलाषी–
शिवकरन रामरतन दरक,
(इन्दोर)

श्रीः

सूचीपत्र ख्याल व वार्ता ।

सहा शिवकरन रामरतन दरक मूंडवेवाला

" इंदोर " छापाखाना.

आना	
४	राजा भरतरी अमर फलका
४	राजा भरतरी सिंध सिकार
२	राजा भरतरी पिंगला सती
४	अमर सिंघराठोड़
३	रतन सिंध (रतन कंवर)
४	इंद्रसभाका ख्याल नाटिक
२	नागोरी छेला सूरतकी मालन
१॥	चूड़ीगर रंग भीनी
३	चितारा चित रंगी
१॥	छेला छिंद गारी
१	छेला पनहारी
२	छेला दिलज्यान

सूचीपत्र।

आना	
२	विधवादुरदसाका (आसक मस्ताना
२	बजाजका
२	गोपी चंदराजा
१।	मिरजामन मोहनी
१।	साला हली नणदोई
१।	आसाडावी
४	खींवा आभल
१	कलयुगका
३	चोबोली राणी
४	रतना हमीर
३	राजाचंद
३	मोहनाराणी
१॥	पतल बंधी भात छुडावनी

इस सिवाय वहोतसी पुस्तकें मोजूदहैं नाम दरियाफ्त करना होय तोआध आनाका टिकट भेजदो सूचीपत्र मुफत भेज दिया जायगा.

शिवकरन रामरतन दरक छापाखाना इंदोर.

श्रीः ।

सुदबुद सब लंगाकी वारता ॥

सात जन्म वर्णन ।



सहा शिवकरण रामरतन दरक माहेश्वरी
मारवाडी मूंडवेवाले कृत प्रारंभ ।

दोहा—श्रीसारद गुर गणपती लंबोदर गण
ईस ॥ विघन विदारण बुध्धिवर तोहिनिवाऊंसीस
॥१॥ वंदूँसारदमायके चरणकँवलसुखदाय ॥ वर
अक्षर देईस्वरी भूलाँ हरफ भताय ॥ २ ॥
मूसे वाहन गज वदन हंसवाहन कर बीन ॥
अरज करूं कर जोरके दीजै बुद्धि नवीन ॥ ३ ॥
विघन निवारण बुद्धि बर गणपत सारद माय ॥
दध अक्षर मेटण सदा वाणी विमल कराय॥ ४॥
वंदूं जगके रसिक कवि पंडित चतुर प्रवीन ॥
कहूं कथा सुदबुद तणी कउतक कला नवीन ॥
॥ ५ ॥ आदि कवी सुदबुद कथा कही हुती

ततसार ॥ फिर मूढन कर परतपर लिख लिख दई बिगार ॥ ६ ॥ सुन दोहे कहुं चमकते ॥ कविसुख कढे सु अैन ॥ परिन मिले पूरे कहूं तातैं परीन चैन ॥ ७ ॥ बहु ढूंढी पाईनहीं परत पुरातन आद ॥ जोहि मिली सो अदपरी अड वड अैंड असाद ॥ ८ ॥ ईस्त बीस्त भेटी अमिळ तुक खंडित अर्थहीण ॥ करी असव्य अयानमिल पढ नहिं सकैं प्रवीण ॥ ९ ॥ अव- कछु म्हेंकाथिबो चहूं पूर्व जन्म इतिहास ॥ आदि सुनी बिधि और यह लखि मतिकरियो हास ॥ ॥ १० ॥ आदि मंगळा चर्णमें करी विनय शिव- कर्ण ॥ कवि पंडित चातुर क्षिमाहि रखियो मोही सर्ण ॥ ११ ॥ प्रथम जन्म पूरब कथा पूरी मिलीन कौय ॥ काथिहूं पहला जनम छव साँभ- लज्यौ नर लौय ॥ १२ ॥ कछुदोहे चंद्रायणे जूने मिले अशुद्ध ॥ अवरनवेशिवकरणधर लि

येजौडकरशुद्ध ॥ १३ ॥ सात जनम सब लंग
घट बुदबुदके जान ॥ कथा रसिक शिवकरण
केह कहूँ जौड संधान ॥ १४ ॥ नगर ना
आभापुरी विमल सेठ ताठाम ॥ जिणव
रसियो जनमियौं मदनचंद जिम नाम ।
॥ १५ ॥ लख लेखण क्रौडाँ कलम धनको
अंतन पार ॥ नगरसेठ पदवी लई चकवे साहूकार
॥१६॥हुंडी चालै चहुं दिसाँ रतनाँ भरचा भँडार
सदा अखूटी थिर रहै थाहर रिद्ध अपार ॥१७॥
हरख मदन जनम्यौ जदे वागा सौवन थार ॥
घर घर रली बधावणां घर घर मंगल चार
॥ १८ ॥ मदन थके मुख देखताँ कदन करे मन
भंग ॥ वदन छवी निरखत सदा सदन रमे
रतिरंग ॥ १९ ॥ राई वधतौ तिलवधे दिन
दिन तेज सवाय ॥ पंथचलंताँ कामण्यां घरतज
देखणजाय ॥ २० ॥ दौड पडे पग आखडे छवि

निरखण की चाह ॥ पूत्र चुंघावत मातजे नार तजे निज नाह ॥ २१ ॥ गौठ गूघरी नित करे बागाँरंगबणाय ॥ तिण अवसर येक अपछरा इन्द्र तणीं वँहँ आय ॥ २२ ॥ देख मदन मन मौहियो विकलभई वसकाम ॥ अधिक पियारौ इन्द्रसम रतिसम प्यारीबाम ॥ २३ ॥ पूष्यवीं ण रंभा चली निरषी मदन कँवार ॥ असन वसन भोजन तज्या नींद तजी घरनार ॥२४॥ भयौ मौह वस बावरौ बस्यौ सघन बन जाय ॥ येक समैं सुर कन्यका औरुहिं उतरी आय ॥२५॥ पीतम कूं प्यारी मिली ॥ प्यारी कूं मिलपीव ॥ पीतम प्यारी मिलगया जैसें सक्कर घीव ॥ २६ ॥हुई परस्स पर पूछना मृदुल वचन मुख वात ॥ नैंन सलूणा झिल रह्या मिलत भयौ कुसलात ॥ २७ ॥ वार्ता ॥ अठीतो इन्द्रकी अपछरा मदन चंदकौं देखके मौहित हुई ॥ अठी मदनचंद

अपछराकौं देखकर काम बस हुवौ और दौना-
के चसमा बाजी हौने लागी ॥ और माहौ
माहरेमाँहीं पूछनाँहोवणकी चूंप जागी ॥ इण
कह्यो आप कुंणछौ अठीरंभाकह्यौ आप-
कुणछौ तरे इणारे सारी वात वत लावण
हुई ॥ जद रंभा बोली ॥ चंद्रायणाँ ॥ इन्द्रत
णीं हूं अपछरा चुगवा आई फूल॥ कलमें देख्या
कँवरजी आप इन्द्र संतूल ॥ आप इन्द्र सं
तूल थाँसूँ मन लग्गियौ ॥ मोही मदन कँवार
मदन तन जग्गियौ ॥ उलट्यौ दिल दरियाव
कराख्योनाँ रहे ॥ परिहाँ रहसूँ कदमाँ माँहक
रंभा यूंकहे ॥ २८ ॥ दोहा ॥ पीतम प्यारी मन
मिल्यौ ॥ मोही मदन कँवार ॥ रंगभीनी अंगसूं
भिडी वीचन मावै हार ॥ २९ ॥ वार्ता ॥ अबे
अपछरा सूँ चश्मबाजियाँ करै छै; मदन चंद
[illegible]यानैंनी रोमन हरै छौ।नेहरे नरसै रंग लूटै छै ॥

तिलाणें तान तूटै छै ॥ रीझालू राग गावै छै ॥ अपछरानित आवैछै॥हाव भाव कटाक्ष दिखावैछै॥ रंगभीनी प्रेमपावैछै ॥ रंभासूं नेह लागाछै ॥ घरां काधंध भागा छै ॥ परनार्‍यां पीव हिलिया छै ॥ रंभासूं जीव मिलिया छै ॥ रंभावायक ॥ दोहा ॥ रेसाजन मति मौडज्यौ बाला पणको नेह ॥ भरजोवन मद छाकसी रखे दिखावौ छेह ॥ ॥ ३० ॥ मदनचंदवायक ॥ प्राण तजूं पण नाँतजूँ प्यारी थांसूं नेह॥ बँधी गाँठ नेह प्राणके तूटाँ छूटै देह ॥ ३१ ॥ वार्ता ॥ येकदिनरा समा जोगसें ॥ रंभा और मदनचंदके आपसमें हास्यविनोदहोयरयाछै जिणवखतमें रंभा इंद्रलोक की तारीफ वर्णीकरी तरेमदनचंदबोलियौ इंद्रलोकतो म्हांनें पिणादिखावौ जद रंभाबोली॥ रंभावायक ॥ दोहा ॥ इंद्रअखाडे मानवी कदेन धरसीपाय ॥ सहज सुद्रमाँभोगवे. देव इंद्र पुर

जाय ॥ ३२ ॥ वार्ता ॥ जदमदनचंदपूछैछे ॥ के सुद्रमाँ सहज काँइ छै ॥ तरेरंभा कहै छै ॥ सुद्रमानामें येक सहज छै ॥ जिणमें इंद्रकी सभाजुडै छै ॥ आठ पोहोरलीला विलास होयबोकरै छै॥ घणीं दूर लंबी चौडीछै ॥ जिण बीचमैंइंद्रकोसिंघासण छै ॥ सदानाटक अपछरांकरवो ईकरै छै॥ और छपन मेघमाला हाजर रह बोईकरै छै ॥इछा मौज और इच्छा भोग प्रापतहो जावैछै ॥ दोहा ॥ सहज सुद्रमाँदेव पुर भरे नखाली होय ॥ पुन्य करे सोहि पूगसी सांभल ज्योनर लोय ॥ ३३ ॥ ॥ वार्ता ॥ सुद्रमानामें सहजमें असंख्याती आगे बैठाछै और असंख्या फेर जाय बैठेतो भीडनैं होय ॥ और असंख्या ऊठ जायतो खालीनैं होय ॥ दोहा ॥ भूख प्यास लागे नहीं भोगे इच्छा भोग ॥ असन वसन मन वांछि सुख सदाहरख नाहिं सोग ॥ ३४ ॥ वार्ता ॥ इतनी सुणताहीं

मदन चंदतौ हट पकडनैं रंभारा विवाणमैं बैठ कर इंद्र लौकनैं विदाहुवो ॥ आगे मानव देहरी अटकणघाटी आई जठे रंभा मदनचंदनैं भँवरो वणाय और कँवलकी कलीमे घरलीनों ॥ आगे जायनै पूरब इंद्रके निजरकर वालागी जरेभँवरा नैंकंचुवामे प्रवेश करलीनौं ॥ अबेरंभा इंद्रसूं तालीम वजायकर निरत करवाखडी हुई ॥ वाजंत्र जंत्र तंबूरा मृदंग बजावालागा सप्तस्वर तीनग्रामसूं छवरागनैं छतीसरागणियाँकी गांन-विद्याहोवालागी और तानमानसूं सुरतालरीमि लावटहुई ॥ अबै रंगभीनी रंभानाचैछे ॥ सुरे सइंद्रराचैछे ॥ वाजंत्रतानतोडैछे ॥ गाएयंकअं-गमोडैछे ॥ दधकारांधूंसवाजैछे ॥ सुरेसईसराजैछे धमरोल्याँमहलगूजैछे धमरोल्याँधरणधूजैछे ॥

॥ दोहा ॥ तालतिलाणावाजिया ध्रवपदअरुसं-गीत ॥ ठठकचलाइठूमरी भ्रमनआयोचीत ॥

॥३५॥ चंद्रायणाँ दध कपडीधपथापियाँ नाचण लगीनिसंक ॥कमरलचक्कीकामणी भँवरखजाईपंख भँवरखजाईपंखभिचीज्यौकंचली ॥ रंभासोडैअं गअसूंज्यौअंचली ॥ ढीलीपदमणनार ॥ यादपिव आइयो॥परिहांपड्यौरंगमैंभंगकइंद्ररिसाइयौ३६॥ ॥ भँवरोवेठौकंचुवै पांख रह्यौ भरणाय॥ गुपत धरयौपुनिवंधमैं तोहि जातसुभावनजाय ॥ ३७॥ ॥ वार्ता ॥ रंभानिशंकनिरतकरैछै ॥ औरलच ककवांणज्यूंलुलैछै ॥ भँवरकंचुवेअसूँजियोछै ॥ पंखभणकारनेंगूंजियौछै ॥ तरेभँवरयादआयौ ॥ रंभानाचतीढीलीपडी रंगमैंभंगपड्यौ ॥ जरे इन्द्र कौपनेंजलदतालकरवाई तरेरंभावाजंत्राँनेंदोहाक हैछै ॥ दोहा ॥ घणींगईथौडीरही ॥ जामैं छिन छिनजाय ॥ पातरकहैपखावजी टुकियेकमधुरव जाय ॥ ३८ ॥ वार्ता ॥ रंभावाजंत्राँनेंकहैछै ॥ हेवाजंत्राँ रातघणींतोगई औरथौडी रहीछै ॥

जिणमैंपिणछिनाछिनवीतैछै ॥ थेटुकीयेकधीमा वजावौ ॥ इतरीसुणबाजंत्र ढीलावजावालागा जरेइन्द्रअस्वनीकँवार नामैं वेदाँनें हुकमकी यौके रंभारेकाँईदरदऊठियौसू नाचतीनाचती थाकी ॥ रौगकौनिदाँनकरौ ॥ जराँअस्वनीकँ वारनिदानचिकतस्याकरनैपाछौइन्द्रनेंदोहोकहैछै ॥ दोहा ॥ रौगदोषइणरेनहीं उपजीविथाअपार॥ काँचूमैंकछुकुचनविन इन्द्रकरौनिरधार ॥ ३९ ॥ ॥ वार्ता ॥ जरेइन्द्ररंभानेंबुलायनेदेखेतौकंचवामें भँवरछै तरेइंद्रपूछैछै ॥ ॥ दोहा ॥ इन्द्रकहै सुंणभामनी ल्याईकेमबुलाय ॥ भँवरकठासूंआ वियौ भँवरीदेतभुलाय ॥ ४० ॥ रंभावायक ॥ ॥ दोहा ॥ पूष्पवीणवाहूंगई वागाँभँवरसुरेस ॥ भरझौरीजवभ्रूगुलता आण कियौपरवेस ॥ ४१॥ ॥ वार्ता ॥ जवइन्द्रभँवरानेकपटखंडसरौवरसैंन्ह वावणरोहुकमदीयौ ॥ तवहलकाराँजायन्हवायौ

जबकपटखंडसरोवरको जलपरसताँप्रवाणही भँव
राकोमानवीहोयगयो ॥ कपटरूपदूरहूवो ॥
तरेहलकाराँ पाछोपकडनें इन्द्रकेहजूरल्याया
जदइंद्रउण पुरषनैंबुलायनैंपूछैछै॥ दोहा॥ गण-
राकसदानवकनाँ केकोइवीरापिसाच ॥ भँवर
वण्यो किण कारणैं ॥ कहदेमनकीसाच ॥
॥ ४२ ॥ वार्ता ॥ तरेसदनचंदहातजोडनें डर
तोहाँपतो बोल्यो प्रथवीनाथ हूं तो आभा पु-
रीकोमाहाजनछूं ॥ रंभाकीसाथ आपका दरस
णकरवाआयोछूं ॥ इतनी सुणरंभानें बुलायकर
इंद्र पूछियोतरेरंभापाछीबोलीनहीं जबइंद्ररंभाको
कसूरजाणकरश्रापदीनों कहीजावोथे म्रतलोक
में जायनें अघोरवनमेंबनचरहोजावो औरम्हासूं
कपटकरने विषे सेवन करणोविचारियो जैसी
तरहसातजनम कपटसूं विषे सेवनकरणरी वांछा
करो औरथाँकोकारजमतसरो ॥ सोरठा ॥

॥ चौरीसूंघरवास कपटसहितजारीकरौ ॥ जनम सातवेंआय इंद्रपुरीमेंसंचरौ ॥ ४३ ॥ इंद्रतणौं असराल श्रापघौरगतिनाँटलै ॥ ततखिणवाँदररूप उतऱ्याआयउद्यानमैं ॥ ४४ ॥ वारता ॥ रंभानेंश्रापहौताहीम्रतुलौकमैंआयउतरिया अवे सातजनमरीसंख्यावरणनकरूंछूं ॥ कवितछप्पय ॥ प्रथमजरंभारूपदूसरोवाँदरजाणूँ ॥ तीजौरूपकुँम्हारचतुरकपिफेरवखाणूं ॥ पूरवसुगंधानामपांचवैंनृपवररहिये ॥ छटेअनसनानाम कूरवदासीकीकाहिये ॥ सवलंगअंगचंपकवरण जनम सातवौंजानिये ॥ शिवकरणकहैभावीप्रवल रंभकथावाखाणिये ॥ ४५ ॥ इति सुदबुदसव लंगाकीवारता सहाशिवकरण रामरतन दरक माहेश्वरीमारवाडी मूंडवेवालेकृतरंभामदनचंदामिलापइंदश्राप वंदररूपधारणनामप्रथमोप्रकास १

अथ सुदबुदसावलंगाकी वारता बंदर जन्म वर्णन द्वितियो प्रकास प्रारंभ ॥ वार्ता ॥

॥ अबे रंभा ओर मदनचंद इंद्रलौकसूंचवनै मृतलौकरा माहाउद्यानबनमें आय बंदर बंदरी हुवा ॥ येक मकर ध्वज नामेंवडौबाँनरराज जि-णरेपाटराणीं मगरमौचनानामबाँदरी जिणरे पे टतो रंभा पडने जनमी जिणरौ नाम सुंदरी दियौ ॥ तिकी माहा रूपरीरास गुणाँरीखान ॥ देहरी सुख माल ॥ लाज सर जादरी पाल ॥ अकलरी आगर नैं बुध्धरी सागर ॥ इण अह नाणाँ मकर ध्वजरे कन्याँ जनमी ॥ और अठी अखे ध्वज नामें बंदरके पाटराणीं पदम प्रभा नामैं बांदरीकी कूख मदन चंद पडन्नैं जनम्यौं ॥ तिकौ माहा रूपवंत तेजवंत ॥ बुध्धरौ सा गर ॥ और अक्कलरौ आगर ॥ गुणरो गंभीर ॥ देहरौ दिग्गज ॥ सूर वीर रण धीर इण अहना

णाँ ॥ अखे ध्वजरे पूत्र जनम्यौं जरे दाई जायनें बधाई दीनीं ॥ माहाराज आपके पूत्र जनम्यौं ॥ तरे अखे ध्वजजाय देखने नपुंसक अर्थात् उण नैं हीजडौ करवालागौ ॥ कारण वांदरांका कटकमैं पुरष येकही रहवौ करै छै ॥ राजा मरियां पछै जनमैं सौही कटकरौ राजा ॥ इण वास्ते अखेध्वज पिंण पुत्रनें कस्सी करणें लागौ ॥ तरे पटराणीं पदम प्रभा हात जौडने हाजर खमा खमा करनें अरज गुदराई ॥ प्रथीनाथ सैन्यापती यौतो आपरो पाटवी पुत्र ॥ और बुढापामें परमेश्वरजी खिलाबासारू दीनौं छै ॥ सोइणनें तौपुरषराखियोचाहीजे ॥ तरे उण पुत्ररो नाम कटक ध्वज दीनौ ॥ और जुग-राज पदवी देकर आपयेकांतवैठगयौ॥अबे कटक ध्वज दिनदिन वढती राजधानी और चढती जवानी॥जाणें हणू मानरो पुत्रकनाँ पवन रो पौतरौ

घणपरवारौनैंघणामौटावनरौधणीं ॥ जिणराकट करी औपमाँअपार ॥ तिणरादलमैंरूपवंतवांदरी थांइसीजिणनेंदेखनेंकामदेवहीमौहितहुयजाय ॥ इस्यादलरोधणी देहरौदराज रूपगुणआगर कटक ध्वजआपराकटककरीपालनाँकरैछै ॥ मकरध्वज औरकटकध्वजरा कटक न्यारान्याराछै ॥ आ पआपरीराजधानीमेंअमलाफेलाकरछै ॥ आप आपरीहद्दांछौडनेंयेकयेकराकटकमेंनाहिंआवेछै ॥ रातरीवखतपोहोरायतपोहोरादेवेछे ॥ खेंखारां ऊपरखेंखारा और ललकारांऊपर ललकाराहोवेछे ॥ किताकदिनपछे अठीतौसुंदरीनामेंवांदरी जौवनवंतीहुई ॥ अठीकटकध्वज नामैंबंदर मगरूरीमें आयौ ॥ औरसुंदरीकेपिणजौवनछा यौ ॥ इणदौनांरेनजरबाजियाँहौणेंलागी ॥ दोहा ॥ आपआपरीहद्दमें आपआपरीआँण ॥ कटकध्वज अरु सुंदरी चसमचलावैबाँण॥४६॥

॥ वार्ता ॥ येकसमयमैं आपआपरी हदांरा दरखतांऊपरैबेठाछै ॥ आँबा जाम जमेरी दाडम दाख पिस्ता बिदाम खावैछै ॥ जिणस मयसुंदरी आपरीहदराडाहालांऊपरै कटकध्वज सूं नजीकआयबेठी ॥ औरकामबसहोयने दो होकहैछै ॥ सुंदरीबायक ॥ दोहा ॥ प्यारी कौमनपीवसूं पिवमनप्यारीमांह ॥ निजरच्यामेलौ भलकरौ अंगसूंमेलौनाँह ॥ ४७ ॥ कटकध्वज वायक ॥ दोहा ॥ साझनियाँसोजोजनाँ जाणैंहि यामझार॥दुरजनियाँघरआँगणें जाणसमंदाँपार ॥ ॥ ४८ ॥ सुंदरीबायक ॥ आजासियालैसी-पडै वंदरमेलैच्यांस ॥ जिणरारांजिदघरनहीं अंग भिडावैईस ॥ ४९ ॥ पलकपोहोरादिन-मास सम मास वरस समजात ॥ डाकण दौरी नीसरे पिवाबिन वैरणरात ॥ ५० ॥ कटक ध्वजवायक ॥ जलमें वसे कमोदनीं चंदवसै

आकास ॥ जौजाहूकेमनवसे सौताहूकेपास ॥
॥ ५१ ॥ सुंदरीबायक ॥ हरीजम्हैरीरसभरी
भेजूंकिसकेहात ॥ नदीबिछौवापडगया तलफ
तलफाजिवजात॥५२॥ वार्ता ॥ दौयाँवनकेबीचमे
नदी हलकी हलकी वहरहीछै ॥ पणदौनाँकिनाराँ
हदाँबंधरहीछै ॥ अठीरोबंदरउठीनाहिंजायसके
नैंउठीरौवंदरअठीनहीआयसकै ॥ दोहा ॥ लो-
हौलीकवंधीहदाँ इतउतधरैनपाय ॥ एकएककी-
कारतज वंदरकदेनजाय ॥ ५३॥ कटकध्वजबा
यक॥ पीवबिछोईकाँमणी नेणलगावेडास ॥ देह-
बिछोवाभागसी राजीहौसीराम ॥ ५४ ॥
॥ ॥ वार्ता ॥ ॥ यूंकरताँघणाँदिनाँपछैएक-
दिनरासमाजोगमैः मकरध्वजनैंतोबीछूलडगयौ
सोमाहाजहरी पूलाझाल अग्नीअसराल नैं संखि-
याकोउपावणहार ॥ डंकरौंदराज लडियौ
रुडताँईंप्रवाणमकरध्वजतौ मुरछाखायनैं पडियौ

औरसारौकटक जडीबूंटीऔषधीहेरबागया ॥ जिणवखतमैंसुंदरी पिणबिछूरीऔषधीदूंढेछी ॥ अठैकटकध्वजरोदावलागौ ॥ इतराकमेंतौकटक-ध्वजजायझपेटी औरसुंदरीनेंलेजायनैंपरबतरी-गुफामैंजायबडियौ ॥ दोहा ॥ आप अकेली सुंदरी गईअवषधीलैंन ॥ दावलग्यौकटकेसरौ आयझपेटीअैंन ॥ ८५ ॥ येकरातभेलारह्या डरतांसन्यौनकाज ॥ देवलईडौनाँचल्यौ सरवरबं-धीनपाज ॥ ८६ ॥ वार्ता ॥ अबेदूसरेदिनबडी-फजर मकरध्वजसावचेतहुवौ बीछूकोजहरऊत न्यौ तरैकटकरीहाजरीलीधी ॥ साराठामकेठाम लाधा॥पणसुंदरीनहिंपाई ॥जरैचौकसकरवाई तरै पतौलागो के सुंदरीनें तौकटकध्वजलेगयो ॥ इ तरीसुणतांहीं प्रवाण मकरध्वजकेतो बीछूराज हरसूंई लाखगुंणीं ज्वाला ऊठ बैठीहुई और व्याकुलहोगयो तरेआवधलेकर झाड वाँटउखाड़

ताथकानैंपूंछफटकारताथका कटकसमेत कटक ध्वजरा कटक ऊपर लड्बानैंचाल्या ॥ अठीकट कध्वजपणसैन्यासाझकर आवधसम्हालकरलड वानें तयारहुवौ॥इणाँदौनूंदलाँरीआणियाँमिलीनैंजु द्धहौवालागौ ॥ दोहा ॥ दोऊँदलकिलकारिया हाकपड़ी हलकार कलहबाजियाँकाहला बंदर भिड़जूझार ॥ ५७ ॥ घड़घड़गालबजावता हातपटककरहल्ल ॥ उटकपड़ै तलऊथलै मूं डभिडावैमल्ल ॥ ५८ ॥ आँणअखाडैआवडे गुडकरखायगुलेच ॥ बंदरबडबादीविषम पटक पछाडैपेच ॥५९॥ भिडभेटीमाथाभिड़ैभिड्खंभ असराल ॥ पगपंजाझटकेपटक जुडकरजुद्धजँ जाल ॥ ६० ॥ दाँतबटक्काँबाजिया बाथ-बटक्कांखाय ॥ हातझटक्काँजूटिया लातपटक्काँ पाय ॥ ६१ ॥ मूठगदासीपाहरे दूटमरोड़ै मूछ ॥ ऊठअचाँणकआवड़े पटकपछाडै

पूंछ ॥ ६२ ॥ नटबादीज्यूंऊचकै गजबीखायगुला
च ॥ दाँतवजावैदैंतसा ऊथलपड़ैउलाच ॥६३ ॥
हाकडाकभूतेससी इंद्रधड़ूकेआय॥ ऊठअचाणक
आवडै गजबगुलाचाखाय ॥ ६४ ॥ वार्ता ॥
इणभाँतबंदराँकौजुद्धमाचियोछै ॥ जाणेकमाहा
देवप्रलयकालसमैंनाचियोछै ॥ चहुँदिसाकटकउ
मडेछै ॥ जाणेंव्रषाकालराबादलाघुँमडेछै ॥ इत
राकमैंतौअखैध्वजनैंखवरपडी जदकटकमैं आ-
यनैंपूछनाकरैछै ॥ दोहा ॥ आँणअखैध्वजपहुं
चियौ सुणीं जुद्धकीबात ॥ पूत्रअनीतीजाणकर
करणलग्यौअपघात ॥ ६५ ॥ नीतीसिरोमणबुद्धि
धर बंदरचतुरप्रवीन ॥ कटकध्वजने काढियौ
देसानिकालौदीन ॥ ६६ ॥ लेसुंदरबंदरच
ल्यो राडमिटाईऐंन॥ दोऊँदलसंपतभयौ बरता
यौसुखचैंन ॥ ६७ ॥ वार्ता ॥ कटकध्वज
नैंतौदेसनिकालौदीनौंनैं अखैध्वजपाछौआपरारा

जपरकायमहुवौ ॥ दोऊँदलाँमैंसुखसंपतराजारा जप्रजाचैंनवरत्यौआपआपरीहदाँपकडी ॥ अठी कटकध्वज सुंदरीनें लेयकर भागौ तरे पिछाडी मकरध्वजकीफौजको बडौभारीकोहकसबद सूंह-डबडाट सुणीजियौ जरेसुंदरीबोली अहोकंथ सह्रू आयपहुंचसी दूसरौकपटरूपधारो ॥ ॥ दोहा आपअकेलारहगया कटकाविलुंव्योलार ॥ भेस वणावौ दूसरौ रूपबेकरीधार ॥ ६८ ॥ वार्ता ॥ अवैकटकध्वजऔरसुंदरीतौतुरतकुम्हारकुह्मारीव णगया ॥ औरमकरध्वजरौकटकइणाँनेंढूंढनेंपा छौफिरगयौ ॥ इतिसुदबुदसावलंगाकीबारता सहा शिवकरण रामरतन दरक माहेश्वरी मारवाडी मूंड वे वाला कृत वनचररूपबदलकरकुम्हारकु-म्हारी रूपधारण वर्णनोनाम द्वितीयो प्रकास ॥२॥

अथ सुदबुद सव लंगाकी वारता तृतियप्रकाश
॥ (॥ वारता ॥) ॥ अवेधरमदत्तनाम
तौकुम्हारऔरसीलसुलक्षणानामकुम्हारीबणकरय
हदोनूंजायकरयेकसूमसिरौमणनामनग्रमैं बसिया
जठैमृतकारावरतनवणायनैउद्रपूरणाकरैछै ॥ उ
णनग्रकाराजाकौनाम सूमसंतूष्टछै ॥ जिणरोमन
सूमाँहींसूँसंतूष्टरहैछै ॥ नैंआछाआछासूमाँकीविड
दावल्याँकहैछै औरधनपैदासकरणरीजुगताँकरैछै
नैं, द्रव्यसूं भंडारभरैछै ॥ तिणनग्रमैंयेकलाख-
घर, वडावडाद्दिग्गज, सूमाँकावसैछै ॥ जिणारी
अडाभीडखूणींसूंखूणीवसैछै ॥ इसारयतनेइस्पा-
हीराजा, तिकेपरायेघरांपरतलावै खाजा ॥दोहा॥
देखजियेपणदेनकछु, कौडीखरचनखाय ॥ जाचक
देख्याँजलवलै माँगेतौमरजाय ॥६१॥ वारता ॥
वंहसूमासिरौमणाँनगरीकासूंम किस्याहेकछै ॥
जाणैंमोतीडाँरीलूंव ऊजलाजाणैं धौवीकीसी खूम

॥ मायारापौरसा ॥ जिकेदीखैचातुराचेकोरसा ॥ मांड्याचूंड्यासोरसा॥ हस्तसुखीगोरसा ॥ तिलकाँ खूंतीखा ॥ औरभगतीसूँफीका ॥ कौराकनर सियापरसादियाभगत ॥ दोहा ॥ कौडीमेल्है- कौथली संपतभौंभालिपाय॥ईष्टनहींगुरपीरकाराखै द्रव्यछिपाय॥७०॥ नारपूत्रकौंदेनकछु माँगतोमरि जाय॥ काँमपडेंतोरोयदे सौसौसौगंदखाय॥७१॥ बुगळा भगत सुपेतठग वसैनग्रकेमाँय ॥ दीसं ताअतिफूटरा दानदयाकछुनाँय ॥ ७२ ॥ अभ खभखैपरधनतकै झूटीसौगंदखाय ॥ करचुगलीद दुबलदुख नितानिरपतिग्रहजाय ॥ ७३ ॥ नाँगुरकै नहिपीरके मातपिताकेनाँहि ॥ नांहित्रियसुत मित्रके जहाँमतलबतहाँजाँहि ॥ ७४ ॥ आया अतिआदरकरै रुकमनराखेरोस ॥ पैचन्हांख परपंचकर कपडालेवैकोस ॥ ७५ ॥ जालपटकै हरजुगत लखणनदेलवलेस ॥ कुवदकलहकपटी

कुमितदेहग्याँनउपदेस ॥ ७६ ॥ वार्ता ॥
॥ तिणनग्रमैंइस्पासूमवसै जिणरेआठप्रहरघात
हीघात ॥ जिणरादिलरीदेवतापिणनाहिंलखैबा
त ॥ मित्ररौकारजकरबारीकहै ॥ नैंकामपडि
याँआंखदुखायनैंघरमैंसोयरहैं ॥ बखतटालनैं
बाहारवीतोंपछै बातपूछसुंणनैं हाक्याबाक्या
होयरहै ॥ इस्यावेईमान यारमार समझ्यौ
डातंतसार नैं पराया घराँरा डांडाथूंणियाँरागिणन
हार ॥ हसबोलानैंकमतीतोला ॥ सोरठा ॥
समझलियौनिजसार धनहरबौक्रौड़ाँजुगत ॥ ग्रंथ
ग्यानपरचार मित्रमारमुखकर फिकर ॥ ७७ ॥
ऐसेसूमअपार सूमासिरोमणनग्रमैं ॥ नृपसमेतन
रनार विनफासीवासीनको ॥७८॥ मानैंमंत्ररसाण
मनमाँहीझूटीजचै ॥ निपटकपटरीखान सिद्ध
खिगाड़ैकरपरख॥७९॥फूंकिधरैनिजपग्ग निपटनि
पुणआचारमैं ॥ क्रौडठगाँयेकठग्ग दयादेखा

वेदुरितचित ॥ ८० ॥ वार्ता ॥ इणभाँतउण
सूमासिरोमणाँनिग्रासूंमहसीखिलवतआनंदसूंआ
ठपोहोररंगराताररहैछै जठै एकदिनरासमाजो गरै
माँहजोगेस्वरांकीजमातआयऊतरी जिणजमा तमैं
नवनाथ और चौरासीसिद्धतपस्याकररह्याछै ॥
जिणमाँहैजोगीमछंदरनाथजीकाचेला गोरषनाथ
जीभिक्ष्यानैंनग्रमैं गया ॥ दोहा ॥ ॥ फरीदी
नींनग्रमैं फिरियाघरघरबार ॥ खालीभटकामारि
याभिक्षादईकुम्हार ॥ ८१ ॥ वार्ता ॥ सारा
नग्रमैंफिरभटकनैंखालीजायऊभारह्या जरैगुरूम
छंदरनाथजी येकघरकी भिक्षा देखकर क्रोधकरनैं
कह्यो अरे अघोरीसारीतूंभिक्षाखायगयो ॥
जातूंअघोरीहोजा जराँगोरषनाथजी हातजोडनैं गु
रांनैंदोहो कहैछै ॥ दोहा ॥ सूमवसैइणनग्रमैं
दातायेककुँम्हार ॥ जिणदीनींहाजरकरी फिरियो
घरघरबार ॥ ८२ ॥ सूंमनारनरइणनगर नरपत

अरुरणवास ॥ येकौयेकणआगला आणव स्याइणवास ॥ ८३ ॥ मिठबोलाअरु मसकरा कभूनदेवेछेह ॥ देवौतौसीख्यानहीं सौ किम उत्तरदेह ॥ ८४ ॥ बार्ता ॥ तरेमछंदर नाथजी ध्यानलगायकरदेखेतौ चेलौखालीघर घरभँवंतोफिररयोहै औरभिक्षाकोइघालीनहीं ॥ फगतयेककुम्हार कुम्हारीकेघरकीभिक्षालेकर चेलौआयौहै ॥ इणभांत ध्यानलगायकर देखनैं जौगीमछंदरनाथजी फिटकारदीन्हीं ॥ दोहा ॥ जलौनगरदाताविनाँ काहाबसैठिठकार ॥ ऊठच ल्याछिटकारकर सिद्धहल्याफिटकार ॥ ८५ ॥ ॥ वार्ता ॥ सिधाँकीफिटकारलागताँहींप्रबाण ज्वालाकौभबकौ बडाबेगसूं नग्रमेंच्याहूंखुणाँ दूधकोसोउफांण जाणेमेघकोसोउफाँण ॥ धूवाँधौ रऊठबैठौ ॥ कूम्हारकुम्हारीचकवकगया ॥ विण समयमें कुम्हारकुम्हारीरो कपटरूपतौमिटगयौ

औरकूदकरपीछाही वाँदरावाँदरीहोगया॥ दोहा॥
भगेदेखभयभीतह्वै लगैचहूंदिसलाय ॥ उडेफलं
गाँडाकियाँ बंदरबुरी वलाय ॥ ८६ ॥ कूटकढावे
कटकटै डचकबजावैडाक ॥ जाणकलंकापरजले
हणवतमारेहाक ॥ ८७ ॥ सकलनग्रनरपर
जल्या बंदरवाचियादोय ॥ स्वानमँझारीऊंदरा ॥
रहणनपायाकोय ॥ ८८ ॥ सूँमसँचैधनधररहे की
डीतीतरखाय॥नदीकिनारेरूंखडो जडामूलसूँजा
य॥ ८९॥ वार्ता ॥ उणनग्रमेंसूदोयजणाब
च्चिया ॥ येकतोबंदरनैयेकबाँदरी ॥ कुम्हारकुम्हा
रीरोकपटरूपछौडनैपाछावंदरबंदरी तृतियरूप
धारण ॥ इति सुदबुद सब लंगा की वारता
सहा शिवकरण रामरतनदरक माहेश्वरी
मारवाडी मूंडवे वाले कृत तृतीयप्रकाश ॥ ३ ॥

अथ सुदबुदसबलंगाकीवार्ताचतुर्थप्रकास।

॥ वार्ता ॥ अबेयेबांदरौनेंबांदरी चाल्याचा ल्याउत्राखंडमैं अश्वनीकँवाराँकायेकपूष्पपुंजना मवगीचामैंरमणीक जायगाँ देखनें जायबसिया॥ जठैअनेकप्रकारकाफलफूलछै ॥ और रसकू पिकानामयेककुंडछै ॥ जठैमाहासुखरौथल दे-खनें आनंदसूं रहबालागा॥घणाँदिन पछैयेकचक वौचकवीपिणआयउतरियौ ॥ उणचकवाचकवी रेदिनकातौमिलापरहे नैंरातका विछौवापङ्जा वे ॥ अबैयेकदिनरासमाजोगमें आधीरातराचक वीबोली चकवापुरुपसरीखौनिरदईकोईनहीं देख हूंकंथविछौहीअस्तरीअहातुरहौरहीहूं॥औरतूं येक ही दरखतकीडाहालीरीआडमैंऊभौहै पिण बोले नहीं ॥ कदंकालपरदेसगयो हौयतौसमय पाय पाछौ आवै ॥ पिण आपणौं विछोहौकदामिटै तरेपाछौचकवौकहैछै ॥ चकवावायक॥ सोरठा॥

कहथारामनरीबात मनचिंत्याकारजकरूँ ॥
दिनऊगैपरभात मनमानैंसोहिमाँगज्ये ॥ ९० ॥
चकवीवायक ॥ दोहा ॥ पीवपपइयोबोलियौ कौ
यलकहुकसुणाय ॥ रैंणअंधेरीपीवबिन बैरणकेम
विहाय ॥ ९१ ॥ हेहितियाराचकवा क्यूंकररैन
विहाय ॥ नेहसघनघनसंचरै समँदहिलोळाखाय॥
॥ ९२ ॥ वार्ता ॥ तरेचकवाबोल्यौ ॥
॥ दोहा ॥ देसाँविदेसाँनांगयौ ॥ घराँरत्यौ
इणकाम॥ हातबिसतकेआंतरै दियाविछोवाराम॥
॥ ९३ ॥ चकवीवायक ॥ दोहा ॥ दिनडू
बौदरियावमें केतगयोगटकाय ॥ चकवारैंणननी
सरै कोइअपुरबवातसुणाय ॥ ९४ ॥ वार्ता ॥
चकवाबोल्योबातघरबीतीकहूंकेपरबीती ॥ चकवी
बोली ॥ चकवीवायक ॥ ॥ दोहा ॥ घरबीतीसब
यादहै परबीतीकौचाय ॥औदोयबंदरबंदरी जिणरी
कथासुणाय ॥९५॥ वार्ता ॥ तबचकवाबंदरबंदरी

कीकथाआदसूंअंततांईविस्तारपूर्वककही ॥ तरेच
कवीबोली ॥ चकवागईतिथतोबामणाँईनहिंबाची
॥ अवेइणाँरोकांईहौतवहैसोकहौ तरेचकवोबो
ल्यौ ॥ अवेअेदोनूंइणरसकूपकामेंइणघडीऔरइ
णपुलमैंपडजायतोदेवाँगणाँऔरदेवताकोस्वरूप
हौयजाय ॥ औरइन्द्रकोश्रापमिटजाय ॥ यावा
तसुणताँहीसुंदरीनामैंवंदरीआपरापतीकटकध्वज
नैं कहवालागी ॥अहौकंथरसकूपमैंतुरतपडौतरे
वंदरकपटसूंवोल्यौ पहलीथेपडौ सूअस्तरीहौ
जावसोतौ पछेंहूंपणआयपडसूं ॥ इतनीसुण सुंद
रीतोपतीकीआग्यापाय औररसकूपकामेंसररररघ
मदेसीजायपडी॥ पडताँहीहाडफासलीचकनाचूर
हौगया औरवाँदरोअठीउठीफिराफिरनैंदावदेखबोई
कीयौ जाण्यौंहूंपडसूंतोम्हारावीहाडफाँसलीटूट
जासी इणतरहसूंवंदरतोताकामौकाकरतोहीरह
गयौ औरसुंदरीतोदिव्यस्वरूपवान देवांगणाँसी

अस्त्रीहोगई ॥ इतराकमैंतौवेलाँवीतीऔर दिन पिणऊगवालागौ ॥ वंदरकूवामैंझाँकैतौवंदरी रूपपलटकर अस्त्रीमाहारूपवंतदेवांगणासीमाहा मौहनीस्वरूपहौगई, ॥ तरेवंदरवेलातापकरैछै ॥ पणकाँईजोरचालेनहीं ॥ इत्तराकरासमाजोगमेंये कवादीगरआयनिसरियौ ॥ इणवंदरनैंरूपवंत देखकरजालपटकनैंपकडलीयौ ॥ तरैवंधमैंप डियोडैंवंदरसुंदरीनैंकह्यौ ॥ हेसुंदर मनैंतो वादीगरजालनांखनैंपकडलीयांजायहैसूतूंसुणजे ॥ ॥ दोहा ॥ मित्रकपटकोइमतकरो होयजग तमेंहास ॥ कूडकमायोवांदरे पडीगलामैंफास ॥ १६ ॥ कूडनबोलौमित्रतैं कपटनकीज्येजाँन ॥ मित्रद्रोहाशिवकरणकह धनकीरतकीहाँन ॥ ॥ १७ ॥ इति सुदबुद सवलंगाकी वारता सहा शिव करण रामरतन दरक माहेश्वरी मारवाडी

मूंडवे वाले कृत वर्णन सुंदरीनाम वंदरी देवांगणाँ रूपधारण वंदरविछौहण नामचतूर्थप्रकास ॥४॥

॥ अथसुदबुदसवलंगाकीवारतापंचमप्रकास ॥

॥ वार्ता ॥ इतराकरासमाजोगमें त्रंबावती नामनगरीकोराजाजक्षसेणासिकारनैंनीसर्‌योछो सो त्रषावंतहोयनैं वगीचामेंआयउतरियो ॥ जरेजल धारीजायनेंकूपमेंलोटोउरासियो तरेसुंदरीलोटोप कडलीनों ॥ जठैजलधारीकहैछै ॥ दोहा ॥ भूतप्रेतनरनागहो केकोइदेवस्वरूप ॥ म्हांनैमती डरावज्यो अटै जक्षसैंणहै भूप ॥९८॥ करैचाकरी लखनिरप देवकरतहैसेव ॥ लाखजक्षलारैचलै भू ताँरोकोँइभेव ॥ ९९ ॥ सुंदरीवायक ॥ ॥ दोहा ॥ नाँमैंभूतपरेतहूं ॥ नाँम्हैंडाकण देव ॥ हूंमानवतनअस्तरी करसुरपतरीसेव १०० जलधारीकरजोरकर कहीनृपतसूंजाय भूपतीनर

खीपदमणीं, लीन्हीं तुरत कढाय ॥ १०१ ॥ नृप पूछै तुम कवनहौ, कूपपड्या किणवाय ॥ रूपवंत विन वसन क्यूँ, जिणरौ अरथ भताय ॥ १०२ ॥ इंद्रतणीं हूं अपछरा, पूरव सुगंधा नाँव ॥ पूरव-वीण पाछी फिरी, कूपपडी डिगपाँव ॥ १०३ ॥ सुरंग वसन पहिराय कर, लीन्हीं रथ बैठाय ॥ नृप मन माँनीं काँमणीं और न आवैदाय ॥ १०४॥ ॥ वार्ता ॥ इतरी सुणराजा जक्षसैंण रथमें बैठाय आपकी त्रांबावती नाम नगरीमें ले आयौ ॥ आय महलाँ दाखल करी ॥ दोहा अवपट राणीं पद-मणी, कीन्हीं पड्दा पेस ॥ माल खजेनाँ सूंपिया, आँणदु हाईदेस ॥ १०५ ॥ वार्ता ॥ अबे राजाज-क्षसेंणके पाटराणीं पूरव सुगंधा हुई सारौमालः मुलक खजानाँ,राणींके सुपरतकीया, ॥ येक दिन राजा महलकी तयारीक रवाई, तरे पूरव सुगंधा कही, प्रथ्वीनाथ म्हारे वास्ते तो नवौ महल तयार

करावौ ॥ जरैतो आपरैनैं म्हारे घरवास, नहीं तौ नहीं ॥ तरे राजा तुरत कारीगर गजधरांनैं बुलायनैं आछौ महुरत दिखायकर, नवा महलकी नींव दिराई ॥ महल तयार होवैछैनै दरबार नित आयकर जोवेछे ॥ हमेसाँ राणीं सूंमिलवा आवे छे ॥ निजरच्याँ मिलाप करजावेछे ॥ यक दिन राणीं बोली प्रथ्वीनाथ, म्हांनैं तौ आवडै नहीं ॥ इण नगरी मैं कोई, रव्याल तमासौ नाटकवी नहिं होतौ दीषे छे ॥ जरे दरबार कही, रोजीनाँ रव्याल तमासा होवेछे ॥ तरे सुंदरी बोली, अबे जौ कोई रव्याल तमासौ नवौ आवैसो पहली म्हारा महल-नीचै होय ॥ फिर नग्रमें हुवे ॥ इसी ढूंडी फिराई चाहीजे ॥ तरे राजा जक्षसेण तुरत ढूंडी फिरायदी नी ॥ अबे तौ नित नवा तमासा आवे छेनैं खेल खिलाडी मोहोराँ असर फियाँ रीझ मौजपा वेछै॥ येक दिनरा समाजौ गमैं वादी गर पिण, कटक

ध्वजनें लेयनें आण पहूँ तो ॥ बस्ती में बंदर न-चावण लागो ॥ जरे लोग बोल्या पहली, राजम-हलाँ नीचे जायनें ख्याल करो, पछे सहर में करज्यो ॥ अठे दरबार डूंडी फिराई छे ॥ तरे बादीगर राजमहलाँ रा झरोखाँ नीचे आय डहरू बजायो ॥ और बंदरनें नचावण लागो ॥ दोहा ॥ डग डग डहरू बाजियो, श्रवणाँ सुणी भणंक ॥ दोडीपद्मण देखबा, लियो उसास सणंक ॥ १०६ ॥ वार्ता ॥ बादीगर बंदरनें झरोखाँ नीचे खडो कीयो, राणी और क-टक ध्वज रेनि जरामिली, राणी सिलाम करनें खडी रही ॥ तब बंदर पूरब सुगंधानें ओलख कर निरमान्य हो यनें पड गयो, ॥ जरे बादीगर फेर खडोकर; और बंदरनें नचावण लागो; तरे बंदर मा-रका डरसूँ, नाचबा लागो ॥ अबे बादीगर बंदरक नाँसूँ महलां साम्हो मूजरो करावालागो ॥ तरे बं-

दर चायरूं तरफ फिर फिर नें मुजरौ करैछे, पिंण राज महलाँ साँम्हौं हात ऊंचौ नहि करै ॥ जरै बादीगर बड़ी रीस करनैं कामडी दौयच्चार झाडी ॥ तरे राणी दोहो कहैछै ॥ सुंदरी बायक ॥ दोहा ॥ थारी घाली साझनां धण दुखियारी जौय इंद्र सराषी अस्तरी, देख बिछोवा सोय ॥ १०७ ॥ चंद्रायणा ॥ कंथातूं कायर हुवो, साध न सकियो फाल ॥ तौ सिर मारै कामड़ी, मो सिर ऊठै झाल ॥ मौसिर ऊठै झाल कसारा तन्नमें ॥ परिहां. लेसूं तुरत छुडाय धीर धर मन्नमें ॥ १०८ ॥ वार्ता ॥ तरे बंदर रीस करने कटकटी बांटी और पीठ फेर बेठो ॥ तरे पूरब सुगंदा फेर कहै छै ॥ सुंदरीबायक दोहा ॥ किंणपर बाँटैं कटकटी, किणपर कीयौ रौस ॥ हात कमाया कामडा, किंनैं दीज्यै दौस ॥ १०९ ॥ ज्ये पड तौर सकूपमें, होतौ पुरुष प्रवीन ॥ तो दोनौं रंग माँणता,

आठ पहर लवलीन ॥ ११० ॥ धीरौ रहजे बाल-मां, अब तोहि लेऊं बुलाय ॥ साझन मूंघा मौल-का माणकदेहुं तुलाय. ॥ १११ ॥ रे साजन मत वीसरै, पूरव भवकौ नेह ॥ दई विछौवा देदि या, जीव एक दोय देह ॥ ११२ ॥ वार्ता ॥ तरे राणीं पूरव सुगंधा आपरी दासी सुसरमणांनेंहु कम फुरमायौ जाये दासी इण वादीगर कनासूं बांदराको मौल ठेरायनै लेआव ॥ इण वंदर न आपां पढ़ाय कर श्री दरबारके निजर गुदरा वसां ॥ तरे दासी वादी गरनै दोहो कहैछे ॥ दासी वायक ॥ दोहा ॥ वादीगरका डीकरा । कह वंदरको मौल॥ सोंनौ रूपौ चाहिये, लेह बराबर तौल ॥ ११३ ॥ वादीगर सुख माँगिया दासी दाम दिलाय॥लेआई निज महलमैं, काँमण कंथ मिलाय ॥ ११४ ॥ गंगाजल सँपड़ायकर चंदण चरच्यौ अंग ॥ भौजन येकण थालमें ॥ भेलावैठा

संग ॥ ११५ ॥ पग चंपी दासी करै पंखा पवन फरास ॥ बंदर भूप बणा वियौ ॥ हाजर खडी खवास ॥ ११३ ॥ वार्ता ॥ अबे सुसरमणां नाम दासी तौ बंदरकी पग चंपीकरै छै ॥ और सुसरम णाँको खाँवँद कूंथ नामें दास फरास सौ पंखौ करै छै और पूरब सुगंधा नाम राणी खवासी में हाजर खडीरहैछै ॥ रातदिन कुसी किलौलमैं बीतैछै ॥ ऊग्या आथवियाँरी खबर नहीं ॥ दोहा ॥ पूरब सुगंधा नित करै राग रंग सिंण गार नार वसायौ महलमैं नृपतजबंदर जार ॥ ११७ ॥ वारता ॥ आठपो होर रंग रलियाँ करैछै ॥ खूबी खस बोड्याँ सूंप्यारा रौमन हरैछै ॥ फूलाँरी सहज सुख पाल पीव पौढैछै ॥ थिर मारी मसोड संग प्यारी पट ओढैछै ॥ आपसमैं चसम बाजियाँ होवैछै ॥ दिलदार दिलकी दुब्ध्या खोवैछै ॥ यक-दिन रासमा जोगमैं राजा जक्ष सैण पूरबसुगंधाकै

महलमैं ज़ुलसाई जनान खानौ सरूहोय जिण तरहकी दीसी ॥ तरे राजा महल रौजापतौ करायौ चौकी पहरा नाका बंदी कराई ॥ फेरमास पखवाडा सूंजाय करदेखे तौ। आगे मूँसवाय ज़ुलसाई मालूम पड़ी ॥जरे राजा जक्ष सैंण महलमैं छिपकर पहरै वेठौ ॥ इतराकमें तौ मालण फूल और तेलण तेलले यनैं हाजर हुई सूफूलाँ सहज बिछी जरहीछै॥ और पूरब सुगंधा तेल फुलेल लगाय सोले शृंगार साझतीथकी आयनैं महलाँ दाखलहुई कटक ध्वज बंदरनैं शृंगार करायकर,चौपड रमवा लागी॥तरेराजा जक्षसैंण कौप कर खड गलेयनें मार बा चल्यौ दोहा ॥ काढ खडगकर कौपियो नारी पर नृप राज ॥ जाणक चिमकी बीजली, इंद्र धडू क्यौ आज ॥ ११८ ॥ कुसी करंताँ कूदिया नव खंड पड़िया झूर॥हाड फाँसली बीखरया॥ हौगया चकनाँ चूर ॥ ११९ ॥ पड़ताँ पद मण औ जगी, दासी आई चीत ॥ कूख पड़ी निज दासिके, अं-

त समाँकी प्रीत॥ १२० ॥ बार्ता ॥ पूष्य सुगंधा और कटक ध्वज बंदर, दौनू जणां, नव खंड महलसूं पडताँहीं हाड फांसली चूरीज गया ॥ और पडतां रेमनमें बासनां रही, जिण जिण जायगां जायजायनैं, जनम धारता हुआ, सु बंदरनैं, राजा रा डरसूँ, राजा या दरयौ ॥ सूकटक ध्वज तौ उजीण नगरीका राजा साली बाहनके घरे अवतारियौ ॥ और पूस्व सुगंधा नेंदासी याद रही सू आपरी दासीरा गर्भमें आय बास कारियौ ॥ अंत समय मन जाय, जठैही जाय जनम धरणौं पडैछै ॥ इणतरहसूं आप आपके मनकी इच्छा परवाणों जनम लिया ॥

इति सुदबुद सब लंगाकी बारता बंदर तथा पूष्य सुगंधा नृप कोप मृत्यु पायन आगे अनसना रूप धारण वर्णन,सहा शिव करण रामरतन दरक.माहेश्वरी.मारवाडी मूंडवे वालेकृत पंचमौं प्रकास ५॥

अथ सुदबुद सव लंगाकीवार्ता षष्टमप्रकास प्रारंभः

दोहा ॥ पूरब सुगंधा मरचवी, सुसमणाँकी कूख॥ वरस दवा दस अनसनाँ, अन तज काढी भूख ॥ १२१ ॥ नाँ जनमत मुख थणालियौ, पियौ नहीं पयपान ॥ नहिं वाचा बौली बदन, जनम पाछलौ जान ॥ १२२ ॥ राजा साली वाहनके, पदम प्रभावति नार ॥ कूख पडचौ मरबाँदरौ, सुद बुद राज कुंवार ॥ १२३ ॥ शालीवाहन नृपतपै नगर उजींणीं माँय ॥ सिंह वकरी भेलीपिये हणैं न कौई खाँय ॥ १४ ॥ पाट सिरौमणि पदमणी पदम प्रभावति नाम ॥ गज गमनीं मृघ लौचनीं चंपक वरणी वाम १२५ ॥ वार्ता ॥ येकदिनरा समाजौगके माँह राजा शालीवाहन सिरे दरबार कराय विराजियाछै, जठै सत्तर खांन और वहौतर उमराव हाजर छै॥ छत्रपतीरै छत्रासिर छाजे छै ॥ नैं नोपत वधाइ

याँ वा जैछै ॥ चँवराँ रा फटकारा लागै छै ॥ नै, जाचकाँरा दलीदर भागै छै ॥ भगतणियाँ नाचै, नैं कलावत गावै छै ॥ भाट भणै नैं भोजग विड दावै छै, ॥ परदे साँरी पेसकसियाँ चाली आवै छै॥ और हालीसुवाली मुसद्दी अरज गुदरावै छै ॥ निजराँ नो छावराँ लिरीजै छै ॥ नैरीझाँ मौजाँदरी जैछै ॥ न्याव निरधार छाणै छै, नैं माँणीं गरमौ जाँ माणै छै ॥ राजा सालीवाहन बडा प्रतापीक, ज्याँरौ सिंघको सो तोसो ॥ विडरियाँ पछै बुरोवलायको सोरोसौ सत्रुवाँसिर कालको सोडंड ॥ इस्पौ राजासूरवीर तिकौ देहरौ प्रचंड ॥ धर्मकी ध्वजा और मरजाद रोमेरू ॥ वेरियाँ सिरसाल ॥ तिकौ देहरौ विसाल, रूपगुण आगर, और बुद्धरौ सागर, ॥ जिंणरी कचेडी वरकरार आठपहर दिनरैंण अडाभीड वणींहीं रहछै ॥ खुणींसू खुणींवासै छै ॥ दुसमण विलखे सज्जन हासै छै ॥

इतराक मैं तो डौडीदार, मालूमकरी, प्रथ्वीनाथ कासीजीकौ पंडित जौसी जोतिष विद्यारौ पढियोड़ो प्रवीण आयो छै, ॥ सूकरम विपाक वरण न करैछै ॥ आगलातीन जनमाँरी और भूत भविष्यत वरत मानरी कहै छै ॥ इण रौ नगरी मैं वडौ आचरज होय रयौछै ॥ प्रस्नकरै जिणरौपाछौ उत्तर बराबर देवै छै ॥ इस्यौ पंडित हाजर मालूम करावे छै ॥ तरे अरज सुंण हजूरहुकम फुरमायौ, हाजर आवे॥तरे पंडित आय हाजरहूवौ ॥नैं आसरी वाद दीनौं ॥ तरै दरबार निमस कार कर आदर सहित वैठायो ॥ दोहा ॥ पंडित सौं नृप पूछियौ, मुसदी चिंतनयेक॥प्रस्न देष भूँश्वर कहै, हौसी पूत्र वसेक ॥ १२६ ॥ सैंणाँरे सिरसे वरौ सत्रुनके सिरसाल सूरवीर रण रौपणौं, धर्म नीत प्राते पाल ॥ १२७ ॥ वार्ता ॥ पंडित कह्यो प्रथ्वीनाथआपरे पूत्र हौसी, जिणरौ नांव सुदवुद

कंवर दिराई ज्यै, तिकौ बडौ प्रतापीक, सूरवीर रण रौपणौं, गाहड रोगाडौ, कनाँ फौजाँ रौलाडौ, इस्यौ पूत्र हौसी, पिण येक लच्छन, परास्त्रिकौ पडसी ॥ तरेराजाजी फरमायौके, सगत सूँसुधर जासी ॥ इत राकमें तौ हलकारे खबर दीन्हीं, माहाराज सफराके किनारे सिंघ गउ वाँनेंघेरियाँ ऊभौ छै ॥ इतरी सुणताँ प्रवाँणतौ ज,णे सौरमें आग धरी, वासग नागको सोते सौ, जाण ज्येका-लको सौ रोसौ ॥ खंभ फटकारताथ का नेंखडग झटकारताथका,सिंघरी सिकार चाढिया,इतराकमें तौ दासी आय मालूम करी ॥ चद्रायणाँ ॥ राज-अहेडे नीसस्या, घेरी सगली बीड ॥ अरजसुणौं दासी कहै, चले राणींके पीड ॥ चले राणींके पीड अरज अव धारज्ये ॥ सिंव मार माहा राजक तुरत पधारज्ये ॥ वरकौ जौसी तेडक वेलाँ छाँटज्यौ ॥ परिहाँ, आवै सुदबुद नांव बधाई

बाँटज्यौ ॥ १२८ ॥ राजावायक ॥ दोहा ॥ सिंघ-
मारघर आवस्याँ जद बाँटाँला भूर ॥ रंग वधावा-
गावज्यौ जदे वजास्याँ तूर ॥ १२९ ॥ वार्ता ॥
राजाजी सिंघकी सिकार पधारिया, जठे बडौ न
वगजौ मृघराज, मार कूटकर खलहाँण कर, गाडा
मैं घालनैं, वडा घमँड ठाटसूँफते रानिसाँण घुरा-
ताथका, पाछा उजीण दाखल हुवा, साथाँ वधायाँ
वँटी॥ केसरकसूँ वागली जिया, नौपताँ धुरी, तौपाँरी
सिलकाँवधाइयाँ हुई, ॥ दाईनैं लाख पसाव दे विदा
करी, ब्राह्मण भौजन, वरणीं पाठ अनुष्ठान हौवाला
गौ ॥ गौठ गूघरियाँ गीतनाद नित नवा उच्छरंग
था वैछै ॥ भाट भणैनैं, भौजग विडदावैछै ॥ जठै
तठै ठाट वाट, मंगला चार गावैछै, नैं घर घर वंदर
वाल वँधावैछै, ॥ कँवरजी राई वधता तिलवधे-
छै, नैं पगल्याचाल णाँ सधैछै ॥ दोहा ॥ राई व
धता तिलवधे राज अंसरज पूत॥मात पितामनमौ

दवै, सुद बुद कँवर सपूत ॥ १३० ॥ बार्ता ॥ बारह बरस मैं कँवरजी हुवा, ॥ ज्याँरी ओपमाँ कामदेव सारखीछै जिणनैं देख्याँ देवां गणाँही मौहित हौजावैछै ॥ कँवर जीकी असवारी हौय जब बडा बडा घराँकी पद मण्याँ देखण नै दौडैछै ॥ दोहा ॥ कंथ छौड कांमण भगै धायतजै निज बाल ॥ कर दरसण पर सण हुवै बिन दरसण बेहाल ॥ १३१ ॥ केई कँवारी छौकऱ्याँ पूजै ईस्वर और ॥ बंछै राज कंवारनूं दाय न आवै और १३२ ॥ बार्ता ॥ इतरा कमैं तौ कछ भुजरा राजा सूरज भांण रैवरु रा नारेल आया ॥ कँवरजीरी सगाई हुई ॥ घणां गाजाबाजा बधावा गवीजिया कितराक दिन पछै व्याव हुवौ तरै घणाँ घमंड सूँ परणनैं पधारिया॥ तिकी सुंदर सुरकंन्या नाम असतरी बडी रूप गुण आगर बुद्धरी सागर सील परायण गजगमनीं जिणसूँ कुसी किलौलाँ कर

रयाछै ॥ ज्युँ गोपियाँ में कान्ह और ताराँमें चंद्रमाँ नैं असतरियाँमें अनंग ज्यूँ राजैछै जिणरी गुंज अवगाज इंद्रज्यूं गाजैछै ॥ आठ पोहोर रंगर लियांमें बीतैछै॥ ऊगियाँ आथ वियाँरी खबरनहीं कँवर पदे सुख विलसैछै॥ अबे पीतम प्यारी सूं मन मिलियाछै॥ और रंग रैझरो खे झिलियाछैं ॥ दोहा पलकन छोडे पदमणीं पीव रही बिलमाय ॥ चमक पथरज्यूं लोहोके दिन दिन प्रीतसवाय ॥१२३॥इत सुदबुद सुख भोगवे उतरंभादुख भोग॥नाम धरायौ अनसनाँ लिख्यौ करम संजोग ॥ १२४ ॥ ॥ अबे कहूँ इणरीकथा कवि शिवकरण दरक्क ॥ विगतवार सब संभलौ राखूं नहीं फरक्क ॥ १२५॥ ॥ वार्ता ॥ अब अठी राजा जक्षसेण रीदासी सुस-मैणाँके पेट पूष्प सुगंधा पड्नैं जनमी हुती।तिके वरस बारामें हुई पण अनपाणीको अनसन, जल-मतीही लीन्हौं ॥ और मुखरी जीभसूं वाचावौले

नहीं ॥ जिणसूं नाँव अनसना पायौ ॥ दोहा ॥ रूप रती मृघलौचनीं, रहण सुसील सुभाय ॥ मुखरी जीभन ऊथले, पाणीं अंनन खाय ॥ १३६ ॥ वरस दवादस वी तिया, टगटग झांकेनैंण ॥ नांथ ण पियेन अनभखे नांसुख बोले वैंण ॥ १३७ ॥ पाव पलक नांहि वीसरे पूरव भवरी बात ॥ सास-सास सिवकरण कह, यादकरे दिनरात ॥ १३८॥ ॥ वार्ता ॥ येकदिन रासमा जौगमें अनसना तो न्हाय धोयने सूरजरे अरघ धूप दीप नैवैद्य सहित, अरचा पूजन करनें, लारला जन मांरी यादकर रहीछे नें हियामें ध्यान धर रही छै ॥ इतराकमें तो जोगी गोरखनाथजी. मछंदर नाथजी राचेला. नग्रमें भिक्षाके वासते आय नीसरिया तेरे अनस-नां जौगे थरांसू आदेस कीयौ, तरें गोरखनाथजी आसीस देनें कुशलात पूछी, और पूछियौके बाई पती कहां है, जरां अनसना कयो माहाराज, वह-

तो नग्रउज्जीणीरा राजा शालीवाहनरे घरे जन्म
लीयौनैं हूँदुखियारण दुख भोगऊंहूं पती तोइण
भाँत आनंद भौगवे छे ॥ दोहा ॥ शालीवाहन
नृपतग्रह, जनम्यो नगरउजीन, म्हैं दुखियारी
दुखलह्यो दइव बिछोहा दीन ॥ १३९ ॥ वार्ता ॥
तरे गोरखजती बौलिया बाईथारे अबे वेगोई मि-
लाप हुयजासी ॥ जरे अनसनापगे लागी नैंकह्यो
आपरा वचन फुरो ॥ इतरीवात बतलावण जोगी
कनैं,अनसनाकैहो तांहीं प्रवाँण,सुसर्सणां अनसना-
री माता दौडने जोगीका पग पकडलिया॥ और
इणरी हगीगत पूछणा लागी ॥ तरे जोगेश्वर लार-
री आद अंतसूँ प्रनालिका सहित वातकही॥इण
रहकी वात सुणकर राज लौकमें वडोकौतक हुवो
व सहरमें पिणवात हुई के गूंगी मुखाँ बौली ॥
रे अनसना नैं राजा जक्षसैंण बुलायकर पिछली
गीगत पूछी॥ नै अनसना मुख बौल कर राजा

नै सारी वार्ता कही॥और नग्रको सारोलोग देखण नै आयौ ॥ दोहा ॥ हुवौ अचंबौ नग्रमें गूँगी मुख बोलंत ॥ आगे हुईन होवसी, सबनर यूंतौ लंत, ॥ ॥ १४० ॥ वार्ता ॥ अबे राजा अन सनानें कहेछे ॥ दोहा ॥ जक्षसैंण करजोड कहि, गुन्हों करावो माफ ॥ बरसदवा दस पारणें,अनजल लीजे आप ॥ ॥ १४१ ॥ वार्ता ॥ जरे अनसनाँ बोली, कासी विस्वनाथका दरसण करनैं अनजल लेसाँ ॥ तरै राजलौक समेत कासी आया आयनै विस्वनाथ और कालभैरवका दरसण कर पाछाडेरैआया ॥ दूसरे दिन अनसना तो जाय नें कर वत लीन्हों ॥ कही उजीण नगरीका पदमासाहरे घरे अबतरूँ नाम सबलंग्या पाऊं ॥ सुदबुद कँवर सूंघरवास इतरी सुंणतांहीं अनसनारी माताजाय नें करवत लीयौ ॥ सो पदमा साहरै घरे चंपक रायरी कूख जनमूं और नाम सुजाण राय पाऊं ॥ ने

सब लंग्यारी टहलमैं रहूं ॥ इणतरे अठे इतरी बात राजा जक्ष सेंण सुण ताँहीं प्रवाण करवत लीयौके हूंपारा नगरका नगर सेठचौखराजके घरे अवतरूं, नाम रूपसी कंवर, और सबलंगानें परणूं ॥ इणतरे कहनें करवत लीनौं ॥ अठी सुसरमणां दासीरो खावंद कुंथनांमें फरास, करवत लेयनैं, उजीण नगरीमें, सुदबुद कंवर री खवासी में रहूं ॥ और नाई चनणियौं होऊं ॥ इणतरे, च्यारूं जणा करवत लेयने इच्छा प्रवाणें आप आपरेठिकाणेंजन्म लियौ ॥

इति सुदबुद सबलंगाकी वारता अनसनाकासी करवत लेकर, इच्छा जनम धारण वर्णन स हा शिवकरण रामरतन दरकमाहेश्वरी मारवाड़ी मूंडवेवाला कृत, षष्टम प्रकाश समाप्त ॥ ६ ॥

॥ अथ सुदबुद सवलंगा की बारता ॥

सह्ता शिवकरण रामरतन दरकमाहेश्वरी मारवाड़ी मूंडवेवालाकृत सप्तम जन्म वर्णन लिख्यते।

॥ बारता ॥ अठी दासी तौ करवत लेयनै उजीण नग्रका नग्र सेठ पदमा साह रेखासा दासी चंपकराय, नामें तिकी माहारूप गुणकी रास, तिणरी कूख पडनें अवतरी ॥ जिणरोनांव सुजाण राय दीनौं ॥ तिकी पिण माहारूपवान, विचिक्षण सर्वगुण संपन्न, दिन दिन अकिध तेज ॥ बधती कला, इसीकन्या जनमी, ॥ उठी सुदबुद, कँवर, तिकौ उजीण नगरीमें, राजा शालीवाहन रीपाटराणीं पदम प्रभावतीनामें छे तिकांरी कूखमें जनमियौई छौ ॥ अठी जक्षसैण राजा करवत लेयनें, पारा नगरीमें, चौख राजसेठके घरे जनम लेयनें, नामरूपासा पायौ ॥ और चनाणियां नाईरे घरे जनमलेयनें, रछौडी सम्हायकर, सुदबुद कँवरकी

चाकरीसें लागौ, ॥ अबे सेठ पदमासाहरे घरे, सावलंगा, सात बेटां ऊपर बेंठी हुई, ॥ तिकौ सेठ किस्यौहे कछे ॥ केधनकौ आरपार नहीं ॥ लाखां परलेखण नैं क्रोडाँपर कमलम ॥ और असंख्या ऊपर धजा ॥ वडनामीं सेठ ॥ राजरौ प्रद्धान जिणाँरे घरे पुत्रिजनमीं ॥ जिणरो उछाव, पुत्रसूंई अधिकमांनी ज्यौ ॥ और सौ बनथाल बजाया॥ साइयां बधाइयां वटी मंगल ढोलवागा ॥ दोहा ॥ घरघर बांटी गूघरी, घरघर वंदरवाल ॥ साहपद! म घर अवतरी, सावलंग्या सुखमल ॥ १४२ ॥ गोहूं बधती जौ बधे ॥ मौंणक जिस डौरंग ॥ पातलपेटी पदमणीं, चंपक बरणौं अंग ॥ ॥ १४३ ॥ आँगण खेलै बापके, सखी सुजाणीं साथ ॥ रमताँ कूंकम पद मँडै, रेसम जिसड़ा हाथ ॥ १४४ ॥ वार्ता ॥ अबे सब लंगा और सुजाण रायदासी, दोनांके येक जीव मिलरयौ

छै ॥ घडी येक अंतर नहिं पडे ॥ यूंक रतां सब लंगा वरस इग्यारारी हुई तरे पारा नगरमें, चौख राज सेठ रा बेटा, रूपसी कँवर सूं, सगाई हुई ॥ ॥ दोहा ॥ रूप कँवरका रूपको कवीन लाधौ पार रूप समंदर रूपरौ, कौट काम देव वार ॥ १४५ ॥ वार्ता ॥ अठी सबलंगा पिण रूपरी रंभा छै ॥ जिणरी जंघ जाणजे, केलीरा खंभा छै ॥ दोहा ॥ जंघ रंभ रा खंभसी, पींडीसु घटै घाट ॥ बाह्यां बेलण बेलियां, नाज़ुक निपट निराट ॥ १४६ ॥ कमर छटा हद केहरी, रंगम मौल्या अैंन॥चीता लंकी मृघ नयन,कौयल मधुरा वैंन ॥ १४७ ॥ वार्ता ॥ अबे रूपसी कँवर रे पिता राघररी, और साव लंगारे पितारा घररी जौडी मिली ॥ कितराक दिन पछे येक दिन रासमाजौ गमें, साव लंगा बौली सुजाण राय, कोई कारीगर खवासनें बुलायल्यावे, तौ म्हारानख लिरा वसूं ॥

तरे सुजाण राय तुरत, महलां सूंनीची आई ॥ आगे देखे तौ माहाराज कँवारकौ खवास, चान-णियां, चाल्यौ आवे है ॥ जरे सुजाण राय खवा सजीनैं काँई दोहो कहे छै ॥ सुजाण राय वायक ॥ दोहा ॥ लटपट बाँधौ पागडी, पेटी राखौ पास, कानाँ मौती जगमगे, किणरा राज खवास ॥१४८॥ खवास चान णियाँ वायक ॥ दोहा ॥ आँटपले टाँपाघडी पेटी म्हारे पास ॥ कराँ खवासी राजरी सुद बुद तणाँ खवास ॥ १४९ ॥ वार्ता ॥ तरैसुजाँण राय घणीं नरमाई सूंकही खवासजी आप म्हारा बाईजी रानखले देस्याँ काँई ॥ तरे खवास कही हाजर सेठजीकी लाड कँवरका नखजरूर लेदे स्याँ अवेसुजांणराय,खवासजीनें साथे लेयनें,महलाँ आ य हाजर हुई॥आगे सब लंगा,हिंडै हींड रया छै ॥ खवासजी महलाँरी खिड़कीसैं बड़ताँही साँम्हींदे खियोसू सवलंगासूं चौनिजर हौ गयानैं सावलं

गाको रूप देखकर छिकडी गुमहुवा नैंजाणें, मिर घीकोसो झोलो॥और सीतांगको सोडबोलो॥कनाँ भाँगकी लीलहर जाणें काला नागको सोंजहर ॥ खवासजी तो मुरछागत होयनें लोट पलेटाहोगया गुडैछे ॥ जाणें कूकडी सूतरी ॥ कनाँ बाजीगरकी सी कबूतरी ॥ महलाँरी सात बीसी पेडियाँ सूंगु डतागुडता चानण चाकमें आवता ठहरिया ॥ अबै खवासजी तो चिन्ता पडियाछै ॥ जाणें बादी गर सूंवाद खेलबा अडियाछै ॥ दासी सुजाणराय हवाघालनें साव चेत करैछै ॥ और साबलंगानें कहेछै ॥ चंद्रायणाँ ॥ खासानाई कँवरको राम बचावै राज जाहरहो सो जगतमें अनरथ होसी आज ॥ अनरथ होसी आज जगत सब जाणसी ॥ परिहाँ कोई न लपसी भेद भरम सब आणसी ॥ १५० ॥ सब लंगावायक चंद्रायणाँ ॥ चौवारा,दोयचपारक ऊँची मेडियाँ ॥ खड बड प-

ज्यौ खवास गुडं तौ पेडिया ॥ चंगौहौय खवासच रौंदिस जावसी ॥ परिहाँ म्हाँराजिवमें जीवजरैई आवसी ॥ १८१ ॥ वार्ता ॥ खवासजी घडी दोय सूँ साव चेत हुआ ॥ मुरछा खुली तरे सुजाण राय पाणील्यायनें आँखियाँ छँटाई ॥ अवे रछौडी सम्हालनें ऊभारया तरै सुजाण राय बोली अवे आप सावचेतीसूं पगत्याँ चढौ तरे चनाणियों काँई कहैछे ॥ दोहा ॥ परतन पाछौ पगधरूँ मूठ च-लावे नार ॥ उरह्यौ पेटी पाघडी साले चौट अपार १८२ ॥ वार्ता ॥ तरे दासी पाछो कहेछै ॥ दोहा ॥ मूठ चौट जाणें नहीं आखड पड्यास्व वास ॥ तल मुंडी पग ऊपरै दौरा आया सास १८३ ॥ महलाँ चाल खवासजी पड दौ देसूं ताँण मुख ढक बैठे पद मणीं जदनख लीज्यौ आँण ॥१८४॥ वार्ता ॥ तरे खवासजी फेरपाछा डिगता डौलता पड़ताआखड़ता रूपरा रसीला सवलंगारा

रूपनें निरखवा सारू महलाँरी पेडियाँ चढवा लागा जाणे धतूरा रौ जहर कना वासगरी सीलहर खवासजी झौला खावता थका रूपरा लौभी पाछा महलाँ जाय दाखल हुआ, ॥ आगे सुजाण राय, पड़दौताणदीनौ, ॥ पडदामेंसूं हात बारै काढनै नखलिरावेछे ॥ येक नख आंगणें पडगयौ, सू आंगणें पड़ताहीं प्रवाण, आंगलीमें बलन लागगई जरे सब लंगा कही, सुजाणराय, पाणीरौ रूपेट भर ल्या, म्हारानख पाडीमें न्हाँख नहीं तौ हाथमें बलन, पड़ीजायछे, जरे सुजाणराय गुलाब जलरो प्यालौ भर हाजर करियौ, खबासजी, नख प्याल में न्हाखेछे ॥ सुजाणराय, गिण गिणनें भेला कर राखैछे ॥ जरे चनणियें मन सूबो कीयौ इणमें मूँ नखतो चौरणा चहीजे ॥ तरै येक येक नखरी दोय दोय फासा उतारणीं सरूकरी ॥ येक तौ रूपेटामें न्हांखेछे,नें येक आपरी अंगरखीरी बांहमें उतारेछे

अठी सुजाणराय वीसूँ नख गिणनें रूपेटामें सूंनि कालनें हथेलीमें मसलकर, गोली करलीनी ॥ तिकी, जाणें मेंणरी गौलीकोसौ नरमास ॥ उण गोलीरो उजास जाणें विलोरी पखाण सारखोछे ॥ अठी चोरी सूँआधा नख लेयनेखवास जी पिणवि दा हुवेछे ॥ तरैसुजाण राय खवासजीनें पांचमो हौर विदागीकी दीन्ही खवासजी डिगताडौल तापाछा घरैपूगा वडी च्पार अचैत रया ॥ घर का स्याणाँ समजणाँ वेद भोपा मनाया नें डौरा मादलिया कराया ॥ खवासजी सावचेत हुवा जितरे कतौ महाराज कँवाररो बुलावो आयो ॥ जराँ जाय हाज रहुवा चनाणियांनें जेज घणीं लागी जिणसूं कँवरजी रीसकरनैं दोहौं केवेछे ॥ नें चनाणियों पाछो कांई जुवाव देवेछे ॥ कँवरजी वायक ॥ दोहा ॥ साची कहदे चन-णियाँ, कठे लगाई वार झाडूं तो नें ताजणाँ,

काढ खडग ल्यूं मार ॥ १५५ ॥ खवास वायक ॥ क्यांनें झूडो ताजणाँ, क्यूं मारो छो आप ॥ रामब चायो ऊबरयौ, राजतणे परताप ॥ १५६ ॥ कँवरजी वायक ॥ कांइं तोय लीन्हों डाकण्यां नांख्यौ भूत मरोड ॥ कन बादी गर बादियो, काले खादो तौड ॥ १५७ ॥ खवास वायक ॥ भूत भुजंग न डाकणीं, नां बादी गरलौट ॥ सेल कलेजै सालियौ, नैंन चपेटाँ चौट ॥ १५८ ॥ कँवरजी वायक ॥ किण थारे भाला मारिया, किणें चलाया बाँण ॥ माफ गुन्हाँ सौ बखासिया, साच बता सहनाँण ॥ १५९ ॥ खवास वायक ॥ खोल पलासूं कर दिया, यह लीजे सहनाण ॥ इसडा न खाजिण आँगल्याँ, विणें चलाया बाण ॥ १६० ॥ कंवरजी वायक ॥ फूटौ काच बिलोरकौ, दीन्हौं म्हारे हात॥ झूटो बोले चनाणियाँ, अधिक फांसली जात ॥ १६१ ॥ वार्ता ॥ कँवरजी नखदेखनै

बोल्या,ओतौ बिलौरी पाषाणरौ चूरौ छै॥तरे चन णियें अरज करी गरीबा निवाज हातों पगाँरा नख छे ॥ जरे कंवरजी फरमायौ ॥ इणरी तारीफ कांई तरहसूं मालूम पडै ॥ तरे खवास तुरतही गरमपाणीरो प्यालो भरायनें नखन्हांक दीन्हां, अबे नखतो पाणीमें न्हांखतां प्रवाण, गलनें नरघ सेणरे सरीखा होय गया॥जरेचनणियें हथलीमें म-सलनें गोली बांधकर,कंवररे हाजर नजर गुदराई॥ खवास वायक ॥दोहा॥ हीरकणींसा चकमके, पो-तजिस्यो पुखराज॥नख छे नाजुक नारका, नैणाँ निरखी आज ॥१६२॥ चंद्रायणा॥ देस विदेसाँम्हें फिरचौ; जमीन देखी जोय सुंदरदेखी सहरमें,इसी नदेखी कोय॥इसीन देखीकोयक नाजुक काँमणी। हात घडी करतारक इधकी भाँमणी ॥ बोले अमृ-त वैंणक आँबे कौयली॥ परिहां, खंड प्रखडाँ नार इसी नहिं हायलैी ॥ १६३ ॥ सिंगलदीप निहारि

यौ, देख्यौ सहरवलख॥साहपदम घरडी,करी देखी येक पलक्क ॥ देखी येक पलक्क, साह घरडी करी। खासा दासी लार सुजाणीं नीखरी ॥ गजगैंवरकी चालक ऊभी वावणीं ॥ परिहाँ, चंदनके रे रूँख लिपट्टी नागणीं ॥ १६४ ॥ वार्ता ॥ खवास बौलियौ, माहाराज, आपणा नगरमें इण अहनाणां असतरी देखा आये हूं ॥ जिंणराहातां पगांरा ये बी सूं नखछे ॥ तरे, महाराज कँवार खवासनें कांँईं दोहो कहैछे ॥ कंवरबायक ॥ चंद्रायणां ॥ कांँईं आकासां ऊतरी, किसूं पतालां सेस ॥ इसी सरावे कांमणीं, ऊझड हौगयो देस ॥ ऊझड हौगयो देस, क वणियां जातनैं ॥ परिहां तूँ नाईकी जात, वधावे वातनें ॥ १६५ ॥ खवास बायक ॥ नहिं आकासां ऊतरी जनमीं नहीं पताल ॥ सूवौ ल्यायौ चांचमैं, फूली चंपक डाल,फूलीचंपक डालक, कलियां कुंदरी ॥ परिहां देख्यांहीं सुख होयक

लहर समंदरी ॥ १६६ ॥ कँवर बायक ॥ तूं म्हिं मां इसडीकरे, जांणक झूठीबात ॥ कै किण मुखसूं संभली, सुपनौं आयौ रात ॥ सुपनों आयो रात, नैंन नहिं देखियां, परिहां मनसूं बात बणाय करे मत सेखियां ॥ १६७ ॥ खवास बायक ॥ कर को मल कटिकेहरी, मृगनैंनींसी नार ॥ खंजनमीनच. कोरसे, हातघडी करतार२॥भली येक भामनीं। काला बादल मांह चमक्की दामनीं, बोले अमृत बणक, चंपेकोयली ॥ परिहां खंड प्रखंडा नारइसी नहिं होयली ॥ १६८ ॥ कँवरजी बायक ॥ कौंन घराँ उतपतभंइ, कौंणघराँ अवतार ॥ कडाकिलं- गी बकसदां, तुरत मिलादेनार ॥ तुरत मिलादे नार, कचंगी गोरडी ॥ किण घर राजकुँवार, किणां घर छोरडी॥साचीकह दे बात कपट मत राखज्यो॥ परिहाँ चाकर चतुर सुजाण झूठमत भाखज्ये ।१६९।बारता॥इसीतारीफ सुणनैं,माहाराज कुँवार

चनणियाँनें काँई कहेछै ॥ चंद्रायणाँ ॥ सोनों चाँदी रतनघूं तुरी समपूं तोय ॥ खासा नाई रावलौ नार मिलादे मोय ॥ नार मिलादे मोयक देखांनेंण सूँ ॥ भावे बोलन बोल बकराँ बैंणसूं ॥ निजराँ देहवताय पटावखसावसाँ ॥ परिहाँ ॥ देखाँप दमण नार पछे अन खावसाँ ॥ १७० ॥ दोहा ॥ तुज वाणीं श्रवणाँ सुणीं, करद कलेजे पार ॥ जौ मुजचावे जीवणौ तुरत मिलादे नार ॥ १७१ ॥ ॥ वार्ता ॥ कँवरजी तो अनसन लेयने पौढरयाछै और चनणियों कँवरजीने समझावेछै ॥ पृथ्वीनाथ, यूंकिणतरह सूं देखीजे नग्रसेठ पदमसीजी रीलाड कँवरछै ॥ नें अकन कवारीछै ॥ तरै कँवरजी खवासनें कांई केवेछै ॥ नैं खवासपाछौ कांई जुवाव देवैछै ॥ चंद्रायणा ॥ म्हेनहिंदांतण मोड़स्यां चनण्यां साचीजाँण ॥ विनदेख्यांअन्नां भखां माहां कालकी आँण ॥ माहां कालकी

आँणक निरखां नैंणसूं ॥ पारिहां पछै पिवाँलानीर बकारां वैंणसूं ॥ १७२ ॥ खवास बायछै ॥ बडाघरांकी डीकरी थे कांइ पकड्यौ गाढ॥मुसकलम्हाँनें कँवरजी इतकूवौ उत खाड ॥ इतकूवौ उत खाडक मँहणौं लाग सी ॥ पारिहां नाई जात कमींण भरोसौ भागसी ॥ १७३ ॥ वार्ता ॥ खवास कँवरजीनें समझावेछै ॥ तरे खवासयेक अकलउपाय बोल्यौ ॥ कँवरजी साहब मिलवा कौ येक उपाव भताऊंछूं ॥ गुन्हौ माफकराव ज्ये ॥ जरै कँवरजी राजीहुयकर बोल्या तूंकह सोज्यूंई करस्याँ ॥तरे कही आप पंडितकौ भेष बणायनें पधारोतो मिलाप होजाय तरे कँवरजी पंडित बणनें पधारिया॥ दोहा ॥ पीतांबर पटधारिया पहर खडाऊ पाय ॥ पुस्तक लीन्हौं खाखमें पदमण निरखणजाय १७४ वार्ता ॥ कँवरजी जायनें सब लंगारे झरोखां नीचे ऊभारहिया आगे सबलंगा और सुजाण राय

झरौ खारे गौखाँ हवा लेरया छे ॥ इतरा कमें तौ पंडितजी निजर आया ॥ दौनाँरै चसमां मिलि-या ॥ तरे सब लंगा, कँवरजीनें देखकर मौहित हुई ॥ और सुजांणींसूँ बतलावेछे ॥ दोहा ॥ सुजां णीं सुंण दासीयां, सांभल येक समाज ॥ नैणां इचरज देखियौ, इसडौ पंडित आज ॥ १७८ ॥ ॥ वार्ता ॥ सबलंगा रोदोहो सुणनैं, सुजाणीं बो-ली ॥ वाईजी, उजीण नगरीछै, जिणमें केईक पंडित तौ आवेछै नें, केईक जावेछै ॥ इणरो कौं ई इचराज करोछौ ॥ जरां सुजाणराय पंडितजीनें कांई चंद्रायणौंके वेछै ॥ नें पंडितजी, काँई पाछौ जवाव देवेछै ॥ चंद्रायणां ॥ गलियांम्हांरी आयक बैठा वांमणां ॥ गल फूलंदीमाल,पधारयां पाँमणाँ। पुस्तक लीनौंहात, कमर रूमाल है परिहां ज्यां पाया भरतारक नार निहाल है ॥ १७६ ॥ कंवर जी वायक ॥ दोहा ॥ गौरीऊभी गौखड़ां, नैण

डमर करयां ॥ ज्यूं बिणजारौ हालियौ, केसर भार भरयां, ॥ १७७ ॥ चंद्रायणाँ ॥ मृघसलूणाँ नैंणक भँवरावंक है ॥ गत्तगयंदाँ चालक चीता लंक है ॥ नाक सुवाकी चाचविचीत्तर भाल हैं ॥ परिहां, ज्याँघर ऐसी नारक कंथनिहाल है १७८ ॥ सुजाण रायवायक ॥ चंद्रायणाँ ॥ सहर बडा उज्जीन जिनौं दा बामणां ॥ पुस्तकलीन्हा हात पधारया पाँमणां ॥ औढ सुरंग बनात दुपटा लालहै ॥ मूछभँवराँ वंकक टीकौ भाल है ॥ भर जौवन मुसताकक गौसा लाल है ॥ परिहाँ, जिणघर येसा कंथक नारनि हाल है ॥ १७९ ॥ कंवरजी वायक ॥ सहर बडाउज्जीन जिनौं दीकाँमणीं॥ जुलफ्याँ परकुर बान निजर वर सावणीं ॥ औढण दिखणीं चीरक लहँगालाल है झीणींकाजल रेखक विंदी भाल है ॥ नाक सुवेदी चाँच गुलाबी गाल है परिहाँ॥ज्याँघर नाजुक नारक कंथनिहालहै

१८०अवे सावलंगा सुजाणरायसूंकांई दोहो कहैछै चंद्रायणां॥डीगा गोरा पातला, जुलफ्यां भँवर भवंत ज्यांनित पूजी गौर ज्या, ज्यांघर इसडा कंथ॥ ज्यांघर इसडा कंथ,सुवै सुख नींदसूं अंगसूंअंग भिडाय नवला वींदसूं॥हितचितकी दोयबात कहिवडे़ खोलिये॥ परिहाँकर जोवन कुरबान विहसि मुख बौलिये॥ १८१ ॥वार्ता ॥सुजाण राय बोली बाईजी साहब, रूपतो इणपंडितको बर साबणोछै. पिंण असैंदा मुलकरौं दीसैछे ॥ जरै सबलंगा कही, पंडतने तेड़ ल्याव ॥ थारोहात दिखाय ॥जद सुजाणराय पंडतजीने काँईं दोहो कहैछै॥सुजांणराय बायक॥ सौरठा॥कांइंथे पढ्या पुराण, कांइँ जाणो जौतिषकला ॥ स्यामूद्रिक कनकौक, भेद भतावौ पंडिता॥१८२ ॥ पंडित वायक॥पट नव बावनअंक, कलाबहौत्तर म्हे पढ्या गुणको गाहक नाँह, कहो किणाँ नें दाखवाँ ॥

१८३॥ दोहा॥ सूप सिलप जौतिस पढ्या, वैद्य क मंत्र रसाण॥इण नगरी मूरख घुजे॥ गुणकी नहीं पिछाण॥ १८४॥ वार्ता॥ जरै सुजाणराय कही पंडितजी म्हारो हातदेखौ॥ तरे सुजाणराय रो हातदेख नेंकयौ केथारा सिरदार कोनें थारो येक जीवछै॥जरै सुजाणीं कयौ म्हारा वाईजी-को हात देखौ॥तरे पंडितजी दोहोकहैछै॥ पंडि-त वायक॥दोहा॥कूँण जात कांई नाँवहै किणघर लाड़ कँवार॥म्हांनें संध्या साझणी कीज्यौ मती अँवार॥ १८५॥दासी वायक॥ दोहा॥ झटपट जलदी चाल स्यां चटकै देखो हात॥ गटपटको काँइँ काइं कामछै, करौ हुटिपी वात॥ १८६॥ ॥ वार्ता॥ इतरी वात सुजाणराय की सुणताहीं प्रवाण माहाराज कँवारतो सावलंगारै महलां दाख लहुवा, और सुजाणराय आडी कनात बाँधनें साव लंगानें कहै छे बाई साव आपरो पिण हात

दिखावौ ॥ पंडितजी सारी बिदियामें पढियौड़ा प्रवीण हैं सूमनरी बात कहसी ॥ तरे सब लंगा हात पड़दा में सूंबारे काढनें, हात जोड़ और आदर कर, पंडितजीनें बैठाया छे ॥ अवे साब लंगा कनात मैं सूँ हात दिखायौ ॥ तरे पंडितजी हात देखनें कही, थारा मनमें दोवड़ चिताई रहवो करे छे ॥ कोई पूर बला भवरो प्रीतममनमें बसै छै ॥ और थारी नवमाँ बरसमै सगाई हुईच हीजे ॥ वर पिण आपरी जोड़ी रौमिलै, परन्तु चित प्रसन्न नाहिं हुवे ॥ हात देखताँ तो इण तरहदी खेछै फेर जनम पत्रिका देख नें फल कहस्याँ, आवात सुंणताँई साब लंगा मुस कायनें हात पड़ दामें खेंचलीयो ॥ और सुजाणींनें कह बालागी ॥ सुजाणीं तूं थारो बीहात दिखाय ॥ जराँ सुजाणीं रो हात देखनें, पंडितजी कही, थारेनें, इणारे पूर बला भवरो सनमंद छे ॥ इतनीं सुण साब लंगानि

सासौ न्हांखियौ इतराक मैं तौ पंडितजी बिदा माँगी ॥ जराँ सुजाणराय, मोहोरांमूं थाल भरनैं, बिदा देवा लागी ॥ तरे पंडितजी रोहजूरियौ, सुजाणीनें दोहौ कहै छै, ॥ हजूरिया वायक ॥ चंद्रायणाँ॥ सुणौं सुजाणीं दासियाँ थांरै नहीं अस-रफ्याँ चाय॥ भीखभवंता देखिया, इसड़ा पंडित-नाँय ॥ इसड़ा पंडितनाँय, घरौ घर जाचसी ॥ पौथी पतड़ौ खौलक माडाँइँ वाचसी ॥ वेकुग णाँकोइ और क झूटावैंणका ॥ पारिहाँ नहीं असर क्याँ चाह, रसीला नैंणका ॥ १८७ ॥ दोहा ॥ मोहोराँ मन मानैं नहीं, करौ दान सनमाँन ॥ पंडित चाहै प्रेम रस, कछ भुजांगकौ दान ॥ १८८॥ वार्ता ॥ पंडितजी तौ काछ भुज और अंगकौ दान मांग्यौ ॥ इतरी सुँणताँ हीं सुजाणराय तौ सुलकनैं, पाछी फिरगई ॥ सब लंगानें सैंन सूँ समझावै छै ॥ काँइक वड़का वौलनैं डरावै

छे मनतौ भावे छे, नैं मूंड हलावै छे ॥ पंडितजी और सावलंगा प्रेमरा पिया स्योड़ा नैणैं पड़दा मैं सूँ प्यास बुझावैछे ॥ अबे सुजाणराय बोली पंडितजी आज तौ आपपधारो बड़ा भाभीजी साहव पधारणरी बेलाँहोगई ॥ तरे पंडितजी मह लाँसूं नीचा ऊतरिया साबलंगा सुजाणरायनें क- यौ सुजाण राय तूं पंडितजीरे साथ जायनें डेरौ देख आव॥कठे उतरियाछे ॥ इणाँ कनेंसूं म्हारी जनम पत्री करावसूं॥तरे सुजाणीं दौड़नें सत खंडे महल जाय चढदेखे छै । पंडितजी तौ राज महलाँ जाय दाखल हुवा ॥ दोहा ॥ दासी दौड़ी डागलां जाय झरोखां दीठ ॥ राजमहलाँ पहुंचिया बड़ताँ देखी पीठ ॥ १८९ ॥ वार्ता ॥ अवे सुजाणीं आय नें अरज करी ॥ वाईजी साहवाँ डेरौ तौ हूं देख आई हूँ ॥ पिण काँईक छल बल हुवो दीषेछे ॥ तरे सब लंगा पूछियौं कांई खबर पड़ी जराँ कयो

राज महलाँ दाखल हुवा सो सही तो माहाराज कँवरछै ॥ नैं साथै टहल वो छो जिणरी सुरत जिं ण दिन आपरा नखलेवणनैं आयो जिकण खवा-सकी सीछे ॥ सावलंगा और सुजाण रायरैं आप समैं आलो चहोय रयो छे ॥

इति सुदबुद सवलंगाकी बार्ता कँवर सुदबुद जोसी रूप सावलंगा मिल विछडन वर्णन सहा शिवकरण रामरतन दरक माहे श्वरी मारवाड़ी मूंडवे वाले कृत सप्तम प्रकाश ॥ ७ ॥

अथ सुदबुद सव लंगाकी वारता अष्टमप्रकाश प्रारम्भः॥

वार्ता ॥ अठी माहाराज कँवार महलाँ दाखल हु-वा तरे महलाँमें कँवराणी जी पूछना करी ॥ पृथ्वी नाथ आप मोड़ा किण कारण पधारिया और आज तो आपरा दिल ऊपर खूबी और खुस्याली

जादा मालूम पडेछैं ॥ तरे कँवर बोल्या आजयें कनवी बात सुणीं ॥ जरैं कँवराणीजी पूछियो काँ ईसुणीं ॥ तरे कँवरजी सावलंगारी महमाँ घणीं करी ॥कही इसी अस्तरी आजतेई, नैतो हुईनैं, ओर कोई होसी ॥ दोहा ॥ नगर उजीणीं, म्हेव-साँ.सहस्नदीठो जोय ॥ पुंगल केसी पदमिणीं इस डी हुईनहोय ॥ १९० ॥ नाँकोइ देवल पूतलीनाँ कोइ रावल राज ॥ नाँकोइ देवा देवताँ देखीपद मणआज ॥ १९१॥ कँवराणीं वायक ॥ चंद्रायणाँ वाणचाँ केरी डीकरी छाछखी चँड़ो खाय दीसे ऊंधा ओझरा किणरेआवे दाय किणरे आवे दाय सहज चढऊंयसी ॥ हींग तेलरी बास कँवर काँई सूँघसी ॥ १९२ ॥कँवरजी वायक ॥ चंद्रायणाँ सवलंग्या मूघ छाकियो लहर समंदा लेह ॥ उण पगडाई आंगली थारी सगली देह ॥थारी सगली देह,उणाँपग अंगली ॥ हात घडी करतार छबीली

छंगली॥ कंचन केसी ओप दमंके दामणीं ॥ परि हाँ देखी सुणींनकौय अनौ स्त्री कामणीं ॥ १९३। कँवराणी वायक ॥ चँद्रायणाँ ॥ विणजी करेज वाँणियाँ वैचे पलियाँ तेल ॥ थाँके वाँके आँतरौ आकाँनागर बेल॥आकाँ नागरबेलादोनांकेआँतरौ परनारचाँ सूंप्रीत तोवैस्या साँतरौ ॥ फूहड जात वकाल पलंगचढ़ ऊंघसी परिहाँ हींगतेलरी वास कँवरजीसूंघसी ॥ १९४ ॥ कँवरजी वायक ॥ काया कंचन मन रतं न नेतरखड़ग खतंग ॥ सावलंगा छा क्या मृघज्यूँ ऊभी मौड़ै अंगरकमर बल न्हाँखियाँ ॥ नाक सुवाकी चांच मृघसी आँ-खियाँ ॥ औढ़ण पचरंग चीर कलंजा रूपरा ॥ परिहा जाणक जड़िया हीर हेमतन ऊपरा ॥ ॥ १९५ ॥ वार्ता ॥ इसरी सुणताँ तौ कंवराणी जीनैं रीसआई॥ कह प्रथ्वी नाथ इसडीकाँई रूप वंतछै॥ जिणरौ आपराजा वाँरा कँवरबाखाण करौ

अलवत उण विनाँ अस्तरियाँ सूं देस भरियौछै॥ किस्यौ बीज बूडगयो ॥ आप बाणयाँरीछोकरी को, इतरीकाँई बडाई करोछौ ॥ कँवरजी वायक ॥दोहा॥ छटादेखमन छाकियौ. जाणक चितरचो मौर ॥ चीता लंकी चितचढी, दायन आवे और ॥१९६॥कँवराणी वायक ॥ काँइ आकासाँ ऊतरी किसूं पतालासेस दायन आवे दूसरी काँइ ऊझड़ हौगयो देस ॥ १९७ ॥ कँवरजी वायक ॥ चंद्रा यणाँ ॥ नहिं आकासाँ ऊतरी जनमीं नहिंपयाल सूवौल्यायो चौंचमें,फूली चंपक डाल॥फूली चंप क डालक कलियाँ कुंदरी॥हियौ हिलौला लेहक, लहर समंदरी॥ अजब जहूरा हूर कुरज्याँ सौ रहै॥ परिहाँ, चंचल चतुर चिकौर कचितरच्या मौरहै ॥ १९८ ॥ वार्ता ॥ इतरी सुणनें कँवराणी जीतो अचंभे रया, और माहाराज कँवारसूं अरजकरी प्रथ्वीनाथ इसड़ी छेतौ म्हे पिंण देखस्याँ ॥ अठी

सावलंगानें, सेठजी चोखौ मोहोरत दिखायनैं पढ
णनेबैठाणी और सुजाण रायदासी खवासीमैं, थाल
पूजाको लीयाँ हाजर खड़ी छै॥ तरे गुराँकयौ
गणेसजी, नैं सारदारी पूजाकर, पाछै पाटै पढणनैं
बेठौसू विद्याबेगी आवसी॥ सवलंगा वायक॥
॥ दोहा॥ सरसत सारद सुमरिये गवरी पूत्रगणेस
॥ विदियादे परमेश्वरी, जोबन बालौ वेस॥१९९॥
पाँच मोहोरछे ऊपरे, लियौ सिरी फल हात॥
बेटीपद माँसाहरी, सखी सुजाणी साथ॥२००॥
सारद गणपत वीनवाँ, लुललुल लागाँ पाय॥
विदिया गुरसुं वीनती, भूलाँ हरफ भतायार०१॥
॥ वार्ता॥ सखीसुजाँण रायनैं गुराँ साहवरी
पौसाल पढैछै॥अबै येकादिनरा समाँ जोगमें,कँवर
सुदबुदनें, सावलंगा याद आई॥तरे आपराभरजी
दान, चंनाणियाँ खवासनें, फुर मायौके सवलंगा-
कठे छै॥सूजायनें चौकस कर आव॥ कँवरजी

वायक ॥ चंद्रायणाँ ॥ कर पदमण सूं बीनती,सन मुख अरज सुणाय ॥ बेगो आज्यै चनणियाँ, झट पट जलदी जाय ॥ झटपट जलदी जाय, सँदेसौ दीजिये परिहाँनैंन सैंन मिलजाय, इसी बिधकी जिये ॥ २०२ ॥ वार्ता ॥ इतरी बात कँवरजी रीसुणनैं खवास जाय खबर करीतौ, सब लंग्याने सुजाण राय पढणनें पधारिया छै ॥ जरे चंनणियें भाल लगाई, ढूंढताँ २ आगे चौपड़का बजारमैं, चंद गुरूकी जायगांके झरोखाँ पढै छै ॥ साब लंगापिण खवासनें देख कर ओलखियो ॥ खवास वायक ॥ चंद्रायणाँ ॥ तुज कारण मुज मौकल्यौ, लौभी लागौ लार॥अड़दा पड़दा खोलदे, देखणदे दीदार देखणदेदीदार महोला लीजिये ॥ साब लंगा श्रवजाँण कदरसणदीजिये ॥ भेज्यो कँवर अवारक थारे कारणैं परिहाँ खासौ कँवर खवासक ऊभौ वारणैं ॥ २०३ ॥ मुजमुष तुजसौभासुणी,

लग्यौ कलेजै घाव ॥ अनसन लीन्हौं कँवरजी, तुंज देखणरौ चाव ॥ तुंज देखणरौ चाव, भणीं जण आवसी॥परिहाँ देख्याँई सुख होय पछे अन खावसी ॥ २०४ ॥ सावलंगा बायक ॥ काँईं हट लागा कँवरजी, तूं काँइं पड़ियोलार अगल बगल कोइ सांभले,फैले बात अपार फैले बात अपार, कँवारी डावडी ॥ परिहाँ भाव जमौ सादेयक मारै भावड़ी ॥ २०५ ॥ खवास बायक ॥ जद तुज कर नख पर खिया कँवर अननहिं खाय ॥ किरपा कीज्यौ सुंदरी आयौ चित्त लगाय ॥ आयौ चित्त लगायक तेरे कारणें ॥ परिहाँ हाजर खड़ो खवासक डौडी बारणें ॥ २०६ ॥ साव लंगा बायक ॥ अकन कँवारी छौकरीसमजूँ नहीं अजान॥हेबिधनाँ कैसेंवणैं बालक संग जवान ॥बालक संगजवान कदुं बौला जसी ॥परिहां भावज देसी बौल सिंघ ज्यूंगा जसी२०७खवास बायक॥तुजकारण तलफत फिरे

पिंजरव्यापी पीर॥चात्रगचंद चिकौरज्यूँ यूं मछली विननीर ॥ यूं मछली विननीर सँदेसौ लीजिये ॥ परिहाँ टुकि येक नैंन मिलाय इसारो दीजिये ॥ २०८ ॥ सावलंगावायक ॥ विष घौलूं कूवैपडूँ काँई करूं अप घात ॥ इणदुख किण विध ऊवरूं साथणियाँ सुणबात ॥ साथणियाँ सुणबात घरोंघर भाँडसी ॥ परिहाँ बाप बीर लखजाय कमरणौं मा डसी ॥ २०९ ॥ वार्ता ॥ खवास खबर करनैंपा छौ जायकर कँवरजीनें हाजरी दीनीं ॥ खवास वायक ॥ चंद्रायणाँ ॥ चंदगुरू चित्रसालमैं अर ज सुणौं महाराज ॥ गई सुजाणीं साथले पदमण पढ बाकाज ॥ पदमण पढवा काज गई म्हेसाँ भ ली परिहाँ बैठीपड़दामाँय निजरसूंनामिली ॥ २१० ॥ चौपड़रा बाजारमें चंदगुरूकी पौल ॥ हाथी मंडिया बारणें करी ऊजली ढौल ॥ करी ऊजली ढौलका पदमण कारणें ॥ पोहोरायत दो

यच्यार करुभा बारणौं ॥ डौडी पड़दा चौक क
ना ताँबाँधियाँ ॥ परिहाँ तकै झरोखां माँह नैंणस
रसांधियाँ ॥ २११ ॥ ज्याश गुरुकी जायगाँ,
सांम्हीं झिर मिटजाल ॥ बेटी पदमाँ साहरी, कँ-
वर पढै चटसाल ॥ कँवर पढै चटसाल, रंगसूरं
गियाँ ॥ वेलण वेलीवांह गुलाबी अंगियाँ ॥ नाँबा-
ला पन जौर जवानीं नाँझली ॥ परिहाँ देख्याँ
दरद अपार, विनाँ देख्याँइ भली ॥ २१२ ॥
॥ वार्ता ॥ कँवरजी चंनाणियाँरा समाचार सुणनैं
फुरमावैछै ॥ चंद्रायणाँ ॥ आपाँइ पढवा चालस्याँ
सुंणज्ये बात खवास॥लेसाँ पाटी बरतणौं, बैसाँपद्
मणपास ॥ बैसाँ पदमण पास, सवेरै चालस्याँ ॥
कराँ नैंन सूंसैंन निजर भरन्हालस्याँ ॥ २१३ ॥
॥ वार्ता ॥ कँवरजीरौ हुकम हुवौ, आवैचंद विजे-
जी ॥ जराँ येक दौड़ता दौय च्यार दौड़गया ॥
जाय गुराँसावने कही, आपनैं माहाराज कँवार

वुलावे छै, इतरी सुंणतांही, गुरूजी तो हाक्या बा क्या रहगया ॥ अंगवसतर ओढे, जरांतो ओघौ भूलजावे छै॥ओघौ उठावै जितरै अंगवस्तर भूल जावेछै ॥ पाछौ ओघौ सम्हाले इतराक में छड़ी भूल जावेछै ॥ इसीतरहसूं गुरांसाव तो बडासा, सराजाल मैं उलझ गया, रखेज कँवरजी पढावण री नहीं कह देवै ॥ अठे तो घरमैं आगेही सौर अरि योछे ॥ अगनी रूपी कँवरजी कठै मावसी ॥ चंद्रायणाँ ॥ चालै डिगता डौलता, लिवी हात मैं डाँग ॥ रुलती जाय पछे वड़ी, लफराँ लटकै लाँग ॥ लफराँ लटकै लाँग, गुरूजी आइया॥वहुत करी मनुहारक, पाट विठा विया ॥ देख कँवर को लौभहिया विचसा लियौ, परिहाँ, आगै सौर अपार पतंगौ चालियौ ॥ २१४ ॥ वार्ता ॥ अवे कँवरजी दोय च्यार वात, आडी टेडी करनैं, कयौ माहाराज गुरूजी, म्हानैं आप पढावौ

तरे गुरूजी बोल्या म्हेतो बजरठोठछाँ ॥ येक आँक पढिया नहीं ॥ च्यार घर माहाज नांराछै जिणसूं गोचरी ल्यायनैं ऊद्रपूरणा करांछाँ ॥ और आपरी बस्तीमें बैठाछानैं आपनैं आसरी बाद देवांछाँ॥पढिया होता तो आज निहाल होजाता॥ माहाराज कँवार पढ़णनैं, आवता, नैं गांवपटा बखसावता ॥ पिण बिदिया परालबदरी आवेछै ॥ गुराँवायक ॥ चंद्रायणाँ ॥ बालपणें मायतम-रया, अक्षर पढ्‌चान येक ॥ भूख भवंता जगभ-र्‌या, लियौ बुढापे भेखरठोठम्है रहगया॥परिहाँ॥ देख्याराज कँवार बिद्या बिनगह गया ॥ २१८ ॥ बालपणामें गुरमरचा, करचा रामजी खोट ॥दादा गुरभणियाँ नहीं, जिणसूं रहगया ठोट ॥ जिणसूं रहगया ठोट, ककोभी नाँपढचा परिहाँ, रम्याछौ कराँ मांहक, पाटीनाँ चढचा ॥ २१६ ॥ कँवरजी वायक ॥ चंद्रायणाँ ॥ ज्याश गुरूसूं बीनती, बिदि

या सरस भणाय ॥ सुदबुद कँवर सुलच्छणाँ, लुल लुल लागे पाय ॥ लुल लुल लागे पाय, विद्याके कारणें ॥ हाथीडा दोय च्यारबँधाऊंबारणैं ॥ हाथ्यांई सुखपाल झरोखा छाज सो ॥ परिहाँ लगै छत्रपाति पाय राजगुरुबाजसौ ॥ २१७ ॥ गुराँ बायक ॥ सुण सुदबुद गुरजी कहे म्हारैभण न मतिआव ॥ गज घोडा रथ पालखी म्हारे नहीं खटाव ॥ म्हारे नहीं खटाव गरीबी चालछे ॥ इण गांमें दस बीस बडी पौसालछै ॥ आगेही इण साल पढ्या नाहिं राजवी ॥ परिहाँ नवौ रकीणौं नेग लगे विनबाजवी ॥ २१८ ॥ चनाणियाँ बायक ॥ दोहा ॥ वडी फजर दिन ऊगताँ पुख पांचम रविवार॥कह चनएयौं गुराँ आवसी पढवा राज कँवार ॥ २१९ ॥ गुराँबायक ॥ चंद्रायणाँ ॥ सुण सूद गुरजी कहै साची दाखूं तौय ॥ अण भणियाँ उट जाव सौ राजाडंड सी मोय ॥ राजाडंडसी मोय

विद्याके कारणौं ॥ विद्यानहीं भरपूर गुराँके बार-
णौं ॥ येल भविन उठजायकधोखौ ल्यावसाँ परिहाँ
तूंराजाकौं कँवरऔलभौ खावसाँ२२० कँवरवायक
डंडे ज्यांनें म्हेडँडाँ थांनें डंडे न कोय ॥ हाकम
बखसी पेसवा पायपडेला तौय ॥ पाव पड़ेला तौ
य गरज्याँ चालसी ॥ खूंनी देसी छौड हुकम न-
हिं टालसी ॥ सरणाँरी पौसालक डंकौ बाजसी ॥
परिहाँ घडियावल घनघोर नौपताँ गाजसी ॥
२२१ ॥ गुराँ वायक ॥ राज कँवर भावे नहीं या
छौटी पौसाल ॥ अठै भणीजे वाणियाँ थेमौटा
भौपाल २पढौ चटसालियाँ॥राज गुराँरै महल झ-
रौखा जालियाँ ॥ सहज पलंग पर जंकउठै सब
त्यारछैं ॥ परिहाँ राज गुरू पौसाल अठै दोय
च्यारछै ॥ २२२ ॥ कंवरवायक ॥ चोझडिया ॥
राज गुराँकी पौल पढण नहिं जावसाँ थाँकौ मान
वढाय अठै नित आवसाँ ॥ थे साराँ सिरताज रा-

ज गुरु वाजसो ॥ परिहाँ जतीन कोई जौड सिव्य ज्यूँ गाजसौ ॥२२३॥ दोहा ॥ म्हारै तौ गुर आपहौ भावै पढन पढ ॥ करकौतल सिण गारिया हात्याँ जावौ चढ ॥ २२४ ॥ वार्ता ॥ गुरूजीतौ नेकारौ करताहीजरया झटदेसी, गुराँनैं सिरौपाव दुसाला, खीनखांप औढायनैं, हातियांरै हलकै चँवराँरै फट कारेवणाँ गाजाबाजासूं पौसाल पुगाया॥दूसरेदिन दिन ऊगेही माहाराज कँवार बडाहगाँमसूंसौनारा नारेलाँ पढवा पधारिया,॥ आगै गुराँसा आयनैं चटसालरी तयारी करी ॥ गाडापचासेक तौ क जोडोनैं गाडापांच सात फाटा पुराणाँ चींथरा व खेरदीनाँ और मण दोय च्यार गौबरनैं गुलरो भेलो चकौकराय नैं छँटायदीन्हौ॥ जिणसुंमाखियाँराभर णाट और कुत्ताँरा कूकार नैंकागलाँरा कुरलाट और गढसूराँ राठाट ॥ इणतरह गुराँ चठसालरी तयारी करनैं पौलरौ दर वाजौ ढकायनैं माथा ऊ

पर पलौ घाल कर बैठगया॥अठी महाराज कँवार की असवारी बाजाराँ घूमती आवेछै ॥ केई साहू कारांरी पौलाँ तौरणनैं कलसवधावैछै ॥ बाजार झाड बुहारनें औछाडीजि यौछै ॥चनणियाँ वायक॥ चंद्रायणाँ ॥ बडी फजर दिन ऊगता, पुख पांच मरविवार॥ सिद्धजौगमें चालिया, पढवा राज कँवार, पढवा राज कँवार सिरीफल हातहै ॥ परिहाँ पूजारो सामाँन लियौ सब साथ है ॥२२५॥ दोहा॥कँवर भणीं जण चालिया,गुराँ तणीं पौसाल ॥घरघर रलीवधावणाँ, बागासौ वन थाल॥२२६॥ चंद्रायणाँ ॥ कर कंचन, नारेलले भरमोतियन कौथाल ॥कँवर भणींजण हालिया गुराँतणीपौसाल गुराँ तणीं पौसालक चाल्या चूँपसूँ ॥ परिहाँ, नाहिंभण बाकी चाहकरी इयारूपसूँ॥ २२७॥ करै गुराँसूं बीनती, लुललुल लागै पाय ॥ सुदबुद कँवर सुलक्षणाँ, पाढिया ज्युँहीं पढाया पढिय ज्यूँहीं

पढ़ाय, आया इण कारणैं ॥ परिहाँ, सुदबुद राज कँवारक ऊभावारणें ॥ २२८ गुरां वायक ॥ सुण सूधा गुरजी कहै, अठेभणन मतिआव॥गज घोडा रथ पालखी म्हारै नहीं खटाव म्हारे नहीं षटाव हिया बिच सालियो ॥ परिहाँ आगै सौरअपा रपतंगो चालियो ॥ २२९ ॥ चनणियाँ बायक ॥ अंबाड़ी सूं उतर कर पड़ै गुरांके पाय ॥ निजर रकीणों रीत सूं हाजर कीनौं ल्याय॥ हाजरकी नौं ल्याय ॥ सालमें पेठिया परिहाँमाडाँईंगणपण पूज भणीं अण बैठिया ॥ २३० ॥ वार्ता ॥ कँवरजी भण बानैं बैठा परंतू गुराँ साहबरे मनमें बडो आलौच हौरयौ छै ॥ रखेज साव लंगानैं नहीं देख लेवै ॥ चंद्रायणाँ ॥ भणवा बैठा कँवरजी, गुराँ करै आलौच ॥ सब लंगानैं देखसीं ॥ मनाँज मोटौ सौच ॥ मनाज मोटौ सौच गुपहीं राखणीं ॥ परिहाँ इण पड़दारै माँहक बैठे डाकणीं

॥ २३१ ॥ वार्ता ॥ इण तरह कँवरनैं कहकर गुराँ भणावणौ सरूकीयौ सू भणतांनैं कितराक दिन बीता, परंतू, साव लंगासूं नैंन मिलाप भी हुवौ नहीं ॥ येक दिनरा समाजोगमें गुरूजी तौ वडे मंदर पूजा करणनैं गयाछै और साबलंगारी दासी सुजाँण राय गौ खड़ा सूं नीची गणपतीरी पूजा करणनैं आई ॥ तरै कँवर सुजाण रायनें कहै छै ॥ म्हाँकी तरफरी पूजापिण थेई करी ज्यौ इतरे खवासचनाणियौं सुजाण रायनें कहै छै॥खवासवायक ॥ चंद्रायणँ ॥ सखी सुजाणी सांभलौ कहै चनाणियौं बात ॥ थाँरी बाई कारणें कँवरचित्त अकुलात ॥ कँवरचित्त अकुलातक देखण चाव है ॥ देख्यांहीं सुख होय मनाँ इसभाव है ॥ कराँ आपसुं गरजअरज सुंण लिज्जिये ॥ परिहाँ डुकिये कदरस दिखाय कृपा अस किज्जिये॥२३२॥ सुजाण राय वायक ॥ सज्जन सेरी साँकड़ी परख

सजेम वसंत ॥ पाणीं ऊतर जायलौ गलिया राँज्यूं हंस ॥ गलिया राँज्यूं हंस पछै पिस तावसौ ॥ लखै गुरूजी बात, औलभौ खावसौ थेमौटाभौ पाल बिचारौ चीतमें ॥ परिहाँ, हौत प्राँणकी घात पराई प्रीतमें ॥ २३३ ॥ कँवर बायक ॥ कस कत है निक सत नहीं, इन नैंननकी फास ॥ करक कलेजै कस रही, गलगल गलगयो माँस ॥ गलगल गलगयो माँस फाँस नाहिं नीसरे ॥ जिणैं खिलाया नाग, बिछूसूं नाँडरे वाही विखरी बेल, धतूरे नाँमरे ॥ परिहाँ, लग्या ब्रहैका बाण मरणसूं क्यूंडरे ॥ २३४ ॥ दासीसुजाण रायबायक ॥ अरज कराँ यह कँवरजी, सुणौं वात नरराय ॥ लखपत म्हाँरी जातहै, अदपतही रहजाय ॥ अदपतही रहजाय, नीर ढल जात है ॥ परिहाँ, पलक येकसुख पाय, पछै पिस तात है ॥ २३५ ॥ कँवर आपघर कामणीं, रूपरंग सुभ

वेस ॥ अकल सिरोमण गजगमण, परण्याँ पुंगल देस ॥ परण्याँ पुंगल देसक चंगी गौरियाँ ॥ दासी की परदासि जिसी यह छोरियाँ ॥ थछौ राजकँवार जगतरा ईसहै ॥ परिहाँ, इणाँसरीसी नार, तुमारे बीसहै ॥ २३६ ॥ वार्ता ॥ इतनीं कहनैं सुजाण-राय, सावलंगा कनें गई ॥ तरे सब लंगा पूछियो पूजाकर आई ॥ जब सुजाण राय बोली, हाँबाई साब, पूजा तौकर आई ॥ पणबाईजी साब, घुंडी खोलौ, जराँ सावलं गासिर धूँणनें चुटकी बजाई॥ तरेसुजाँण राय बोली, माहाराज कँवार भणें; जिण गोखड़ा आगे वादीगर, सरप और नौलकी लडाई रौ तमासौ कररयौछे ॥ सूदेखवा लायक छे ॥ जब सावलंगा, झरोखे आई ॥ तरे खवास चालणियौं, कँवरनें कहेछे के माहाराज कँवार, ऊपरानें देखीजे ॥ जद कँवरजी ऊपर देखियौ, आगे सावलंगा, झरोखे ऊभीछे ॥ कँवरजीसूं चौ

निजरचाँ हुई ॥ खवास बायक ॥ दोहा ॥ सुजा-
णीं सुणदासियाँ, ये मन रंजन गंज ॥ आज कठा-
सूं देखियौ, मनकौ माँडण कंज, ॥ २३७ ॥ बाद-
ल भलकी बीजली, काजल रलकी रेख ॥ गौरी
मुलकी गौखड़े दाँताँ चमकी मेख ॥ २३८ ॥ चौ-
झडचा ॥ ऊंचा महल अवास झरोखा जा-
लियाँ ॥ पढता राजकँवारक पड़दा ताँणि-
याँ ॥ गलमोतियनकी माल सुगंधी बाडियाँ
परिहाँ करै सुजाणीं बातकदे देतालियाँ ॥ २३९
॥ वार्ता ॥ इतराकरा समाँ जोगमैं गुरूजी मौटा
मंदरसूं पाछाआया नैंहाजरी लेवा लागा जठै कँ-
वरजीरी पाटी बाचनें मौटा आखराँरी तुरत नवी
माँडी देखनें परी पटकी ॥ और सावलंगा कनैं
जायनैं हाजरी लेवालागा तरै सावलंगा कहैछै ॥
सावलंगावायक ॥ चंद्रायणाँ ॥ बालूं जालूं पढणौं
हीयामैंन सम्हाय ॥ कोंचौघूं इणबातके लाज मरे

मरजाय ॥ लाज मरे मरजाय क ताला जरगया ॥ पग थ्यां ऊपर चूंन आप पिण धरगया पगमंड वारै काजक चौकस कर गया ॥ परिहाँ ज्यां नैं सात सिलाँम महलमैं फिर गया ॥ २४० ॥ वार्ता ॥ इतरी वात सब लंगारी सुणनैं गुरुजी पाछा कँवर कनें आयनै कांई कहेछे केहे कँवर तूं कदेई झरोखा काँनीं जाज्यै मती ॥ आज पछे कदेई उठीनें पगही धर वाकी मनमैं ल्याजे मती इण झरोखारेमाँहें यक जिंदरहेछै ॥ आप पधारौ लातौ डरसूं ताप चढ जावैलौ ॥ तरे कँवर पूछि-यौ ॥ इण झरौखामै कुंण पढेछे ॥ जराँ गुरुजीक हेछे ॥ दोहा ॥ आंधी वहरी कोढणीं, अवगुण भरया अनेक ॥ थे राजारा डीकरा, साँम्हीं निज रन देख ॥२४१ ॥ देख्यांसूं गटकौ करै ॥ डाक ण बुरी बलाय ॥ कह गुरजी सुदबुद सुणौं मह-लाँ दिस मतजाय ॥ २४२ ॥ कँवरवायक ॥ चं-

द्रायणाँ ॥ जे रूपाली आदमी गुण बिनकामन कौय ॥ मुख मलके राम्यानमै काची करदन हौ य ॥ काची करदन होय क पडदा तांणियाँ॥ परि हाँ, साचकहौ गुरु कुणहे चतुर सुजाणियाँ २४३ सुंणगुरजी सुदबुद कहै है भणवारी चाय ॥ सोपा टी मदमणभणैं उसडी मौय भणाय ॥ उसडीमौ यभणाय कृपा अब कीजिये ॥ परिहाँ येक जुवां सिलजाय इसी लिख दीजिये ॥ २४४ ॥ गुराँवाय क ॥ सुणसूदा गुरजी कहै इणसाँम्हौं मतिजौय ॥ काणीं खौडी कौढणीं डाकण बैठी दौय ॥ डाक- णवैठी दौय बुरासाचाटकी ॥ परिहाँ लंबा लंबा दांतक गंजी टाटकी ॥ २४५ ॥ पिग पंगूलही कराँ ॥ बहरी बुरी बलाय ॥ नैंन झरै लालाँ पडै किंणरै आवै दाय ॥ किंणरै आवै दायक बैठना करी परिहाँ कूवी कुलछ कुरूपकफाटा बाकरी ॥ २४६ ॥ कँवर वायक ॥ छटादेख मन छाकियौ

ऐसमाजिसी उमीर ॥ चीताळंकी चित चढी सिरचि त रंगौचीर सिरचितरंगो चीर कसूं मल औढणीं परिहाँ सबज कनाताँ मांह किसीविध कौढणीं ॥ २४७ ॥ गुराँ वायक ॥ काणीं खौडी कौढणीं का ली जिसडीकाग॥चख चूंदी बौली श्रवण नकसे डौ मुखझाग नकसेडौ मुखझाग कपड दीयूं कराँ ॥ परिहां सग पण करै न कौय डराँ लाजाँ मराँ ॥ २४८॥ कँवर वायक॥जिनररी झ्यालौयणाँ बाताँरी झन कौय ॥ मुख मलकेराख्यांनसैं काची करदन हौय काचीकरदनहौय नरदहै सारकी॥परिहाँ कधू करदेवौ भताथ वस्तहै पारकी ॥ २४९॥ गुराँ वा यक ॥ अण दीठी ही ठीकहै दीठाँसूं भ्रमजाय ॥ जैसें लडू बूरके खामत खापिसताय ॥ खामतखा पिसताय स्वाद नहिं आवसी॥ परिहाँ दीठाँ आसी सूगपछै पिस्तावसी ॥ २५० ॥ करै विणजणीं बा णियाँ पलियाँवे घैतेल॥थांकैवांके आँतरौ आकाँ

नागरबेल ॥ आकाँ नागर बेल क मोटौ आँतरौ॥ परिहाँ हंस करै किणवायक कागाँनातरौ॥ २८१ ॥ कँवरवायक ॥ कह सुदबुद गुरजी सुणौं अरथ भतावो सोय ॥ कंचन केरे पींजरै काग किसी विध होय ॥ कागकिसी विध होय कबोलै कोय ली ॥ परिहाँ ऊंची किवी कनात निजरभर जोय ली ॥ २८२ ॥ वार्ता ॥ इणतरह कंवर सुदबुदरेऔर गुराँसाहरे आपसमैं बात बतलावण हुई फेराकित राकादिन पछै येक दिन कँवरजी बोल्या, के आ ज काल गरमीरा दिन छै ॥ नें दुपरका तावडौ घणौं तपेछै सूसाबलंगानैं नीचेका डहलान मैं पढ णनैं बेठाण देवौ तरे गुरूजी, साबलंगाने येक नीचे काड हलान मै, और बी सहूकाराँकी छोकरियां पढतीछी, जठै पड़दा कनात खिचायनें, साबलं-गानें पिण पढणनैं, विठाणदी, और उणही डहला नमें, येक तरफ कँवरजी पढैछै ॥ पिण आडापड़

दांसूं निजरांमे लौवी हौणो बंद हौ गयो, तरे सुद बुद आपरासजींदान चानणियां खवासनें कहे छै ॥ कँवर वायक ॥ दोहा ॥ नीचीलयाया देखबा निजरचां सलौनाँय ॥ चानणियां सुदबुद कहै नैंणां देह मिलाय ॥ २८३ ॥ वार्ता ॥ तरे चनणिये खवास, रछौडी मॉयसूं कतरणीं काढनें, कनात में चलाई, सूबारी करदीनीं ॥ अवे बारी मांहसूं, चसमबाजी होवा लागी ॥ तरे सबलंगा पाटा ऊपर दोहौ मांडनें सुजाण रायरे हात, पाटी कँवरनें वचावणनें भेजी, ॥ दोहा ॥ हरी जम्हेरी रसभरी, भेजूं किणरे हात ॥ नदी विछौवा पड़र-या जीव तुमारे साथ ॥ २८४ ॥ वार्ता ॥ तरे कँवरजी पाछौ दोहो लिखनें भेज्यौ ॥ कँवर वायक ॥ दोहा ॥ मनतौ जाणें उडमिलूं, परविन उड़चौन जाय ॥ कहाकहूं करतारनें, परनहिं दई लगाय ॥ २८५ ॥ परें विधातानां दई, करदीनें

किंण काज ॥ ये दोय और लगावतो झपटक पोती बाज ॥ २८६ ॥ बार्ता ॥ तरे साव लंगा कँवरको दोहो बाचने, पाछौ दोहौ लिखियौ ॥ साव लंगा बायक ॥ साझन चतुर सुजाण हो, गुणवंता गंभीर ॥ इसड़ा कायर किम हुवा, तन कज धारो धीर ॥ २८७ ॥ बार्ता ॥ तरे कँवर दोहौ बाचनें पाछौ उणही पाटी ऊपर लिखनें सुजाण रायरे हात पाछौ उत्तर लिखियौ ॥ कँवर बायक ॥ दोहा ॥ पान खात मुसकात है बोली अमृत बैंण ॥ सुपनां में दुख देत है, सुंदर तेरे नैंण ॥ २८८ ॥ बार्ता तरे सब लंगा पाछौ दोहौ लिखियौ ॥ सब लंगा बायक ॥ दोहा ॥ ॥ जलमें बसे कमोदनीं, चंदबसे आकास ॥ जोजा हूके मन बसे, सौ वाहूके पास ॥ २८९ ॥ बार्ता ॥ यौ दोहो लिखनें सब लंगा कँवरकनैं पाटी बचा वानें भेजी, सू कँवर, पाटी बाचनैं ऊभारया, इत-

शकरा समाँजो गमैं गुराणीं ऊपरकी बारीमैं सूं झाँकी ॥ तो दोहो लिख्यो देखनैं बाचलीनों, और गुरूजी सूँ हात जौड़ अरज गुदराई ॥ माहाराज, कँवारके और इण साब लंगाके तो आपसमें मोहोबत, और चसम बाजी छै ॥ इसी नहीं हुवेके, नगर सेठ आपानें औलभौ देवे, या बात सुणताँहीं गुराँ साहवतो सोचका समुद्रमें डूबगया, और मन रूपी, पवन सैं विचार रूपी लहरां प्रबल हो बालागी॥ इण तरह गुरां साहब विचार करकेसुद बुदनें कहे छै॥गुरांवायक चंद्रायणाँ सुण सूदा गुर जीकहै, इधर उधर मत झाक रहै बरजाँ मानें नहीं जराकसंको राख॥जराक संको राख सरमकी बात है॥ परिहाँ तू राजाको पूत ये बाणियाँ जात है, ॥ २६० ॥ सुदबुद वायक ॥ सुण गुरजी सुदबुद कहै,नहि साराकी बात पापीनेंण पिटोकड़ा झांक यार दिन रातरूक राख्यानाँ रहै ॥ परिहाँ,ढाकिये

कदरस दिखाय कँवरजी यूँक है, ॥ २६१ ॥ गुराँ बायक ॥ सुण सूदा गुरजी कहे ॥ साची दाखूं तौय ॥ औरांके येक कामड़ी थारै मारूं दौय ॥ थारै मारूं दौय, पछे पिसतावसी ॥ परिहाँ, तूं चावे सौ चीज हात नाहिं आवसी ॥ २६२ ॥ कँवर बायक ॥ गुरजी बावै कामड़ी, करकर मन मेंरीस ॥ चेलौ इसड़ी बावसी, घड़ सूं न्यारौ सीस ॥ धड़ सूंन्यारौ सीस, गुरांकौ रालदूं ॥ परिहाँ, आला काँटाँ मांह गुरांथानेंजा लदूं ॥ २६३ ॥ गुरां बायक ॥ नाँव लियौ तरवारकौ, उठी बदन में लाय ॥ म्हारै नहीं भणावणें, अण भाणियौं उठ जाय ॥ अण भणियौं उठजाय, क धोखौल्यावसाँ ॥ परिहाँ तूं राजाकोपूत औलभौ खावसाँ ॥२६४॥कँवर बायक ॥ क्यूं खावौछौ औलभा,कुण मारैछे तौय॥सब लंगारा हातरी,पाटी लिख दो मोय ॥ पाटी लिख दो मोय कझीणाँ आखराँ परिहाँ बैठा माँणौंमौज

पटादूँ लाखरा ॥ २६५ ॥ वार्ता ॥ तरे गुराँमन में विचार कियोके अबकांई उपाव करणौं चहीजै कँवरजीतो हट पकड लीयो सूअबै आपांनैं तौओ लभौनहीं आवै और इणाँरो कारज हुयजावै ॥इण तरह विचारकीनों के बागाँकी रखवालीकेमिसइण नें अठासूं भेजदेवणाँ चहीजै॥ इसी विचारकर गुराँ कँवरनैं कैहैछै ॥ चंद्रायणाँ ॥ बागाँ बारी आपरी सालरूखा लन जाय ॥ लूंबा पाकी दाखकी बागलचुण चुण खाय ॥ बागल चुण चुण खाय दिवसहै सातरी ॥ परिहाँ करणी कँवर सुजाण रूखाली रातरी ॥ २६६ ॥ कँवर वायक॥ बागाँ साल रूखालसाँ करदारूँ मत वार॥साथ सुजाणीं आवसीसवलंगा भतवार॥सवलंगा भतवारभातले आवसी॥परिहाँदिलकी दौसत जायनारिभरल्यवसी ॥ २६७ ॥ वार्ता ॥ गुराँ विचारकर कँवरजीनें कहैछै के अब आजसूंहीं आपरी वारीछै ॥सौदिन

सात रात दिन उठेहीरही ज्यो ॥ गुराँ वायक ॥ चंद्रायणाँ ॥ दिहाँरुखाले छोकरचाँ कँवर रुखा लौ रात॥वही बाग वह बावड्याँ वह आँबा दिन सात ॥ वह आँबा दिन सात खिरै तो चाखज्यो ॥ पारिहाँ काची केरीहोय दिवस दसराख ज्यो ॥ २६८ ॥ वार्ता ॥ गुराँकँवरजी नैंसीख दीनी बाग मेलिया अंठी सावलंगानें भात लेय तयार करेछै ॥ गुराँबायक ॥ दोहा ॥ बाग नवलखौ बणरयौ पाकी सकल रसाल ॥ तुरत पधारौ पदमणीं लेकंचनकौ थाल ॥२६९ ॥ चंद्रायणाँ ॥ दिनकी बारी थाँहरी कँवररुखा लैरात॥नीर सुजाणीं ल्यावसीथे लेजावौ भात ॥ थेलेजावौ भात रात दिन जावणौं॥ पारिहाँ झटपट जायजिमायसवेलाआँवणौं॥२७०॥ ॥ वार्ता ॥ दिनाँ दिनाँ तोथे रुखाल ज्यो, नेंरात का कँवरजी रहसी, थेतौ भातजिमातीथकी झटपट वेगीही आव ज्यो ॥ चंपे जायनें, वेठ ज्यौ,

सूउठे कँवरजी पिण आयनें भात जीमजावसी जरां सावलंगा रीस खायनैं गुरांनें कांई कहै छै ॥ ॥ सावलंगा वायक ॥ चौ झड़िया छंद ॥ बल जावौ यह बाग बलौ सब वाड़ियाँ, फिरौ हिरण अरु रौझ चरौ सब छालियाँ ॥ झिर मिर बरसैमें ह बजै नाहिं तालियाँ ॥ परिहाँ, नाहिं जाऊं गुराँ आज बाग रखवा लियाँ ॥ २७१ ॥ गुरांवायक ॥ वारी थारी आज और कुण जावसी ॥ जलकी झारीजाय सुजाणीं ल्यावसी, ॥ छीलर नदी-निवाँण नीर नहिं पूर है ॥ परिहाँ नेड़ी ठौड़न जीक, किती येक दूर है ॥ २७२ ॥ सवलंगा वा-यक ॥ चंद्रायणाँ ॥ उठे न कौई मानवी, बौ जंगल वेवान ॥ कँवरपचीसा झिल रयौ, हूं बालक नादाँनं ॥ हूं वालक नादाँन, अकेली म्हैंडरू ॥ परिहाँ क्यूं कर पुरसूं भात गुराँ लाजाँ मरूं ॥ २७३ ॥ गुराँवायक ॥ आगेवो छै, येकलौ,

थेछोजणियाँ दोय ॥ चंपैजायर बैठ्ज्यो, बोलन सकैकोय ॥ बोलन सकै कोय, भात जीमावतौं, परिहाः लगे कितीक वारक पाछी आवतौं ॥ ॥ २७४ ॥ सावलंगा वायक ॥ गुरां न जाऊं ॥ वाग मैं, परतनदेसूं पाँव ॥ जौथे मौनें मोकलौ. हुसी मुलकमें नांव ॥ हुसी मुलक में नांव, ओ लभो खावसो ॥ परिहाँ, सुणसी सारौ देस पछै पिसतावसो ॥ २७८ ॥ गुराँ वायक॥ चेलीजावो, वागमें हुकम हमारो माँन॥साथ सुजाणीं चालसी आगे कँवर सुजाँण ॥ आगे कँवर सुजाण, हात नहिं चालसी ॥ परिहां राजरीत मरजाद धरमपर चालसी ॥ २७६ ॥ सावलंगा वायक ॥ आपहु-कम म्हाँपर कियौ, जावाँ वागके माँय ॥ मायवाप भाई सुणें, देवे ओलभो आय॥देवे ओलभो आय, गुराँजी आपनें॥परिहाँ.मतभेजो महाराज,पडौ क्यूँ पापमें॥२७७॥गुरांवायक॥सुदबुद कँवरसुलक्षणों,

कदेन लेसी नाँव॥ माली सींचै बावड़ी नीरभरे सब गाँव, नीर भरे सब गाम क चंपेबेठ ज्यो, परिहाँ, झाड़ाँ रौउल झाड़ उठे मत पेठज्यो ॥ २७८ ॥ ॥ सब लंगावा०॥आप कहो तो गुरूजी, ल्यूँ सारो सामान॥ करूँ रसोई बागमें, जीमें कँवर सुजाण ॥ जीमें कँवर सुजाण, तयारी म्हे करूँ॥ परिहाँ सखरो थाल सँजो यक प्याला हूँभरूँ॥ २७९ ॥ गुरांवायक ॥ चौझडिया ॥ लेसगलो सामान तुर तथे जावज्यो,करोर सोई त्यार जुगत जीमावज्यो ॥ वो छे कँवर सुजाण सोचमति ल्यावज्यो ॥ परिहाँ रहज्यो जतमत माँहक वेगी आवज्यो ॥ २८० ॥ सावलंगा वायक॥चंद्रायणाँ॥ जतमत राखे रामजी, परभू राखे लाज ॥ थाँरापुन्य प्रतापसूँ,इज्जत उबरे आज,इज्जतउबरेआज कँवर सुखनूरहे॥परिहाँ,मगर पची साँमाँहक जोवन पूर है॥२८१॥ गुराँ वायक॥ नूरपूर है कँवरजी, थे पिण रंभा रूप॥ याँसूँ

मिलणौं कठिण है, कहाँ माहाजन कहाँ भूप॥ कहाँ माहाजन कहाँ भूप,क औ लख कामरी, परिहां, मोहोवत मन मिलजाय सहज बिन दामरी ॥२८२॥ साव लंगा बायक ॥ हुकम आपरौं सिर धरूँ, कँवर करूँ खुसियाल ॥ विध विधरा भोजन बणैं, प्याला पूरूं थाल॥प्याला पूरूं थालक, पंखौ ढोल सूं परिहाँ करै सुजाणी बात बडीसी छौल सूं ॥ २८३ गुरां बायक॥राज कँवरराजी रहै, सब लंगा अवजाण ॥ आप अकल रो पोरसौ, घणाँ गुणाँरी खान॥ घणाँ गुणाँरी खान, बुद्ध फैलावज्यौ ॥ परिहां करौ जुगत सूँ बात, कसूँबौ पावज्यौ ॥२८४॥ साब लंगा बायक॥कराँ तयारी थालरी, कंवर विराजै आय॥ कंचनकीझारीधरौं चौकीपर पधराय॥ चौकी परपध राय क माजम ल्यावसाँ, परिहाँ काढ कसूँबौ भाँग कँवरनै पावसाँ ॥ २८५ ॥ गुरां बायक ॥ नसौ कराज्यौ कंवरने, थेरहज्यौ हुँसियार तोडौ

चँपौ मौगरौ, हिल मिल गूंथौहार हिल मिल गूँथौहार ककलियां तोड़ ज्यौ परिहाँ, राजी रहै नरेस नेहमत मोडज्यौ ॥ ॥ २८६ ॥ सवलंगा वायक, दासी सुजाणरायने कहैछे ॥ दासी झटपट चालज्यै, करौ कँवर सूसेंद ॥ तौडा कलियां कुंदरी, गुंथां गजरागेंद॥ गूंथां गजरा गेंदक वागां जावसां ॥परिहाँ, करल्यो सुंदरस हल कालह मरजावसाँ ॥ २८७॥ रिमझिम वाजै गूघरा, सूँधे भी नों गात ॥ मृघनैंणीं सिर लेचली कँवर जिमावणभात ॥ कँवर जिमावणभात, घरा सूंनीसरी ॥ परिहाँ गुरजी दीन्ही सीख उठासुँइँवी सरी ॥ २८८ ॥ वार्ता ॥ सावलंगा सारी तयारी लेयकर, वागमें गई, तो आगे कँवरनिजर आया नहीं, तरे मालीका बेटाने काँई कहैछे ॥ चन्द्रायणा मालीकेरा डीकरा सींचतहै वणराय ॥ इण वागां में मानवीतैंदीठा हकनाय ॥ तै दीठाहक नाँयक

छिणगा रालता पीरहाँ पागलपेटे पेच साल रख चालता ॥ २८९ ॥ बनमाली वायक ॥ इण दिसवाटां जोवतो पलपल पंथ निहार ॥ म्हैंदी ठौयेक राजवी,पातलियौ सिरदार पातलियौ सिर दारकऊ भौबागमें॥परिहाँ,तडतड तौड़े फूलकटां के पागमें ॥२९० ॥ सावलंगा वायक ॥ किणदि स वागरुखालता, माली मनें भताय ॥ भातलियाँ भारचाँ मरूं, खवर करीज्यै जाय ॥ खवर करी ज्यै जाय सीसपर भारहै॥ परिहाँ कठेबिलुंधाजाय वडा सिरदारहै ॥ २९१ ॥ बनमाली वायक ॥ कडचाँ कटारौ बाँकडो सूवटडी तरवार पांचूँ ससतर पांधिया दीखे राजकँवार ॥ दीखे राजकँवार कगोसालालहै ॥ परिहाँ, कमरबँधी मजबूत कलाल रुमालहै ॥ २९२ ॥ सावलंगा वा यक॥ ॥ हे लासारूं कँवरजी किण दिस ऊभा जा य ॥ भात लियां हाजर खड़ी बौझ उतारौ आय

बोझ उतारो आय ॥ सीस पर भारहै ॥ परिहाँजी मोगरसाँ गरम रसोई त्यारहै ॥ २९३ ॥ हेलो सु ण कर दौड़िया चंपे ऊभा आय ॥ सब लंगा मुख मोडकर सैन दिवी समझाय ॥ सैन दिवी समझा- य सुजाणीं झाकियो ॥ परिहाँ प्रेम भरचो सो बैण ककड़वो भाकियो ॥ २९४ ॥ वार्ता ॥ तरे कँवर जी सुजाण रायने कैहछै केमोड़ा तो आप पधा रियानें किरियावरम्हारे ऊपरे करोछे ॥ म्हे तो बाट जोय जोयनें थाका सूवामोर उडावता भूखाँ मरगया ॥ कँवर वायक चंद्रायणाँ ॥ सूवा मोर उडावताँ लागी भूख अपार ॥ फिर फिर जोई वा- टड़ी आखर बैठा हार ॥ आखर बैठा हार नदीठा आवता ॥ परिहाँ श्रवणाँ सुणीं अवाज अठीनें जा वता ॥ २९८ ॥ सावलंगा वायक ॥ भोजन छती सूँ किया तिणसूं लगी अबार ॥ बहुविध स्याक वणाइया जीमो राजकँवार ॥ जीमो राजकँवार

उडाऊं म्हैं सुवा ॥ परिहां बागाँ कारख वाल दुखी थेक्यूं हुवा ॥ २९६ ॥ तरकारयाँ तीखी बणीं भात भाँत आचार ॥ केर कहूंदा काकड़ी आँवा फाड अपार ॥ आँवा फाड अपार जिमाऊं प्रीतसूं ॥ परिहाँ जाजम जुगत विछाय भली सी रीतिसूं ॥ ॥ २९७ ॥ रतन जड़ित झारी भरी प्याला अंत न पार ॥ मिसरूका पगपाँतिया कंचन धरियौ थार ॥ कंचन धरियौ थार जिमाऊँ हातसूं ॥ परिहाँ हसहस देरूपां तालअचूकी बातसूं ॥ २९८ ॥ सूवा मौर उडावतां लागी भूख अपार ॥ गुराँ नथाँनैं मौकल्या बागाँका रखवार ॥ बागाँ कारख वारक आया चूँपसूँ ॥ परिहाँ लालच राजकँवार क रीझ्या रूपसुं ॥ २९९ ॥ म्है पुरसूं चितचूँपसूँ, जीमौ राजकँवार ॥ करी रसौई जुगतसूँ, तिणथी हुई अँवार ॥ तिणथी हुई अँवार उडाऊँ म्हैं सुवा ॥ परिहाँ बागाँका रुखवाल दुख्यारा क्यूं हुवा ॥

॥ ३०० ॥ कँवर वायक ॥ दुख सुख हरिके हात है, जीमत चाली बात ॥ कलम विछेवौ करम में, लिख्यौ विधाता नाथ ॥ लिख्यौ विधाता नाथ, इस्यौ दिन होवसी ॥ परिहाँ, किरपाकरसी राम, विरद दिस जोवसी ॥ ३०१ ॥ सावलंगा वायक ॥ मिल विछड़न विछड़न मिलन, सकल दईके हात ॥ साझन सुपनों आवियौ' पुरब जनमकी बात ॥ पुरब जनमकी बात, पडीरस कूपमें ॥ परिहाँ ॥ नृपतले गयो मोय, लुभायौ रूपमें ॥ ३०२ ॥ साझन सुपनों आवियो, हूंकूदी रसकूप ॥ धणमा नव तन पावियौ, थरया वंदर रूप, थरया वंदर रूप, खिलाड़ी लेगयौ ॥ परिहाँ, घणाँ दिनासुं फेर आण मे लौययौ ॥ ३०३ ॥ नृप कोप्यौ कर खड़गले, झुरचा झरोखाँ जाय ॥ हाड फाँसली वीखरचा, आप कँवर हुवा आय ॥ आप कँवर हुवा आय, अनसनाँ म्हैं भई ॥ परिहाँ वरसदवाद

समून, भूखप्यासी रही, ॥ ३०४ ॥ कासी करवत म्हें लियौ, सखी सुजाणीं साथ ॥ दइव मिलाया फिर मिल्या, कहुँ सुपनाँरी बात ॥ कहुँ सुपनाँरी बात यादकर लीजिये॥परिहाँ, पुरबजनमरी प्रीत पीठ नहिं दीजिये ॥ ३०५ ॥ बार्ता ॥ सबलंगा कँवरजीनें पूरब भवरी बातयाद अणावे छै ॥ न कँवरजी क्यूं हीकतौ भूलेछे नें क्यूंहीक याद आवेछै ॥ इतराक मैंतौ जीसचूका ॥ जरां सुजाण राय पान सुपारी केसर किसतूरी, लवंग इलायची, कथा चूना लगायनें बीड़ादीया ॥ इतराकमें सब लंगा सुजाण रायनें कयौ, कँवरजीके वासते सहज तयार कर भोजन कीयोछै ॥ अबे थोडी सीवार सुखफर मावे जरे सुजाण राय केलांरा न रम नरम पत्ताफाड चीर कर पूरब पत्र सहित प्रजंक रची और कँवरजीसूं बीनती करी तरे कँ-वरजी सबलंगाने कयौके आप पिण पधारो ॥ जरे

सवलंगा उत्तर दीन्हो ॥ सवलंगा वायक ॥ चंद्रा-
यणाँ ॥ सात जनमरी साथ छूं प्रभूउतारे पार ॥
कँवराँ हटकीज्यो सती हूँ छूं अकन कँवार ॥ हूँ
छूं अकन्न कँवार माफ अब कीजिये ॥ परिहाँ थौं
डादिनके साँथ परणवा दीजिये ॥ ३०६॥ कँवर
जी वायक ॥ गंग जमन तुलसी बिन्चे चंदसूरकी
साख शिवब्रह्मा बिस्नू सपत म्हानूं सौगन लाख॥
म्हानूँ सौगन लाख बिषै नाहिं सेवसां ॥ परिहाँ
पीछे करसाँ संग परणवा देवसाँ ॥ ३०७ ॥ सवलं
गावायक ॥ काढ खडग बिचमें धरची कँवराँकी
यो कौल॥पौढचायेकण साथरे हासी खुसी किलौ
ल ॥ हासी खुसी किलौल प्रेम रस पाविया ॥ प
रिहाँ सखी सुजाणीं गीत रिझालू गाविया ॥
३०८ ॥ वार्ता ॥ अठी तो सुदबुद कँवर सवलंगा
येकण साथरे पौढियाछै ॥ नेंउठीनें गुराँ साहरा
हुकमसूँ देखवानें छोकरा दौड़ियाछै ॥ चंद्रायणाँ

गुर कह चेलकडा सुणौं बागाँ पहुंचौ जाय ॥
कि सूं कमावे कँवरजी खबराँ दीज्यौ आय ॥ ख-
बराँ दीज्यौ आय ठेटथे जावज्यौ ॥ परिहाँकीज्यौ
मती अवार दौडकर आवज्यौ ॥ ३०९ ॥ चेलां
वायक ॥ गुरजी थांरा बागमें चंपो येक सथल्ल ॥
दोनूँ इसडा आवडचा जाण अखाडे मल्ल ॥ जाण
अखाडे मल्लक सूती बाघणीं ॥ परिहां चंनण केरे
रूँख लिपटी नागणीं ॥ ३१० ॥ साल रुखाला
वे गया सूवा साल चुगंत ॥ केल सुचंगे सा-
थरे सूतादोय निचिंत ॥ सूतादोय निचिंतक
ऊंचा मालिया ॥ परिहाँ, केल झबरके वार
झबूकै लालिया ॥ ३११ ॥ गुराँ वायक ॥ अण
देखी झूटीकही थे विचमेंउँ आयादौड ॥ छौराजा
वोसम जणां, अबके जोडाजोड॥अबके जोडाजोड़
देखकर आवज्यौ ॥ परिहाँ, बोराजाकौ कँवर, संक
मत खावज्यौ ॥ ३१२ ॥ छौकरां वायक ॥ गुरां

जदीठा दोयजणाँ, तल ऊपर भर सथ्थ ॥ जंगाँसे ती जंगामिल, हतांसेतीहत्त ॥ हत्ताँसेती हत्त अखाड़े जूटिया ॥ गंधी तणीं दुकान जवा नाँ लूटिया ॥ ३१३ ॥ गुराँवायक ॥ गुराँकहेरे छौकराँ, इसडी हुई नहोय ॥ सुदबुद कँवर सुलक्ष णौं हातन घाले कौय ॥ हातन घाले कौय काय दौराखसी ॥ परिहाँ रीत भांत मरजाद वचन मुख- भाखसी ॥ ३१४ ॥ चुपक्यारहज्यौ छौकराँ, मती करज्यौवात ॥ वोराजाकौ डीकरौ मारे तमाचा लात ॥ मारै तमाचा लात करौके भागसी॥ परिहाँ राजालेसी डंडक झगडौ लागसी ॥ ३१५ ॥वार्ता फेर गुराँ विचारकर, आपराषाटवी चेला हेम विजे जीने हुकुम दीयौ केथे जायनें देखकरआवौ और सारी हगीगत बागांरी ल्यावौ ॥ गुराँ वायक चंद्रायणाँ ॥ चेलानें आग्या दिवी, हेमविजे तूंजाव किसूंकरैछे कँवरजी, निजरचाँ देखरआव

(११६) सुदबुद सब लंगाकीवारता ।

निज रचाँ देखर आव संकमत ल्यावजे ॥ परिहाँ सबलंगाकी रीत देखकर आवज्ये ॥ ३१६ ॥ वार्ता ॥ जरे पाटवी चेलाहेमविजे जी, अपरागुराँरो हुकुम पायने बागमें पधारिया,नें आँबराझाडऊपर चढने आछी तरह सूंचौकसोकरी तरे सुदबुद सबलंगांदोनूं सूतातो येकण साथरे, पिणबीचमे नागी तरवार साखीधरीछै ॥ इतरी हगीगतदेखनें पाछाआय. गुराँ सावसूं अरज गुदरावैछै ॥ चेलाजी वायक ॥ ॥ चंद्रायणाँ ॥ सूता येकण साथरे, विचखांडौ बिनम्यान ॥ करे वात मरजादसूँ, सुदबुद कँवर सुग्यान ॥ सुदबुद कँवर सुग्यान, कजारीनाँ करै ॥ परिहाँ, राखै पूरवरीत, नीतसूँ पगधरै ॥ ३१७ ॥ अली कलीकी बासले, पंखनचाले दंत ॥ नैंन कटौरां मधुपिये, कँवर रूप निरखंत ॥ कँवर रूप निरखंत, द्रगनसर संधिया ॥ परिहा, नेह जाल

उरझाय प्रेमरस फंदिया ॥ ३१८ ॥ झमक मिले द्रगदूरसूं, रुकेन झीणैं चीर ॥ हरखे फौज हरौ रुकी, सियलचढै इतभीर ॥ सियल चढै इतभी रक बाँधिया नेमरा ॥ परिहाँ, कँवर रसीला नैनके प्यासा प्रेमरा ॥ ३१९ ॥ वार्ता ॥ अठीतो कँवर के और सबलंगाके आपसमें, कुसीकिलौलाँ हुय रहीछै नें उठी गुरांसाने चेलाजी खबर गुदरावे छै ॥ इतराकरा समा जोगमें कँवरजीनें पाणी री तिरखालागी, तरे सबलंगाने कहै छै ॥ छंद चौझड़िया ॥ सुंदर पुरसण हारक, भोजन म्है किया ॥ पीवलुभाना रूप, नीरभी नाँपिया ॥ लागी प्यास अपारक खाली झारियाँ, नैंनकटोरा प्रेम पिलादो प्यारियाँ ॥ ३२० ॥ सबलंगा वाय-क ॥ चंद्रायणाँ ॥ किणादिस कूवा बावड़ी, किण दिस नदी निवाँण, हूं नहिं जाणूँ कँवरजी, राजग-लारी आण ॥ राजगलारी आण, साथथे आवज्यौ

॥ परिहाँ. ल्याऊँ ठंढोनीर पंथ भत लाव ज्यौं ॥ ३२१ ॥ कँवर बायक ॥ धुर उतरादी बावड़ी, गंगानिर मलनीर ॥ गुराँ खिणाई बागमें, आई अमृतसीर ॥ आई अमृतसीर, नीरभरल्या वज्यौं ॥ परिहाँ, म्हेछां चंपेडार कवेगा आवज्यौं।३२२। सबलंगा बायक ॥ कँवराँ डरपूं अेकली, ऊंडी बाव अथग्ग ॥ छाती धडके मनडरे, पिसल पडे लोपग्ग॥पिसलपडे लोपग्ग कऊंडौ नीरहै॥परिहाँ, सालूजावे भीज क चंगौचीरहै॥३२३॥सुद बुद बायक॥साथे चालाँ सुंदरी देसाँ पंथ बताय॥नैनकटौराप्रेम रस, प्यारी म्हाँनें पाय ॥ प्यारी म्हाँनें पाय सुगंधी देहरी ॥ परिहाँ, उँमगी फौज अनंग, घटा वन मेहरी ॥ ३२४ ॥ सब लंगा बायक ॥ चंपो मरवो मोगरौ, और सुगंधी जाय ॥ हात जौड़ अरजी करूँ, पहली लागूँ पाय, पहली लागूँ पाय, कँवर मन यात है ॥ परिहाँ, आप बडा भौपाल,

वचनकी बात है ॥ ३२५ ॥ सुदबुद बायक ॥ छंद चौझड़िया ॥अंब फल्या बहुभाँत, सुरंगी डारियाँ॥ नींबू पकी अनार, खुली गुल क्यारियाँ ॥ बाड़ी वन फल होय सुतौड़ चखाइये॥ शख्याँकाँइँ गुण हौय अंतगल जाइये ॥ ३२६ ॥ दासी सुजाण राय बायक ॥ चंद्रायणाँ ॥ सब लंग्या सिर बेवड़ौ,औढ पनवलो चीर, ॥ झारी लीन्हीं हातमें, भरणनी सरी नीर ॥ भरण नीसरी नीर, अकेली क्यूँ गई ॥ छेल मरौड़ी बाँह हसकर यूंरही ॥ बौले दादुर मौरक गूंजे बावड़ी, परिहाँ छेल वांहग्रो छौड कँवारी डावड़ी ॥ ३२७॥ सुदबुद बायक ॥ हसती चढणों छौडद्यूँ छोड़ूँ राजरी चाय ॥ घरनारी अन जलतजूँ, इणबिनरयो न जाय ॥ इणबिनरयो न जाय प्रीतके कारणें ॥ परिहाँ, सूरतपर कुरबान, सीस घड़वारणें ॥ ३२८ ॥ दोहा ॥ दासी सुणइण विध दुहो, हुमतर रही दुराय ॥ सब लंगा सौधत

सखी, छिपगइ निजर चुराय ॥ ३२९ ॥ कँवर वायक॥छंद चौझाड़िया॥पातलड़ी पणिहारक जौ वन जौरहै ॥ हंसाँ चलण सुवासक चितरचा मौर है ॥ नाक सुवाकी चंच भँवाराँ वंक है मदमातौ महमंतक चीता लंक है ॥ ३३० ॥ सब लंगा वायक॥इण सरवरकी तीर अंब दोयरावला, काची कली मत तौड़ कँवरकाँईं बावला ॥ पाकण दो दिन च्यार झुकण द्यौडारियाँ ॥ हिवड़े हात न वाल कँवर धूंगारियाँ ॥ ३३१ ॥ सुदबुद वायक ॥ चंद्रायणाँ ॥ हिवड़े हात जवालियाँ, थानें आवे रीस ॥ काची कलियाँ तौड स्पाँ गालीद्यौ दस बीस ॥ गालीद्यौ दसवीस क हिवडे राखस्याँ ॥ परिहाँ सीस कराँ कुरवान क येफल चाखस्याँ ॥ ३३२ ॥ सबलंगा वायक ॥ साथण तौ वैरणहुई कठे छिपाऊं जीव आप निराली होगई सूँपपराये पीव॥सूँप पराये पीव क सूरज ऊगताँ॥पारि सूहाँवे

पकडीदाखक माली कूकताँ॥२३३॥चोझडियाछंद
अकन कँवारी बाल क हिवडो हातहै ॥ आप ब-
डा भौपाल नीतकी बातहै ॥ लौटे गालौ लूँणदई
के हातहै ॥ थाके म्हांके बीचक पारस नाथहै ॥
२३४ ॥ सुदबुद बायक ॥ इण सरवर की तीरक
चंपा वावडी ॥ नीर भरै पणिहार अनोखी डावडी
गलटेका वलहार अँगूटे आरसीं ॥ बिन माणीं उ-
ठ जायक धोखौ मारसी ॥ २३५ ॥ सबलंगा बा-
यक ॥ चंद्रायणाँ ॥ कँवराँनेकी राख ज्यौ लौटे
गाल्यौलूँण ॥ म्है अबलाथे नरपती बरजण वाला
कूँण ॥ बरजण वाला कूँण बचनकी बातहै ॥ प-
रिहाँ अकन कँवारी वाल॥सरमतुज हातहै॥२३६॥
परण्याँ पहली कँवरजी नैणाँरखज्यौ नेह ॥ मुजबा-
ण्याँकी आखडी तुजकूं अरपी देहतु जकूं अरपी देह
दाग नहिं लागसी ॥ परिहाँ राजीहोसी राम अंदे
सौ भागसी ॥ २३७ ॥ सुदबुद बायक ॥ छंद

चौझाडिया ॥ अलबेलीसी नारक फिरै उछाछली पाकी दाडम दाख ढकी क्यूं काँचली नींबूके उन मानक आवै हातमैं परिहाँ ॥ गज गैवरकी चाल क मावै बाथमै ॥ ३३८ ॥ दासी बायक ॥ इण सरवरकी पाल अमोलक बावडी ॥ नीर भरै पणिहारक नाजुक डावडी ॥ गल टेकावल हार पगां विच पावटौ ॥ परिहाँ देख पराई नार ॥ छेल क्यूँ आवटौ ॥ ३३९ ॥ सुदबुद बायक ॥ सुंदर जौवन झिलरया माणक मौती रंग ॥ ज्याँ नित पूजी गौरज्या ज्याँसूं भिडसी॥अंग ज्याँसूं भिडसी अंगक मौजाँमाणसी ॥ परिहाँ मास दिवस पख पहर भली पुलमानसी ॥ ३४० ॥ वार्ता ॥ कँवर सुदबुदके और सबलंगाके आपसमें हास्यविनौ दहौताँ हौताँ सांझपडी ॥ ता समयमें येक आँबा केझाड ऊपर चकवौनें चकवी आय बैठा ॥ इतरा कमें सूर्य अस्तहौताँहीं चकवा चकवीरे आपसमें

बिछौवौ पडगयौ ॥ तरै चकवी बौली हे चकवा दिन तौ कटणौं सहजहै परंतु रात कटणीं मुसकल हुवै सू कोई अपूरब बात कहौ ॥ दोहा ॥
इण विधचकवौ चक्कवी बागाँ उतरचा आय ॥
रैंण बिछौई चक्कवी कह कोइ बात सुणाय ॥ ३४१ ॥ वार्ता ॥ अब चकवो बोल्यौ घर बीती बात रोकाँई कहणौं यातौ ठेट सूंई यादहै पण पर बीती बात कहौ ॥ चकवा बायक ॥ सोरठा
पर बीतौडी बात सुण चकवी चकवौ कहै कहूं पुरातम रव्यात यह अपछर यह सेठ सुत॥३४२॥
चंद्रायणाँ॥इंद्रसरापी बनचरी धर कुम्हारघररूप॥
फिर बंदर ओर बंदरी बिछड पडी रसकूप ॥ बिछड़ पड़ी रसकूप नृपत येक लेगयौ॥रह्यौ अकेलौ पीव बिछे वौह्वैगयौ॥बादीगर केहात बँधायौ सहलमैं॥परिहाँजदको बिछडौ कंथ मिल्यौ फिर महलमैं ३४३ मौलखरीघौ बाँदरौराख्यौनृपसें गौप॥खबर

पडीपायौमरमराजा कीयौकौप॥राजा कीयौ कौप नाह संग गिरमुँई ॥ पडदासीके पेट अनसना हुयगई॥ अन सन थन तज दियौ येक जुगपार णैं ॥ परिहाँ भूख प्यास सब सही पीवके कारणें ॥ ३४४ ॥ ॥ कासी जायकरौ तडी लीन्ही दासी साथ ॥ अवे सेठघर औतरी सात जनमकी बात॥ सात जनमकी बात कहतहूं तुज्नकूं ॥ अब मिलि याहै आय खबरहैं मुज्नकूं ॥ फेर बिछौवा हौय सु- णौरी सखियाँ परिहाँ हौसी कँवर फकीरडारासिरख क्खियाँ।३४८।मंदिरमाँहिं मिलापहुयनिद्रावसपुनि जग्र सूवा वचन सँदेस सुण जासीपारा नग्र॥जासी पारानग्र मिलेगी बागमें कौयलडारै अंबविछैवो भागमें॥दंपतवे मरकँवर सतीसंग हावसी ॥परिहाँ जनम सातकर पूर इंद्रवर जौवसी ॥ ३४६ ॥ सुण चकवाकी बातदोउँ जनम किया सबचीत फिर सबलंगा भवनकूँ च्यारघडी निसबीत ॥च्यारघडी

निसवीत गुराँपै आइयाँ ॥ करविनती बहुभाँत लगी गुरपाइयाँ ॥ गुरदीन्ही आसीस सीसकर धारियाँ ॥ परिहाँ लेआयुस सखिसाथक घराँपधा रियाँ ॥ ३४७ ॥ वार्ता ॥ सबलंगा गुराँसावकनेंसूं सीखलेयनें पीछी वराँ पधारी ॥ आगे सबलंगारी माता पूछियौ बाई आज मौड़ाघणाँ आया तरेक योकै गुरासावने सारी पढ़ियाँ पढियाँरीहाजिरी दीन्ही जिणसूँ अवार हुयगई ॥ इतराकमें सब लंगारी भौजाई चौनिजर हुयनें हसकर बोली बाईजी आज आपरा दिलऊपर उदमादनें खुसी मालम पडैछै जाणें कामदेवरी फौज उमडीछै ॥ इतरी बात सुणतांई सबलंगा मुसकायकर सरमंदी हुयनें पाछीबोलीनहीं ॥ नेआपरेठिकाणें जायनें सेजंकपर पौढी परंतु सारी रात निद्रा आई नहीं औरकंवरकीबात यादकर करनें आपरा पूरब जनम चिंतवन करबोकरी ॥ इतराकमें

महलांनीचेसूं नीसरे छै ॥ जद सव लंगाके और माहाराज कँवरके चौ निजर हुई, ॥ तवे माहावत षिण ऊंचौ देखवालागौ जरां सब लंगानें देखकर, मुरछागत होयनें हाथी सूं नीचो पड़ गयो ॥ जरां सव लंगारी भाभी काँई दुहो कहे छै ॥ भाभी वायक॥ सुण नणदल भाभी कहै, अखियाँ थारी जेहेर ॥ येकज मावत मारियो, रखौ कँवर परमे हेर ॥ ३८० ॥ वार्ता ॥ माहावत घड़ी दोय सूं सा वचेत हुवोनें मुरछा खुली ॥ तरे महावतरी लुगाई सव लंगानें काई दुहो कहे छै ॥ चंद्रायणाँ ॥ हेहि तियारी पापणीं, हितिया लागी तोय माहावत मारचो रावलौ, वेठी छी वरखोय ॥ वेठी छी वर खोय वड़ी हिति यारियाँ ॥ परिहाँ नैणाँ हंदी चौट चलाई नारियाँ ॥ ३८१ ॥ छंद चौझ ड़िया ॥ गौरी गौखाँ ऊभ अंग नांहिं मौड़िये ॥ देख पराया छेल निजर नांहि जौड़िये ॥

जो दीना करतारसु अंगलगाइये ॥ परिहाँ ॥ दीन्हाँ दान कथीर कंचन कहाँ पाइये ॥ ३८२ ॥
॥ वार्ता ॥ अठीं सवलंगारी गोदमें सवलंगारो भतीज बेठो छो, इतराक मेंतो कँवरजी साह, सांमों जोयौ जरां सवलंगा भतीजानें छातीके चिपाय करभींच्यौं ॥ जद सवलंगाकी भाभी कांई दुहो कहेछै ॥ नें सवलंगाकांई सुणेछै ॥ भाभी वायक ॥
॥ दोहा ॥ क्यांनेंभी चौवालनें, क्यूं पावौछौ दूख॥
वाला नणदल कंवर विन, कदेन भागे भूख ॥
॥ ३८३ ॥ सवलंगा वायक ॥ सुण सवलंगा थूंक ह, भाभीसूं अणखाय ॥ पर पुरसाँसूं मोहौ वत, म्हारीकरे वलाय ॥ ३८४ ॥ वार्ता ॥ इतरीवात चींत नणद ओजाईरी आपस में सुणताथका, सवारी आगेवढी सू सिरे वजार हो ताथका, पाछा महलां दाखल हुवा, ॥ अठी सेठजीरा गुमासता, जाय, सेठजीनें मालमकरी, सेठजी साह, सवलंगा

रेझरौखां नीचे, माहाराज कँवारकी असवारी घडी दौय ठहरी, ॥ याबात साहजी सुणकर हजूरमें गया, जायनें कही, श्रीहजूर पातस्या वौंकी फौज, आभूगढ ऊपर चढीछै, ॥ सूमाहाराज कँवारनें, दौ हजार आदमी लेय साम्हाँ पेसकसीमें भेजौ, नहीं तौ सहरनें खेंचल करसी ॥ जरांसाहजी तो पाछा आया ॥ और माहाराज कँवारका डेरा हजूरका हुकमसूं, मोहोम पधारण सारूवारे बागाँ में हुवा ॥ फौजसारी हाजर खडी, उणसमाँमें सब लंगा सात खंडे महल जाय संपाडो करणनें चढी, जरां फौज देखनें सुजाण रायनें पूछेछै ॥ सबलंगा वायक ॥ दोहा ॥ किणरा डेरा रावटी, किणरा घौडा ऊंठ ॥ फौज चहूंदिस फरवरे, रोक्या च्यारूँ खूँट॥२८५॥सुजाणराय बायक ॥ असवारीसुदबुद तणीं,कँवर पधारें म्हूँम॥जिणरा डेरारावटी,गजघुड़ लौंरी लूँम॥२८६॥ वार्ता ॥तरे सबलंगाकहीसुजाण

राय कँवरजीरा हलका रानें बुलायल्याव जराँसु-
जाण राय जायनै कँवरजीरा हलकरानैं ल्याय
हाजरकीयौ॥ तरे सबलंगा रुकौ लिख हलका रानैं
दीयौ॥ दोहा॥ पांच मोहोर धूंपेसगी यौकागद
लेजाय॥ हारगलाकौ बखसदूं पाछौ ज्वावसंगाय॥
३८७॥ सिद्ध सिरी सुभ ओपमाँ सुदबुद कँवर
सुजाँण॥ महरकरौ म्हाँ ऊपरे जदम्हाँने दासी
जाँण॥ ३८८॥ हलकाराँसूँ यूँकयौ मुख सूँ कह
ज्यौ जाय॥ सुदबुद कँवर सुजाणं बिन गौरी अंन्न
न खाय ३८९॥ वार्ता॥ जरां हलकारे जायनैं
कागद चनणिया खवासनेंदीन्हौ॥ और चनणि-
यौ जायनैं माहाराज कँवारके नजरकीन्हो॥ मा-
हाराज कँवार बाचनें नाराज हुवा और फौजतौं
बिदाकरीनें आपरा कामदारनें मुसायफ बणाय
कर सारी फौजरी भोलावणदेविदा कीया॥ अठी
आप पाछा महलाँ दाखल हुवा॥ अबे सेठजी सब

लंग्यारो लगन पूछने व्याव मांडियोछै पारानगर सूं रूपा साहपरणवा पधारसी॥ अबै सबलंगा वाने वैठी वानो सब लंगारो सेठजी आपरेघरू कीयौ जिणवानांने सवा लाख रुपइया लागा वडागाजा वाजा हगाम ठाटसूं पालखी में बैठायनें सबें वजार नौपत निसाण कौतल मुरातवाँसूं चंवरांरे फट कारे वानों महलां दाखल हुवो॥ घणीं रौसनियाँ नें आतस वाजियाँ हुई॥ माहाराज कँवार वानौं देखवा पधारिया पांचमोहोर अमोरनें चनाणियां खवासनें दीन्हीं ॥ माहाराज कंवार पिण पाछा महलाँदाखल हुवा आयने कह्यौ सेठजीरी बेटी सा वलंगा रोव्यावछे सूवानों देवौ जरां कंवराणीजी कह्यौ काहाल वडी फजर नोतौ दिरावसाँ॥ज़दवडी फजर हौतांही ॥ सेठजीरे घर वानाको नोतो धाय साथे दिरायौ पछै दासीनें बुलावणनें भेजी ज़रां सब लंगासौला शृंगार कर छतीस आभूषण पहर हातमें

हजूरियौ (रूमाल) लेय दासी सुजाण रायनै साथै लेयनैं रावले जावणनैं तयारहुईछे जठे भाभी आय आडी फिरीछे ॥ भाभी वायक ॥ दोहा ॥ रावलदेवल मत फिरौ वाइजी चढिये तेल ॥ हूंथांनें नहिंजाणघूं घरसैं राखूं ठेल ॥ २६० ॥ वार्ता ॥ इतरी वात भाभीकी सुणकर सवलंगा पाछो दोहो कहै छै ॥ सवलंगा वायक ॥ कर लोहो हंदौ पींजरौ जड छुरियाँ तरवार ॥ कँवर बुलायां नाँर हूं आवे गरदन मार ॥ २६१ ॥ छंद चौझड़िया मँहदीरा चीहातक कौंकण डौरडा ॥ सुदबुद राज कंवार वाण्यांतो छौरडा ॥ सुण भाभीजी वात कँवर सूं सीरहै ॥ सुदबुद सिरको मौडक वाणियों वीरहै ॥ २६२ ॥ वार्ता ॥ सवलंगाभाभीनें कहती थकी उठासूं रथमैं बेठकर सुजाण रायनें साथै लेयनें राजमहलां रणवासमैं दाखल हुई ॥ आगे कंवरजी पिणरणवासमें छा जठे सुदबुद कँवरके

नें सबलंग्याके चौनिजर हुई तरे सबलंगा नेंणां सूँ मुजरो करनें कंवराणी जीके पास जाय बैठी तरे कंवराणीजी सुजाण रायसूं दोहो कहैछै ॥ कँवराणी वायक ॥ दोहा ॥ बात कहूं सुज्जाणियाँ सुण जे येक सुवाय ॥ सबलंगा समझायदे पिवराख्यौ भरमाय ॥ ३६३ ॥ सुजाण राय वायक ॥ सब लंगा सूलक्षणीं समझै नहीं अयाँन ॥ थेक्यूं भूल्या भरममें चातुर चतुर सयाँन ॥ ३६४ ॥ वार्ता ॥ सुजाण राय कँवराणीजी सूं हात जोडनें कहैछै केम्हारा बाई सावतो भोलाछै क्यूंहींसमझ नहीं इणारे तो अेकण पोशालरा पढणाँ सूं हेत इकलास मंमत इरादोराखैछै और दूजी कांई बात छैनहीं ॥ आप इण बातरा कांई अब रोसो राखो छो ॥ इतराकमें तो सब लंगा कंवराणीजी सूं हात जोडनें अरजकरी के रसोवडामें धूंवोघणोंछै सू हुकम करो तो वारे जाऊँ ॥ जरां सबलंगा

हुकम लेयनें बारे आई॥ और कँवरजीसूं काँई दोहो कहैछै॥ सबलंगा बायक ॥ दोहा॥ काच महल तौ कचकचौ, रतनां जड़ित किंवार धूँवांरे मिसनीसरी, नैणाँ कियौ जुँहार॥ ३६८॥ वार्ता॥ जरां कँवरजी बोल्या, महलमें गणपती जीरो मिंदरछै, जिणमें जाय बेठो॥ तरे सबलंगा मिंदरमें दाखल हुवा॥ इतरे कंवरजी पिणलारांसूं जाय भेला हुवा॥ और कह्योके गणेसजीनें पूजो,॥ तरे सुजाणराय हात जोड़नें अरज गुदराई प्रर्थीनाथ गणपतीरी पूजा॥ आपपिण करनें कांकण डोरड़ा बँधाया चाहीजे॥ तरे माहाराज कँवार और सबलंगा, दोनूँ जणाँ गणपती री पूजाकर, कँवरजी पिंण कांकणडोरड़ा बांधलीया॥ और मँहदी उवटणां कर तयार हुवा, जठे सुदबुद कंवर, नें सबलंगा री जोड़ी किसीहेक दीखेछै॥ ॥ सुजाणराय बायक॥ दोहा॥ सिर पचरंगो मो

लियौ, मांणक जड़ियो मौड़ सुदबुद दूला हदव-
ण्या, सवलंगाके जौड़ ॥ ३६६ ॥ सवलंगा तेरा
तरुण, मगरपचीस कँवार ॥ रूपरंग जौवन जड़ी
करता घड़ी संवार ॥ ३६७ ॥ वार्ता ॥ दौनांरी
जौड़ी इसी जुड़ीछै, जाणें रेसमकासा लच्छा,
कनाकुरजकासा वचा, जौवनमें भरपूर, कनाकाम
देवको सोनूर, इसड़ी जौड़ी वणीजाणेंहूर कनज
हूर, जिणनें देख्यांसूंई दालिद्रियाँ का दालीद्र
दूर, ॥ इण मुजब दौनांरी जौड़ी वणीछै, ॥ इतरा
कमें रसोंवड़ो तयार हुवौ, तरें दोनूंजणाँ पांतिये
पधारिया, नेंसारी तयारी सहित सामगरीका थाल
भरभरनें कंचन मणमाणक रीजड़ी हुई चौकियां
ऊपर थालल्याय मेलिया, अबे आपसमें मनवा-
रांनें घणाठाट वाटसूं जीमनें पानवीड़ा, केसर
लवंग इलायचीयांरी मनवारां करैछै, इतराक में
सवलंगा हात जौड़ने कँवरजीसूं अरज करी,

प्रथीनाथ, काल परणीजणरौ दिनछैसू आपदिण जानमें ताकीदी सूं पधारसौ नैमनें हुकम होयसौ म्हें पाछौ जाऊं॥ तरे कँवरजी कयौ साराही काम आछावणसी आपतो पाछा पधारौ॥ तरै कँवरा णीजी सूं सुजाण राय अरज गुदरावे छेके अबेबा नांने सीखदिराईजे तरे कंवराणीजीरो बानौं विदा कीयोसू कँवराणीजीरो बानौंघणों आछो नीसरियो घणाहगांमसूं चंवरांरे फटकारे गाजा वाजांसूं सिरे बजार हुयने सेठजीरी हवेली बानौं पाछो दाखल हुवौ॥ अठी बरात रूपा साहरी आय बागमें डेरा दिया॥ तरे बधाई दारां जाय पदमां साहरे घरै बधाई दीन्हीं॥ दोहा॥ ढाढी सेवगनेबगी दिवी बधाई आय॥ जान पधारी गोरवें सन सुख लेवो बधाय॥ ३६८॥ घणांवमंड सूं आविया छत्रपती छे लार हाथ्यां रेहलके चले घुड़लाँ अंतनपार ॥ ३६९॥ वार्ता॥ वधाई दारां बधाई देयनें

पाछा बरात उतरी जठे बागमें आय दाखल हुवा॥
॥ दोहा ॥ कर भोजन पौसाख कर हुय घुड़ ले असवार॥तौरण बाँदण कारणें चाल्या सिरे बजार ॥ ३७० ॥ सरसत गणपत ध्यावियां देवी देवम-नाय ॥ चढ घोड़ी परणी जवा हाल्पा रूपा साह ॥ ३७१ ॥ साहाजी चाल्पा परणवा ले सारोपर वार ॥ आगे गावे जाँगड़्या अमलाँरी मन्हुवार ॥ ३७२ ॥ अड़ा भीड़मावै नहीं खवाँ खसी चहुँ और ॥ पगपग नौछावर करे दे रुपियाँनें मोहोर ॥ ३७३॥ वहे कलावत गावता रंभा निरत करेह॥ आगल ढाढी ओलगे जाचक सिंधू देह ॥ ३७४॥ नगर नार निरखण चली अली झरो खाँ झाँक ॥ मदछाकी मुख मुलकती चटक मटक पौसाख ॥ ३७५ ॥ रंग बधाई सहरमें गली गली उछरंग आई जाँन बजारमें कँवर मिल्या उण संग ॥३७६॥
॥ वार्ता ॥ इण मुजब बरात सिरे बजार होयनैं

पदमाँ साहरे घरे दाखल हुई अठी कंवर सुदबुद पिंण जानरा सिरदासमैं आय साँमलहुवा ॥ दोहा कँवरचढ्या येक अस्वपर,तिणकर लंबीकाम, सबलंग्याकर जोडके निवकर करी सिलाम ॥ ॥ ३७७ ॥ वार्ता ॥ अठी रूपासाह मनमें विचार करैछे और देवीदेवता मनावेछैं ॥ रूपसी कँवर वायक ॥ चँद्रायणाँ ॥सरसत गणपत ईस्वरी भूलाँ हर फभताय ॥ पदमणनें परणी जस्यां, पह, लीलागा पाय ॥ पहली लागापाय, मनावां ईश्वरी परिहां देस्याँ थारीजातभात मतवीसरी ॥ ३७८॥ तडदे तौरण वानस्यां,भडदेचंवरचाँवींद ॥ चंदा वदनी परणस्याँ सुखभरलेस्या नींद ॥ सुखभर लेस्यानींद पलंगपर पौढस्याँ परिहाँ अंगसूं अंग भिडाय दुसालो ओढस्याँ ॥ ३७९ ॥ हीरामोती सेवरे ; कंचनकी कलियाँ ॥ चीतालंकी परणस्या करस्याँ रंगरलियाँ॥करस्याँ गरलियाँह कसूंबाछां

णस्यां॥ परिहां, तरुणा पनके मांहक मौजा मांण स्यां ॥ ३८० ॥ वार्ता ॥ इण तरह देवता मना- विया नेंतोरण वानण आय ऊभा रया॥जठेसवलं- गाझरौ खारी बारीमें विलापकरैछै ॥ चंद्रायणां ॥ किसतूरी काली करी निरफल नागरबेल ॥ हींण पुरुषघर पदमणीं, योकरताको खेल॥योकरता को खेल कभूलानींदमें ॥ परिहां, बाडौसो विडरूप लखण नाहिं वींदमें ॥ ३८१ ॥ हेविधना कैसेंदियौ रांका हातरतन्न ॥ कौयलबांधी कागकेजिणरौ कांईं जतन्न॥ जिणरोकांईं जतन्न ककरता क्या किया ॥ परिहां, हींण पुरुष घरवास हरीसोंने दिया ॥ ३८२ ॥ केसरसिंधू कुमकुमां और सुगंधीवास ॥ हेविधना कैसेदियौ गुवूसूं घरवास॥ गूवूसूं घरवास हिया बिचसालहै ॥ परिहां वाड़ौ अतिविड रूपक बैठागालहै ॥ ३८३ ॥ ॥ छंद चौझडिया ॥ श्रीफल कौन सवाद कहा

जानें बनचरौ ॥ बिनआदरकौ व्याह ॥ हीरो तोहि कंकरौ॥लिखिया लेख अलेख बिधाता क्याकिया मरज्यौ मायरबाप जिणां वर हेरिया॥ ३८४ ॥ ॥ चंद्रायणाँ ॥ काली मिरचको झूमकौ लूंगडौडां कौहार ॥ कड़का मौडे कांमणीं कदमरसी भर तार ॥ कदमरसी भरतार सुखी जदहोवसी ॥ सुद बुद राज कंवार निजरभर जोवसी ॥ ३८५ ॥ भाभी वायक॥ दोहा ॥ बाप बीर सगपण कियौ घरवर येकण साज ॥ आँखियाँ आँसू आवटे कहो नणदल किणकाज ॥ ३८६ ॥ लिख्या लेख कैसें टले विधना लिष्या बिचार ॥ मन दिलगीरी मत करौ भौगे सौभरतार ॥ ३८७ ॥ वार्ता ॥ अठी सवलंगातौं मनसैं विचार करैछै नें भावज समझावे छै ॥ इतराकमें तो तौरण वानणरी वखत हुईतरे तौरण वांदवा रूपासाह सवै दरवाजे घोडौ खडौ कीयौ उणरे बरोबर कंवरजीपिणजाय ऊंभा रया

तौरण ऊंचौ घणौं राखियौं जिणसूं बींदसें तौरण वानणीं नहिं आयौ ॥ तरे माहाराज कंवार आपरी लाँबी काँमसूं तौरणरे फटकारनें अेक चिडी उडाय रूपासाहरे हातमें छडी सूंपदीनी कयौकेयूं तौरणवानीजेछे ॥ पछै रूपासाहनें तुरत घोडासूं उतारनें चवरियाँमें लेगया जिणवखत सबलंगाकी भाभी दोहो कैहेछे॥ भाभी वायक चंद्रायणाँ ॥ चंवरयां बींद पधारिया नार हुई चौदंत ॥ सरद चंद ज्यूँ कांमणी केतराह सौं कंथ ॥ केतराहसौ कंथककालौ कागहे परिहाँ लिखिया लेख अलेख क़फूटण भागहे ॥ ३८८॥ वार्ता॥ रूपसाकँवर चवरयाँमें पधारिया जठे कंवरजी पिण ब्राह्मण को भेष करनें चवरयाँमें जायदाखल हुवा ॥ अबे हतलेवौ छुडावणरी जुगतइण मुजबकरीके रूपासाहनें तौ हथलेवौ सुजाणीसूं जूडाय दीन्हौंनें सुजाणी सबलंगारी पीठमें चिपनें बैठगई

और हात सबलंगारा चीररा बौतासें राखियौ॥ और कँवरजी, हात सबलंगा कौ पकड़ हतलेवो जौड़लीन्हों॥ और येक विस्वौ साहुधान, दौय विस्वा साहुधान, करवा लाग गया, पछेकयौ सब-लंगा नेतो ऊंघ आवेछे, सोहूं पकड़ नेंसाव चेत राखूंहूं, यूंकरतां फेरांमें पिण साथै, सबलंगा, सुजाणीं, और कँवरजी, रूपासाह साथेरा साथे फिरगया, पछे हतलेवो छुडायनें कँवरजी तो चालवा लागा, जरां सबलंगा, पींपलको पान ले-यनें खांडौकर, कँवरजीनें दक्षिणांरे मिस, पकड़ा यौ॥ जरे कँवरजी खांडे पींपल जायनें पारस नाथजीरे मंदिर वेठगया, अवे पींपलको व्रक्ष, पव-नसूं हलियौ जरां पत्ताबाजवा लागा, तरे कँव-रजी जाण्यौं, सबलंगा आई, जरां दारू रौ सीसो येक फेर पी गया॥ दोहा॥ असल दुबारादा-खरौ, लाख लाखरी छाक॥ मांणीं गर माता हुवा वैठा मारगताक॥ ३८९॥ वार्ता॥ कंवर-

जी छिन वारे छिन मांहनें, आमां साम्हां फिरेछे फेरपींपलका पाँन वाजिया, तरे कँवरजी जाण्यौ अवके तोसवलंगा जरूर आई, ॥ आगे वारे आय नें देखेतो सव लंगा आईनहीं, ॥ जराँ कवरजी स वलंगारी उमेदको दोहो कहेछे ॥ सुदबुदवायक ॥ चंद्रायणाँ ॥ पींपलपानज रुंणझुणें, रेणअँधेरी जोय ॥ सायधणतो आईनहीं, किसविध जीवण होय ॥ किसविध जीवणहोय कसूताथेकला ॥ सिंघसवद वनमांह, चंद्रमाढैकला॥बैठाजोवाँ वाट नण्यारी आइयाँ ॥ परिहाँ, सुदबुद राजकंवारक सुखफरमाइयाँ ॥ ३९० ॥ वार्ता ॥ अवे कँवरजी तो सवलंगाकी राहा देखताँ देखताँ निंद्राके वस हुयनें पोढियाछे ॥ अठी सवलंगा परण नें, रूपा सा हरे डेरे जानी वासे आया ॥ इतराकमें रूप सी कँवरतो महलाँ दाखल हुयनें पलंगपर जायनें सूताछै ॥ अठी सव लंगा पिण महलाँ दाषलहुई ॥ पणवचन पहली मांदिरमें आव-

णरो कंवरनें देखूकीछी सू आपरी दासी मुजाण रायनें कहैछै ॥ सवलंगावायक ॥ चंद्रायणाँ ॥ सुदबुद कँवर मिलायदे दासी वेगी चाल ॥ मन उमँग्यो मिलसूं सही जावतड़ाँ मत पाल॥जावतडाँ मतपाल सीखहूं लेवसुं ॥ परिहाँ पूजणपार सनाथ रातरकिवसूँ ॥ ३९१ ॥ सात जनमकी अस्तरी सुदबुदछै भरतार ॥ भावे परणो बाणियो पिवसूं राखूँ प्यार ॥ पिवसूं राखूँ प्यार वाण्याँसूं आखडी परिहाँ सुदबुदछै सिर मोड़ सीस की राखडी ॥ ॥ ३९२ ॥ वार्ता ॥ इणतरह दासीसूं मनसौबो क-रनें अवे सवलंगा रूपासाहकनें जायनें हातजोड कर अरज करेछै ॥ दोहा ॥ कंचन थाल सँजोइया ऊभीध्याँन धराँ ॥ पूजा पारसनाथरी कहातो जाय कराँ ॥ ३९३ ॥ छंद चौझड़िया ॥ सुंदर जौडचा हात महलके बारणें ॥ पूछे रूपा साह कहो किण कारणें ॥ वोली जात सुजात पारसके देहरे ॥ तुरतहि घोखूँ जाय ॥ वँधेही सेहरे ३९४ ॥ चंद्रा-

जिणझरौखामें पील सौतां जलैछै जाणें सूमको सो टापरौ, कनाँ दातारकोसौ तेज, सूरवीरको सोतोसौ, जिण नीचे सूं सावलंगा नीसरेछै ॥ जराँपायल रमझौल, अणवट चिटियाँको झणकार, और झालरा मादलियाँरो ठण-कार, खत राणीं सुणकर झरोखा झाकैतो सबलंगा, महमंत हातीकी तरह घूमती थकी चाली आवैछै॥जराँ खतराणीं जायनें आपरा खावँदनें जगायौ॥ जराँ खतरी झरोखै आयो खतरी के ओर सबलंगाके चौनिजर हुई ॥ सबलंगाको रूपदेख कर खतरीनें मुरछा आई और झरोखांसूं पड़वा लागौ॥जराँ खतराणी बाथांमें पकड़ राख्यौ जराँ सबलंगानें काँई दुहो कहैछै, नें सबलंगा काँई सुणे छै ॥ खतराणीं वायक ॥ चंद्रायणाँ ॥ हेहितियारी पापणीं कुणकी छ तूं जौय ॥मास्यो छौमो बालमो बैठी छी घर खौय ॥ बैठी छी घर

खोय वडी हिति यारियाँ॥नैण चलावे चौट किणीं घर नारियाँ ॥ मारग वहती नार महोलौ देगई ॥ परिहाँ नैंन कटारी मार कलेजौले गई ॥ ४०० ॥ ॥ वार्ता ॥ इतरी सुणनें सब लंगा पाछौ काँई कहै छै ॥ सब लंगा वायक ॥ चंद्रायणाँ ॥ मौदेख्याँदे-वल डिगै उखड़ जाय गज दंत ॥ बाँट वधाई कामणीं जीवत पायौ कंथ ॥ जीवत पायौ कंथ वधाई बाँटज्यौ ॥ ले गंगाजल हातक मुखड़ौ छाँटज्यौ ॥ जंगी ढोल घुराय गीत रंगगानज्यौ ॥ परिहाँ दान दियौ भरतार इतौ गुंण मानज्यौ ॥ ॥ ४०१ ॥ वार्ता ॥ आगे येक सुनारकी हवेली रो झरोखौआयौ जठे सुनारी जाय सुनारनें जगायौ सुनार झरौ खे आयौ आयनें सब लंगानें देखनें मोहि तहुवौ ॥ इतराक में सुनारी खं खारौ कीयौ जरां सुनारीनें सब लंगा काँई दुहौ कहै छै॥ चंद्रायणाँ ॥ थारौ वाल मथाँ कनें तूँ वाल मरी जौय॥गले वह

तासिंघघज्यूँ मती दकालो मौय॥मती दकालौ मौय पटा झर आवतौ ॥ लँगर तुड़ायाँ तीख गिणें नाहिं खावतौ ॥ म्हारे सिरको मौड़क जौवन पूर है ॥ पारिहाँ सुदबुद राज कँवार माहाभट सूर है ॥ ४०२ ॥ बार्ता ॥ तरे सुनारी पाछौ काँई कहे छे नें सब लंग्या काँई सुणे छै ॥ सुनारी बायक ॥ दोहा ॥हुकमी चाकर रावला हुकम करौ परवाँण ॥ अरज कराँ बाइ साब लंगा औगुण रती न जाँण ॥ ४०३ ॥ बार्ता ॥ इतराक में तो येक कुत्ती भुस वालागी जराँ सब लंगा काँई कहे छे ॥ सब लंगा बायक ॥ चंद्रायणाँ ॥ काला मुखरी कूकरी भुस भुस लाहौलेह ॥ मौ बीती तोय बीतसी काती आवण देह ॥ काती आवण देह घरौ घर डौलसी ॥ धुरकाराँ सूंलौग सवी मिल बौलसी ॥ लार लियाँ दसवीस फिरेली दौडती ॥ परिहाँ जिणातिणनेह लगायप्रीत नित जौडती॥४०४॥वार्ता सबलंगा कु

तीनें दोहो कहती थकी चली गई ॥ आगे जायर सहरके बाहर खडी रही राततौ अँधेरी और पींपल छण छणाट करेछै ॥ बनमें चात्रगमौर झिंगौरेछै ॥पपइयौ तानतौडेछै ॥ जठे सवलंगा सुजाणरायनें कहेछै ॥ सवलंगा वायक ॥ चंद्रायणाँ ॥ रेंण अधेरी पंथमें दासी आगे चाल ॥ आभे चमके बीजली पड पावसपर नाल ॥ पड पावस परनाल सघन घन मेहकौ ॥परिहाँ हौसीकोण हवाल नवल्ला नेहकौ॥४०५॥ वार्ता ॥ तरे दासी सुजाणराय काँई कहेछै ॥ चंद्रायणाँ ॥ ओपींपल देवल अठे डरपौ मती लगार ॥ सुदबुद कँवर मिलावसूं वखसोनौ सरहार ॥ वखसो नौसरहार तुरत मिल जावसी ॥ परिहाँ हेलौ दे साँजायक साम्हाँ आवसी ॥ ४०६ ॥ वार्ता ॥ अवे सवलंगा मंदिरमें कांकरयाँ फैंकणीं सरू कीनीं ॥ पण कँवरजी जाग्या नहीं तरे सुजाण राय दोहो कहेछै ॥ सुजाण राय

बायक ॥ चंद्रायणाँ ॥ तड़ तड़ बाव्हीं काँकरी बाजे लाल किंवार ॥ ऊठो मदमाता कँवर साय-धण ऊभी बार साय धणा ऊभी वारक बहुत बणा वसें ॥ सुणज्यौ राज कँवारक घणाँ जड़ावसें ॥ धणरो जो बन पूरकछौलस मंदसी ॥ परिहाँ लूटौ राज कँवारक लंकक मंदसी ॥ ४०७ ॥ मदमाता चेते नहीं दासी करे पुकार॥ कँवर पौढिया नींदमें सायधणऊभी बार सायधणाऊभी वार क नाजु ककाँमणी ॥ परि हाँ ॥सझसौला सिणगार दिपे जिमदामणी ॥ ४०८॥ वार्ता ॥ तो पिण कंवरजी जाग्यानहीं तरे सबलंग्या मंदिरमें गई ॥ जायनें कँवरनें बाथमें भरनें बेठा करलीन्हाँ पण कँवर जी जागे नहीं ॥ जद सब लंगा कांई कहेछै ॥ सब लंगा बायक ॥ चंद्रायणाँ ॥ पारस पूज्यौ पाँचवार चोढ्यो नवसर हार ॥ देवल ईंडौचाढ्यौ सुदबुद राजकँवार ॥ सुदबुद राजकँवार कृपा

अब कीजिये ॥ परिहाँ हाजर ऊभी नार मोहौ लालीजिये ॥ ४०९ ॥ हूंआई पिवछोडके पिवसू तासुखपाल ॥ पपइयो पिव पिव करे उठी बदन मैं झाल ॥ उठी बदनमें झाल लिपटूं पीवसूँ परि हाँ देऊँजीव मिलाय पीवका जीवसूं ॥४१० ॥ आईछी लखलौलके च्पारूं पला उछाल ॥ क्या जाणूं कैसी भई सोयरया भौपाल ॥ सोयरया भौ पाल कअमलाँ आकरा ॥ परिहाँ अनवी हुवा अ चेत फुलाँरा साथरा ॥ ४११ ॥ इसडा अमलन कीजिये वसमें रहेन अंग ॥ आधोचिणों अफीम को केचुगटी भरभंग ॥ केचुगटी भरभंग कवीं यौं म्हेंदिया ॥ परिहाँ वैरण होगइरात बिछोहा त किया ॥ ४१२ ॥ तुज कारण म्हेंनीसरी पूजण पारस नाथ ॥ आईछी अध रातकी होय गयो प रभात॥होय गयो परभात कँवर नाहिं जागिया ॥ परिहाँ कूकड श्रवण अवाज नैनझड लागिया

॥ ४१३ ॥ दोहा ॥ सब लंगाकी वीनती क्यूँ न हिं जागो कंथ ॥ ज्यूँज्यूँ भीड़ूं बाथमें त्यूँत्यूँ सु वे नचींत ॥ ४१४ ॥ वार्ता ॥ कँवरजीनें बाथमें लेयनेंछातीसूं भीडिया पण कँवरजी जाग्यानही तरे सब लंगा कँवरजीकी पीठ सम्हाले छैरखेज कुचकी अणियाँ पार नहिं हुयगई है ॥ चंद्रायणाँ ॥ कुच तीखा पिव पातला अणियाँ तीखी धार ॥ पीठ सम्हालूं पीवकी अणीनं होगइ पार ॥ अणी न होगइ पार कांचुकी कोरसूं ॥ परिहाँ सूतीअं ग भिडाय कमरकाजोरसूं ॥ ४१५ ॥ हूंआई पिव छोडके पिवसूता सुखनींद ॥ रेंणव दीती रंग बिन जाग नवल्ला वींद ॥ जाग नवल्ला वींद वादली औसरी ॥ परिहाँ आई लूँबाँ लूँब क झाड़्याँ चौसरी ॥ ४१६ ॥ लाल जटा धुन बोलि यो रैंण गलंती दीठ राज कँवर जाग्या नहीं ऊठी ब्रहे अँगीठ ऊठी ब्रहे अँगीठ नैंन झड़्यूं वहै ॥

परिहाँ सावण नदियाँ पूर करा ग्या नाँरहै॥४१७॥ केसर काटूँ कूकड़ा क्यूं बोल्यौ निरभाग॥ सूती छी सुख सेझ मैं पीवगला मूँ लाग॥ पीव गला सूँ लाग रही विन रंगमें॥ परिहाँ खोई सारी रात पियाका संगमें॥ ४१८॥ कौल ठौल कूड़ाथया वचन वुहा सब बाहाल॥ दारूमें विष घोलियौ कीन्हों कपट कलाल कीन्हों कपट कलाल कम्हारीसौ कड़ी॥ परिहाँ किण सौकड़दी सूँक करु पिया रौकड़ी॥ ४१९॥ आई छी उद मादसूँ सहज रमण पिवपास॥ रंग रसियो जाग्यौ नहीं होगइ आस निरास॥ होगइ आस निरास मुखाँ नाहिं बौलिया॥ परिहाँ ऊगा अमल अपार अँतर नाहिं खौलिया॥ ४२०॥ परण्यौ पिववरजी मनैं विरथा कीन्हौं वाद॥ कँवर मिलण रेकारणें हरख कियो उदमाद॥ हरख कियो उदमाद मिंदरमें आवताँ॥ पाछा पड़े न पाव घराँ दिस जावताँ

आवतड़ाँ दस पैंडक जाताँ कौस है ॥ परिहाँ म्हांमें नहीं वराज कँवरमें दौसहै ॥ ४२१ ॥ रेंण वदीती होगई कूकड़ करी पुकार॥दारू माँह दगौ कियौ जाज्यौ नासकलाल ॥ जाज्यौ नास कला लकपटतें क्यूँ कियौ ॥ परिहाँ ले सौकड़री सूंक काबिखड़ो तें दियौ ॥ ४२२ ॥ छंदचौ झाडिया ॥ आई मत्त कुमत्तक विड लौम्हे दियौ ॥ जाज्यौ बैरण रात विछोंचो तें कियौ ॥ आईनींद अपार अमलका तारमें॥सौय रह्या भौपाल आज इण वार में ॥ ४२३ ॥ सौयरया भौपाल अमल्लाँ आकरा जागौ राजकँवार कमदकीछाकरा ॥गल विचन वसर हारक जंजर बाजनाँ ॥ दई विछौंवा दिया मिल्या तौहिसाझना ॥४२४॥दोहा॥ एसा नसान कीजिये; जैसा अंधा धुँध ॥ घरका जाणें मरगया आपकरै आनंद ॥ ४२५ ॥ वार्ता ॥ इण तरह सवलंगा विलाप करनें विचारकीयोके अठे कोई

साय दीसहनाण करचौ चाहीजे ॥ नहिंतौ कँवर जागसीजरा मनें झूटी जाणसी॥केवचन दियौऔर नार आई नहीं ॥ इसीविचारकरनें सवलंग्या अठी उठी देखै तौयेक पींपलकी डाहली ऊपर, सूवटौ वेठौछे तरे उणांने दोहो कहैछे ॥ सबलंगा वायक चंद्रायणाँ ॥ सूवा सूवा सूवटा चूंच मढाऊंहीर ॥ धण सुखपिव जाग्या नहीं ॥ साख भरी म्हारावीर साखभरी म्हारावीर मिनख नाहिंऔरहे ॥ परिहाँ किणसूँ कहूँ संदेस परवा मौरहे ॥ ४२६॥ वार्ता ॥ सूवटो सवलंगाका वचन सुणनें मनमें सोच कियौ देखौ इणतो मनें भाई कहने संदेसो देवण रीकही अवेहू संदेसौ वहनरो किस तरहसूंकहूं तरे सूवटो सवलंगानें पाछो जवावदेवछै॥ सूवानायक ॥ चंद्रायणाँ ॥ सुण आँवा सुण आमली सुण दाडम सुण दाख॥वेनडतौ जारीकरै वीर भरै किम साख वीरभरे किम साखक बोल्याँ पापहै ॥परिहाँ

करेकौन बकवाद अठे चुपचापहै ॥ ४२७ ॥
॥ सवलंगा वायक ॥ सूवा सूवा सूवटा नेवर पग थारेह ॥ धणसूं पिवजाग्या नहीं देवर सासभरेह देवर सास भरेह कसुखकर जीवनें॥ परिहाँ संदेसौ सुख मालक प्यारा पीवनें ॥ ४२८ ॥ वार्ता ॥ इतरी वात सुवानें कही फेरमनमें विचार कीयोके योतो ज्यानवरछै जाणूंहूं संदेसो तौ जरूरदेसी ॥ पिण काईं कसहनाण म्हारा हातकोबी करदेवणों चहीजै ॥ तरे आपका आंखमें काजल आँसुवा सूं घु लरयोछौ जिणरीतो स्याही करीनें आपरा हातरी आँगलीकी कलम करनें कँवररे हात ऊपर दोहौ लिखैछै ॥ सवलंगा वायक ॥ चंद्रायणाँ ॥ मिसि अंजन अँगुली कलम दसखत लिखदूं हात सवलंगा हाजर हुई लिखी करमकी वात॥ लिखी करमकी वात कझीणीं औलियाँ ॥ परिहाँ ऊभी झुरगइनार मिंदरकी पौलियाँ ॥ ४२९ ॥ जोगीहो

ज्यो वालमाँ कीज्यौ भगवाँ भेस ॥ पारानगर पधार ज्यौ कर ज्यौ अलख अलेस ॥ कर ज्यौ अलख अलेस बचनतो पाल ज्यौ ॥ परिहाँ धणमें औगण लाख कंथ मतिन्हालज्यौ ॥ ४३० ॥ पुरा वणाँ उण नग्रमें घर घर चंपारूँख ॥ जिण वरवेग पधारज्यौ नारेलाँ का रूंख ॥ नारे लाँकारूंख भूल मतिजाव ज्यौ परिहाँ दीज्यौ वचन निभायक वेगा आवज्यौ ॥ ४३१ ॥ पींव विछोई कामणीनैंण लगावे डाम ॥ देह विछेवा जद मिटे राजी हौसी राम ॥ राजी हौसी राम विरद दिसजोवसी ॥ परिहाँ प्यारी तणों मिलाप पीवसूं होवसी ॥ ४३२ ॥ वार्ता ॥ कँवरजीरा हात ऊपरयो दोहो लिखनै सवलंगा मंदिरमेंसुं पाछी घराँ दिस विदा हुई सूनिसासा न्हांखती थकीनें वागाँमें चकवाचक वीरी वातसुणीछी तिकी यादकरती थकी डिगती डोलती पाछी सहरमें आवेछै पगअगाडी धरेछै

पणपाछा पाछा पडेछै ॥ इतराकमें सुनार कोइ्र रोखौ आयो जठे सुनारी काँई पूछेछै ॥ सुनारी वायक ॥चंद्रायणाँ ॥ सालू सलवटनाँ पडचा नथ वलपडचौ न कौय ॥ सोनण पूछे सायधण जौवन लुटचौ न तोय॥जौवन लुटचौ न तोय कहो किण कारणें परिहाँ पीतम मिल्याकनाँह रह्या किमवा रणैं ॥ ४३३ ॥ छंदचौझडिया ॥ मोती सीपलि- लाड उसी पर मंडिया ॥ कंचू बंध सुबंधाकिअहर न खंडिया ॥ कुसुम सुपरमल सीस मत्तकौ ऊटिया केहरके मुख माँस किसी विध छूटिया ॥ ४३४॥ ॥ वाताँ ॥ इतरी बात सुनारीकी सुँणनें सबलंग्या ऊभी रहकर पाछो जुवाब देवेछै ॥ छंद चौझडि- या ॥ सखि सौला सिणगार सझ्या पिवकारणें ॥ नेंणाँ वाँण चढायचली पिव वारणें ॥ हूँ हुयबाध णरूप कायरकों लूटिया ॥ केहरके मुखमाँस इसी विध छूटिया ॥ थक्यौ सूरकौ रूप पेजकर चंपि-

या ॥ रह्यानसे भरपूर नूर नहिं झंपिया ॥ ४३५॥
चंद्रायणाँ॥ सखियेक सज्जन म्हें कियौ जैसोचंद
अकास ॥ सिखदनासीं मोलगी फल विन बेठाँ
पास ॥ फल विन बेठाँ पास जगत सब जाणसी ॥
परिहाँ कुलनें लागे दाग भरम सब आणसी। ४३६।
मिल बिछडचा बिछडचा २ मिल्या रिल मिल
काढी रात ॥ साजन मुखाँन बौलिया लिखी करम
की वात ॥ लिखी करमकी वात विधाताई सरी ॥
परिहाँ आलभोलके माँय रात सबनी सरी ॥४३७
॥ वार्ता ॥ सवलंगा पाछी महलाँ दाखल हुई ॥
वड़ी फजर जाँननें सीखहोवा लागी जद सावलंगा
की आँखमें आँसू आया जराँ भाभी काँई दोहो
कहेछैनें सवलंगा काँई सुणेंछे ॥ भाभी वायक ॥
छंदचौझडिया ॥ सोनौ रूपौ दत्तदायजो म्हेंदि-
यौ ॥ हीरा मौतीलाल माँग मुखथे लियो ॥ रंभा
राज कँवार सुघड वरपाइयौ॥ नणदल नैणाँ नीर

किसी विध आइयौ॥ ४३८ ॥ सबलंगावायक ॥ व्याकुल चित्त बदन्न जिसीके कारणें ॥ लौकजाणें रौवती चाले बारणें॥ मनमें धोखौ रयौ कँवरनहिं मँाणियों ॥ लिख्यौ विधातालेख लेचल्यो बाँणियों ४३९॥ वार्ता॥इतराकमें येक सखी सबलंगारे कान में आयनें बोली॥ सखिवायक॥ कवित्त॥ सासरके चलतेहि बिलौकत देखतही अँखियाँभरआई॥जान तही जिवकी जुसखीतिन काँनमें बातकेयूँ समुझाई जातिहे जहाँ तहाँ अब सुंदरसूनें मिद्रघणीं उमराही काहेकों सौचविचार करो सबंलग्या चाहे जासुँ मौज कराँहीं ॥ ४४० ॥ वार्ता ॥ जब सब लंग्या रथमें बेठकर विदा हौवालागी जितरा कमें अठि कँवरजीनें नसारो उतार आयो॥ और पस वाड़ो फेरियो तरे सूवोकाँईं कहै छै॥सूवावायक॥ ॥ चंद्रायणाँ ॥ अरे मुसाफर जागरे सूतौ किमूँ निंसक ॥ तुज कारण धणरुदन कर लिपटी भर

भर अंक ॥ लिपटी भर भर अंक नींद अति आइयाँ ॥ पलपल मदन जगायक तौ हिज गाइयाँ॥ आखर गई निरास अवे तौ चेतरे ॥ परिहाँ कर दोहो लिख नारक अरथ समेतरे ॥ ४४१ ॥ पोहो पाटी पगड़ो हुवौ पंथी लागा पंथ ॥ तूँ काँईं सू तो नींदमें मद छकियौ महमंत ॥ मदछ कियौ मह मंत सिंघ ज्यूं घोरतौ ॥ परिहाँ जाँण भुजँग बल खायक आलस मौड़तौ ॥ ४४२ ॥ वार्ता ॥ तरे कँवरजी सावचेत हुवा जद सूवे कँवरजीनैं घणीं ॥ नानत दीवी॥अवे कँवरजी आँख्याँ मसलताथका चक चूंदी छायोड़ा उवासियाँ लेता पड़ता आख ड़ता ऊठिया ॥ नैं मनमैं पिसतावा करनैं सूवानैं पूछवा लागा ॥ उठी वरात विदाहुई सूमारग चाले छे और सव लंगा विलाप करे छे नैं घड़ी घड़ीमें आँसू भरे छै अठी कँवरजी सूवानैं सँ देसौ पूछेछै नैं सूवो पाछो काँईं जुवाव देवे छै ॥ कँवर वायक

चंद्रायणाँ॥ तूँ छे भाई धरमकौ सूवा चतुर सुजाँण ॥ पारस पूजण कारणें किसी पुजारी आँण ॥ किसी पुजारी आँण क कजरौ देगई ॥ परिहाँ हिवड़े हात लगाय कलेजौ लेगई ॥ ४४३ ॥ सूवा वायक ॥ सुण सुदबुद सूवो कहै धण मुख मीठा वैंण ॥ गई निसासा न्हाँखती चौसर झाड़िया नैंण ॥ चौसर झाड़िया नैंण प्रेम सूँ छाकिया ॥ परिहाँ रह्या परू-स्याथाल जीभ नहिं चाख्विया ॥ ४४४ ॥ कँवर वायक॥ सुण सूवा सुदबुद कहै अब मुजभे दभताय उडऊँ चौचढदेखजे धणकिण मारगजाय॥ धणकिण मारगजाय कपंथ भतावजे ॥ परिहाँ, ऊँचौ चढ आकास खवरतौ ल्यावजे॥ ४४५॥ सूवा वायक॥ सुण सुदबुद सूवो कहै, दूरी गई बरात॥ रथविचरू पासाहकै सबलंगाछै साथ ॥ सबलंगाछै साथ, निसासा न्हाँखती ॥ परिहाँ चलताँ मिलणन होय कँवर दिस झाँकती ॥ ४४६ ॥ दोहा ॥ सूवा

मुख संदेसडौ, सुणकर कँवर सुजाँण बँधे बचनरी डौरकिय पारानगर पयाँण ॥ ४४७ ॥ ॥ वार्ता ॥ कँवरजी पारसनाथजीरा मदरसेंसूं चाल्यांसूं पड़ता आंखडतानें डिगता डोलता आपरा जनाँनाँ महलाँ नीचे आयनें ऊभारया तरे कँवराणींजी काँइँ दोहो कहैछे ॥ कँवराणीं वायक दोहा, रुतवसंत आई नहीं, अरुकाँई खेल्या फग्ग अरजकराँ छाँ कँवरजी, केसर रचियौ अंग॥४४८॥ ॥ छंद चौझाड़ियाँ ॥ बिनताग गल हार कंथ कहाँ पेहेरियौ ॥ नैंणाभरव्यौ तँबोल, अंजन कहाँ हेरियौ रमिया सारी रैण पराई गौरियाँ॥दीजे मोहिवताय कँवरजी चौरियाँ ॥ ४४९ ॥ कँवर वायक कयौन माँनौ नार कहौ किसकीजियै॥साँझे गया कलाल तिहाँ मदपीजियै ॥ लेयकलालण पूत कन्हे हुल रावियौ ॥ तिहाँ विलग्गौ हार कहे समझावियौ ॥ ४५० ॥ कँवराणीं वायक ॥ रहोरहो कंथ अयाण

असत क्यूं भाखियै ॥ रे पतिहूंतन कंथक उत्तर दाखिये ॥ जहाँथे रमिया रातक दीठागौरियाँ ॥ पाछेबोलो झूटकरौ क्यूं चौरियाँ, ॥ ४८१ ॥ कँवर वायक ॥ रहोरहो गहलीनार गहेसा मत करौ फेरकहाँगा बात तोलाजाँ नाँमरौ ॥ अपणें हाथाँ नार जंघनाँ उघाडिये ॥ नागोदेख सरीर चित्त नहिं ताड़िये ॥ ४८२ ॥ कँवराणीं वायक ॥ पीतम हमकूं छौड अवरसूं क्यूं करो॥मनमाँहें उद माद कछयली साँभरौ॥वहाँकी वेदनहोय यहाँभी आखिये रोटेमीठीकोरपराई चाखिये॥४८३॥वार्ता तरे कँवरजी सिसकारौ न्हाँखनें कहैछै कँवराणींजी सावकाँई कहूं॥ मनकी बात मनमेंहीं राखणीं ठीकहै कह्याँसूँ आपकी हसी करणी आपकेही हात हुवेहै ॥ तरे कँवराणी जी हात जोडनें अरज करी प्रथीनाथ म्हाँनें तो मनकी सारी वात कहणीं चहीजै॥ कँवरजी बायक॥ उसकी तौ वदनामीं

त्रिया मेरे सिरचडी ॥ झूटीथी सौ बात कसाची हुयपडी ॥ नैंणनच रुच्याप्रेमक नाँमन लज्जिया ॥ कैसा वज्जन वज्जरण का बज्जिया ॥ ४८४॥ कँवराणीं बायक ॥ वैस्या होय सरूप तौ नेहनकी जिये ॥ परणी होय कुरूपतो छेहनदीजिये ॥ वैस्या साप सुनार कदुरदुर बंचिये ॥ पथ्थरद वियौ हात कलासूँ खांचिये ॥ ४८५॥ वार्ता ॥ कँवराणीजी के और कँवरजीके आपसमें वाताँ होरही छी इत राकमें सब लंगा याद आई तरे चनाणियाँ खवासनें कही के सब लंगाविदा हुई के अठेई छै सूखवर ल्पावौ ॥ तरे चनाणियो सेठजीरी हवेली नीचे आयौ आगे सब लंगारी भांभी झरो खामें खडी छी जराँ चनाणियाँनैं देखनें काई दोहो कहे छै ॥ छंद चौझाडिया ॥ चौबारा दोयच्यार कमेडी काचकी ॥ सभरचो चुडलौ हातक फूंदी पाटकी ॥ कोयल कंठ लगाय खडीथी आसरे ॥

सायधण अठेन आज सिधारच्या सासरे॥ ४८६ ॥ कानकडी गलहार झबाझब मोतिया ॥ डोडी वंगडी हातक पहरण धोतियाँ ॥ कोयल जैसो कंठक टुकियेक भासरे ॥ सो सुंदरइण गामन चालीसा सरे ॥ ४८७ ॥ वार्ता ॥ सव लंगाकी भाभीकह्यो वेतो विदा हो गया जद खवास पाछौ आयनें कँवरजीनैं खवर दीन्हीं॥जव कँवरजी सारो राज पाट रणवास छौडनेंमनमें विलापकरताथका अकेलाही पारा नग रीनें विदा हुवा ॥

इति सुदबुद सव लंगाकी वार्ता मंदिरमैं कँवरा के और सव लंगाके दोयवार मिलाप हुयनै विछड न वर्णन सहाशिवकरण रामरतन दरक माहेश्वरी मारवाड़ी मूंडवा वालाकृत नवम प्रकाश॥९॥

॥ अथ सुदबुद सवलंगाकी वार्ता दशमप्रकाश प्रारंभ ॥

वार्ता॥अठे तो कँवरजी मनमें विलापकरता हुवा डिगताडौलता अकेलाही पारानगरीनें विदाहुवाछै अठी सवलंगा जानकी साथे विदा हुईछै जठे साथ एयाँ पुगायकर मिझल्या गावती थकी सवलंगानें रथमें वैठायनें रूपासाहरी साथे रवानें करी और आप पाछी आप आपरे घराँनें वहीर हुई सारी साथ एयाँ सवलंगारी औलूँरी वाताँ करेछै ॥ अठी सवलंगारे पिण वहीर हुवताँ कँवरसूं मिलाप हुवो नहीं सूमनमें विलापकरेछै ॥ नेघडी घडीमें आँखियाँ भरेछै (छंद चौझाडिया) सवलंगा हुय विदा रथ्थमें वैठियाँ ॥ भरभर आवे नेंण कँवर मन ऐंठियाँ ॥ जाणें वंधीवान निसाना न्हाँखिया प्यारा पीतम सेंण प्रेम नहिं चाखिया ॥ ४८८ ॥ वार्ता सवलंगा विदा होयकर मारग चालैछै कोस वाराकी मजल हुई जायकर डेरा वागमेंहुवा ॥

सबलंगा रथसूं उतरनें बिछायत पर बैठी ॥ इतराकमैं बागवानरी लडकी चौसर गजरा छडियाँ पंखा गूंथल्याईनें सबलंगारे पास आयनें छाव निजर करी ॥ तरे सबलंगा मालीकी लडकीनें कांईं कहेछै ॥ सबलंगा बायक ॥ दोहा ॥ पाँच मोहोर दी छावडी कह सबलंगा बात ॥ सुदबुद कँवर पधारसी कागद दीज्यौ हाथ ॥ ४५९ ॥ सिंद्धसिरी सुभ औपमाँ कँवर सिरौमण स्याम ॥ पारानगर पधारज्यौ करज्यौ पूरणकाम ॥ ४६० ॥ गुणाँ तौही आपणाँ सज्जन जाणौं राज ॥ प्रीत भली परपाल ज्यौं बाँह गहेकी लाज ॥ ४६१ ॥ तुमही सज्जन मित तुम पीतम तुमपरवाँण ॥ हिवडाभीतर तुमबसौ भावेजाँण न जाँण ॥ ४६२ ॥ हूंस घणीं मनमें रही क्यूँहीं पड़ी न पार ॥ केजाणे मन माँहरौ केजाणें करतार ॥ ४६३ ॥ घणीं महर करज्यौ सदा मती बिसारौ चित्त ॥ मौसरखी

लख थाँहरै म्हारे तुमही मित्त ॥ ४६४ ॥
॥ मेलो तो लिखियौ हुसी हूँ जाणूं निरधार॥
म्हारौ मनतोमें बसे येम कहूँ सौवार ॥ ४६५ ॥
कागद लिखपूरौ कियौ संदसौज़ नरेस ॥ पहल
हथेली लिख दियो आसन पूरी जेस ॥ ४६६ ॥
वार्ता ॥ सब लंगा मालीकी लड़कीनें छावड़ी कीनौ
छावर मोहोर पांच देयनें कयौ अठे सुदबुद कँवर
पधारसी जिणनें योकागद दीजो और मुखवचनाँ
कहज्यौ पारानगर जलदी पधारै॥ इतराकमें
बरात पाछी रवाने हुई ॥ सू कोस बारा ऊपर
फेर मुकाम हुवौ जठे पिण कागद लिखनें वन
मालनके हात दीनौं ॥ यूं मुकाम मुकाम सूं कागद
देती थकी नें कँवरजीनें उडीकती थकी सब लंगा
पारा नगर पहुंची॥ अठी कँवरजी पिणलारे कालारे
पारा नगर पधारे छै उठी सब लंगानें रूपसी कँवर
महलाँ दाखल हुवा ॥ रूपसी कँवर बोल्या पधारौ

चौपड़ खेलाँ ॥ जरां सब लंगा कही म्हारे पारस नाथजीरी जात बोली छी तिकी मानीजी नहीं सू अठे मिंदर और नवो महल चिणा वौजद जात देऊँ पछे नवा महलमैं आपरेनें म्हारे बात चीत हौसी तरे रूपासाह कही मंदरनें महल तयार होवोकरसी वाताँ चीताँ तौ कराँ जद सब लंगा कही म्हारे तौ जात दियाँ पहली पुरस सूं सपरस हौवणों तो कठे पण वात करण कोही त्याग है ॥ तरे रूपा साह जाण्यौंके तिरिया हट है जाण्याँ नवो महलनें मिंदर तयार हौवतां कांई दिन लागसी ॥ जद रूपा साह नवा महल और मंदरकी नींव दिराई ॥ अठी कँवरजी पिण पारा नगरीनें विदा हुवाईछा सू आगे वनमालीकी लड़की वणराय सींचरही छै ॥ तरे उणांनें कँवरजी कांई दोहो कहै छ ॥ कँवरजी वायक ॥चंद्रायणा॥वनमाली कीडी करी सींचतहै वणराय ॥ इण मारग धण नीसरी

हसे कि रौवतजाय ॥ हसे कि रौवत जाय हगी गत कीजिये ॥ परिहां जास्यां पारा नगर संदेसौ दीजिये ॥४६७॥वन मालन वायक॥हसे तो जौवनि यों चुवे रोवैतो काजल जाय ॥टौलां विछड़ी मिरघ णीं फिर फिर झांकत जाय ॥ फिरफिर झांकत जाय कटौलां वीसरी ॥परिहाँ,गई निसासा न्हांख अठासूँ नीसरी ॥ ४६८ ॥ कँवरजी वायक॥टौला विछड्या मिरघका मिरघीदेगइपूट ॥ दइव मिलावे तौमिलाँ प्राँण जावसीछूट ॥ प्राँण जावसी छूट जरासी वातहे ॥ परिहाँ देसी नारामिलाय, हरीके हातहे, ॥ ४६९ ॥ वनमालन वायक ॥ सरवारियौ सूलक्षणौं ज्याँरी ऊँची पाल, देखी आँसू धौवती गई निसासा राल गई निसासा राल कडुसक्याखावती परिहाँ साथणियाँदे सीखक मिझल्यौ गावती ॥ ४७० ॥ कँवरजी वायक ॥ तें धणदेखी रोवती कियानम्हानूं चीत॥ पीट फिरचाँसूंपारखी

याही जगतकी रीत ॥ याही जगतकीरीत प्रीत संसारकी परिहाँ देवेपलक भर पीठ नारहै पारकी ॥४७१॥वार्ता॥तरेवन मालन हसकर पाछौ कोंई कहैछै॥वनमालन वायक ॥ चंद्रायणाँ॥कँवर आप मतजाणज्यौ वाण्यासूं वरवास॥पिंजररथमेंमेंलियौ जीव तुमारे पास,जीव तुमारेपास मनापिसतावती॥ परिहाँ झुरझुर पिंजरहोय मिलणाचित्त चावती ॥ ॥ ४७२ ॥कँवर वायक ॥ वचन दियौछौ मिलण कौ प्यारी वागाँ माँय ॥ कौल वौलसव वीसरी कागद दीन्हौं नाय कागद दीन्हौं नाँय मनाँमें घातहै ॥ परिहाँ मुखमीठी मनुहार कपटकी वातहै ॥ ४७३ ॥ वार्ता ॥ तरे वनमालन सवलंगारे हात रौ कागद कंवरनें देवैछै और मुख वचना समा- चार केवेछै वनमालन वायक ॥ चंद्रायणाँ ॥ यौ कागद ल्यौ कँवरजी सायधण दीन्हौंमौय ॥ मुख वचनाँ यूंकहद गई तुरत बुलायातोय तुरत बुलाया

तोय कवेगा जावज्यौ ॥ परिहाँ ऊभीजौवे बाट देर मत ल्यावज्यौ ॥ ४७४ ॥ वार्ता ॥ इतनी सुँणनें कँवरजी आगे रवानें हुवा तरे गेलारतूनें गेलौ पूछेछे ॥ कँवरवायक ॥ दोहा ॥ पंथी पारानगरकौ दीजे पंथ भताय ॥ इणमारग प्यारी गई हसै करौवत जाय ॥ ४७५ ॥ पंथीवायक ॥ सूधौ पारानगरकौ मारग राज कँवार ॥ तुरत बुलाया कामणीं कीज्यौ मती अँवार ॥ ४७६ ॥ वार्ता ॥ कँवरजी आगे गया इतराकमें पाणीं रीतिसलागी ॥ और सरवर पिण नजीक आय गयौ ॥ तरे सरवरकीतीराँ जायने पाणी पीवणवासते हातदेखियौ तौ आगे हातरी हथेलीमें दोहो लिख्योछे तरे दोहो वाचनें मनमें विचारकरेछे ॥ और पाणीं पीवणरो पिण ध्यानधरेछे ॥ नें प्यारीरे हातरा दसकत नहीं धोवणाँ इस्यौ बिचार करनें दोहो कहैछे ॥ कँवरवायक ॥ चंद्रायणौं ॥

कागद लिख गइहातमें किस बिध पीवाँनीर धौव तडाँ धीरज नहीं पिंजर ब्यापी पीर ॥ पिंजर ब्या पी पीर कपाती प्रेमकी ॥ परिहाँ दिनमें सौसौवार जपूँ नित नेमकी ॥ ४७७ ॥ वारता ॥ कँवरजी हातरी हथेलीरो दोहोतो लिखियो सावत राख्यौ नैं मूँढासूं झुखकर पाणीं पीवणनैं लागा ॥ उण समाँमैं सात सहेलियाँरे झूलरे झूमाँ मालण पाणीं भरणनें पेली तीर ऊपर आई ॥ तरे कँवरजीनें मूंढासूंझुकने पाणीं पीवताँ देखकर अेकसखी बो-ली ॥ सखिवायक ॥ दोहा ॥ देख्यौ येक अचंबडो सरवर पेली तीर ॥ मिरघाज्यूँ पाणीं पिवे हातन झेले नीर ॥ ४७८ ॥ दूजी सखीवायक ॥ कर मो-डेकडियाँ ग्रहे पंथी काय अवथ्य ॥ पाणीं पीवे वहलज्यूँ मौड अफूटा हथ्थ ॥ ४७९ ॥ पाणींपिवे पवंगज्यूँ इणनर किसी अवथ्थ॥हूं तोयपूछूँ हेसखी नीरन झले हथ्थ ॥ ४८० ॥ चंगामारू हेसही

पाणीं पिवेकुढंग ॥ कर राखे मुख भीजवे कांईक ऊलूअंग ॥ ४८१ ॥ वहलपवंगज्यूं जल पिये नहीं भिजोवतहथ्थ कहो झूमाँकारण किसूँ इणरो साच अरथ्थ ॥४८२॥ झूमाँमालनवायक चंद्रायणाँछंद ॥ नेहबांध्यौ परनारसूं चलण कियो थौ सथ्थ ॥ वारोई इण पूंछियौ काजल लागौ हथ्थ ॥ काजल लागौ हथ्थ देख जिव जावतौ ॥ सुणौं सखी येक बात कनेंण दिखावतौ ॥ प्यारीको सहनाँणक ली यां जावतौ ॥ परिहां होकर मनां उदास क चित्त डुलावतो ॥ ४८३ ॥ वार्ता ॥ इतरी बात झूमा मालणकी सुणनें चतुर चंपक नाम सखी बोली ॥ दोहा ॥ प्रीत करी परनारसंग चलणकोल कियो सथ्थ ॥ धण आई नांहिं जागियौ ॥ दोहो लिखियौ हथ्थ ॥ ४८४ ॥ वार्ता ॥ तरे येक सखी कंवरनें दोहो कहे छै ॥ सखि वायक ॥ दोहा ॥ पाणी झोल झकोल पी काजल देह वुहाय ॥ तो सुग

णामैं गुणहूसी फेर मिलेगी आय ॥ ४८५ ॥ येक सहेली यूं कंहे सुणज्यौराज कँवार ॥ अरज करूं करजौड़के आप पुरषम्हें नार ॥ ४८६ ॥ वार्ता ॥ सखियाँकी बातसुणनें कँवरजी पाछौ दोहो कहेछै कँवरवायक ॥ दोहा ॥ सबलंगा सिर सेवरौ दूजी पगपेजार ॥ उण विन और न आदरां राम उतारे पार ॥ ४८७ ॥ झूमाँ मालन वायक ॥ किण अह-नाणाँ असतरी सबलंगा गुण रूप ॥ छँदगालीछल वल कियौ छलकरमोह्यौ भूप ॥ ४८८ ॥ कँवर वायक ॥ छल नांहि जाँणे सुंदरी कल नांहि कीन्हीं कौय ॥ उणसम और न ओपमाँ किंणसम दाखूं तौय ॥ ॥ ४८९ ॥ सखियाँ वायक ॥ इसड़ी कांई ओपमाँ किसड़ी चतुर सुजाँण ॥ साच भतावौकँ-वरजी राज गलारी आँण ॥ ४९० ॥ कँवर वायक चित्र विचित्राँ पदमणीं पनामोरसी पंख ॥ सुख नासामृघ लौचनी जाँण परेवा लंक ॥ ४९१ ॥

जंघरंभका खंभसी प्यारी सुघटे घाट ॥ बाँह्याँवे लण बेलियाँ नाजुक निपट निराट॥ ४९२॥काह्य रूपकौ बरणिये नेहन दूजी ठौर ॥ हित चित्त येम मिलावियौ दायंन आवे और ॥ ४९३ ॥ वार्ता ॥ इसी ओपमाँ सुणनें झूमाँ मालण कँवरजी नैं पाछौ दोहो कहनें नानत देवेछै के हे कँवरउण नारका जौबनकौ रस कस तौ सारौ तें लेलीयोनें अबे फेर क्यूँ झुरेछै ॥ झूमाँमालणवायक ॥ दोहा आभौटपके रसचुवे म्हें जाणूँ गुलनार ॥ रसक ससारौ तेंलियो अब क्यूँ झुरै गिंवार ॥ ४९४ ॥ वार्ता ॥ झूमाँ मालणकेनें कँवर सुदबुदरे आपस में बात बत लावण हुई नें अबे कवरजी आगे चालिया मूमजलाँ दरमजलाँ प्यारीको सँदेसौ पूछ ताथका पारानगर पहुंथा आगे नवलखा बागमें जायनें उतारिया ॥ तिको बाग किस्योहेकछै के जिणरी ओपमाँ तो देख्याँ हीजबणआवे ॥ जिणबा

गमे बाग वान मालन तिकी पिण रूपरी रंभानें गुणाँरी खांन देहरी सुखमालनें चातुरीमें घणी सु-जाण तिकीवन मालण कँवरजीनें देखकर मोहित होगईनैं सेवराहार फूल छडियाँ गूँथकर कँवरजीरे निजर गुदराई तरे कँवरजी पांच मोहोरनौछावर की दीन्हौं ॥ अबे बनमालण कँवरजीरी हाजरीमें हाजररहेछे ॥ नेंसारी सरभरारी तयारी कर रसौ वडौ करावण री कहेछे ॥ प्रथीनाथ आप तौ रसौ वड़े काँसौ आरोगने सुख फरमावे नें मनें हुकमहौ यसू म्हें गेद गजराम्हारे सेठरे लाडवहू कँवराणी जी आयाछे जिणवासते तयार करूँ॥ तरे कँवरजी पूँछियौ केहार गेंदगजरा किण वासते तयार करो छौनें किस्या सहूकाररे वरे लेजावसौ ॥ जरावन माली की लड़की बोली ॥ रूपसी कँवरके कँव-राणी सवलंगा नाम जिणारे पोंहोंचसी ॥ नें गेंद गजरा हारफूल रौजीनाँ पहुचेछे ॥ तरे कँवरजी

कयो आजल्यावो म्हे गूंथाँ ॥ जद कँवरजी गूंथ वालागा ॥ नेंगजराये पूरव पल्ली करनें कागद लि ख्यौके म्हे बागमें आयाछाँ ॥ अबे मालन हारसे वरागजरालेयनें सबलंगाके पास आई ॥ तरे सब ग्यादेखकर मालीकी लड़कीनें कांई दोहो कहेछै ॥ सबलंगावायक ॥ दोहा ॥ मालीकी तूँडी करी सुणजे वैंणसमाज ॥ थारा गूंथ्या यह नहीं औरहिं गूंथ्याँ आज ॥४९५ ॥ वन मालन वायक॥ छंद चौझड़िया ॥ बिचबिच चंपौकली गुलाव सुरंग है ॥ भावज म्हारी गूँथ्या नाजुक अंगहै ॥ सुंदर वहुत स्वरूपक नैंन कटारियां ॥ चंचल चतुर सुजाणक फुलड़ी पाड़ियां ॥ यह म्हेंल्याई आजक चौसर लीजिये ॥ रीझ मौज वखसीस खुसी हुय दीजिये ॥ ४९६ ॥ वार्ता ॥ वन माल नकी वात सुणनें सब लंगा घणीराजी हुईनें ५ असर फियां इनामकी दीनीं॥ और कह्योके गजरा गूँथण

हार छै जिणनें सौरा सुखी राखजे ॥ इणकनाँसूं गजरा फेर गुंथायबौ करजे ॥ थारे इनामकी कुमीं नाहिं राखूँ ॥ इतरी भोलावण देयनें बागवानकी लड़कीनें पाछी बिदाकरी ॥ तरे वन मालण राजी कुसी हसती खेलती आई ॥ जद कँवरजी पूछियौ केआज तौ हसौ घणाँसौ कारण काँईं ॥ जराँ माली की बेटी बौली कँवर साब आपरा प्रताप सूं इनाम पायौ ॥ तरे कँवरजी कह्यो फेर गूँथ देस्याँ जरा कही ठीक छै ॥ इतराकमें रात हुई तरे वन मालन फूलाँरी सहज तयार करनें कँवरजीसें अरज गुद राईके प्रथीनाथ सुख फरमावें ॥ और पगचंपी में दासी हाजर है ॥ तरे कँवरजी पाछो काँईं जुवाब दीयौ नहीं क्यूँके वहतो जत सतरा राखणवाला छा और प्रीतका भूखा छा ॥ फेर दूजो दिन हुवो तरे गजरा गूं थावणरे मिस सबलंगा सुजाण रायनें

बागामें मेली तरे सुजाण राय गजरा हार सेवरांरे मिस कँवरजी सूं बागमें आय मिली॥ कँवरजी फेर गजरा सेवरा गूंथ कर अंकपल्लीमें मिलणरा दोहा लिखकर मालणनें दीया॥ तरे वनमालण गजरा लेयकर सवलंगारे महलाँ गई॥ नेंफेर कयो म्हारी भावज गूंथिया छै॥ जराँ कयो काले थारी भावजनें लेती आवजे॥ तरे वन मालण पाछी आई॥ जद कँवरजी पूछियो कहो काँईं बात चींत हुई॥ तरे मालीकी बेटी बोली कँवरजी साव कांईं कहूं म्हारामें तो बडी मोटी कुवद हुई॥ जद कँवरजी कयो, काँईं कुबद हुई॥ तरे बनमालीकी बेटी बोली, कँवरजी साब, म्हैतो आपको नांवतोनहीं लीयो॥ और म्हारी भावजरे हातरा गूंथियोड़ा गजरा हार सेवराछै इसी कही, जराँ, सवलंगा कुँवराणी कयो छैकै, गूंथणवालानें

अठेल्यावजे ॥ तरेहू हेंकारो भर आईहूँ ॥ जराँ कँवरजी बोल्याँ कांई औरतरह छे ॥ म्हेंचालस्याँ जराँ तीसरे दिन कँवरजी, जनानों भेष धारनें मालणरे साथेगया॥ और सबलंगा रे महलाँ दाखल हुआ॥ जराँ सबलंगाकी नणद कांई दोहाकहेछे॥ नणद वायक॥ दोहा ॥ पाँव मचड़को म्हें सुण्यो तोसिर कितोक भार ॥ उभी रहज्ये मालणी पूछे राज कँवार ॥४१७॥ अेडी परखी पीठसूं कछभुज करको खाय ॥ भाभी अरजी साँभलो नारी नांहिं दिखाय॥ ४१८॥ सबलंगा वायक ॥ दोहा ॥ इसी झूटथे बोलता, इसीनदेखी कोय ॥ परतक नारी दीखती, पुरुष कहाँसे होय॥ ४१९ ॥ वार्ता जद कँवरजीके औरसबलंगाके निजरमेंलोतो हुवो पिणबोलणों हुवो नहीं॥अबे सबलंगा सनकारीकरी के आजतोथे जावो॥जराँ कँवरजी उण दिनतो निज

रयाँ मेलो करनें पाछाआया ॥ अठा आगे निज रयाँ मेलो वीनहीं ॥

इति सुदबुद सब लंगाकी वार्ता पारानगर प्रवेसवनमालण रूप धारण साबलंगा मिल विछड़न वर्णन सहा सिवकरण रामर-तन माहेस्वरी मारवाडी, मूंड़वा वाला कृत, दशम प्रकाश १०स०

अथ सुदबुदसबलंगाकी वारता एकादशप्रकाशप्रारंभः॥

वार्ता ॥ अबे नवो महल औरमंदिर संपूरण हुवणनें आयो क्यूंहींक सिखर अधूरो रयो और चेजाराको काम सरूछो जिणसें फेरकँवरजी मजू र वणनें माथेछींतरी गाराकी लेकर, चेजा रानें गारो देवणरेमिस सबलंगानें दोहा कहेछे॥ सुदबुद वायक ॥ छंद दीर्घचंद्रायणाँ ॥ इसक कि

यौ लाखे फूलाणीं वींजा सौरठ नार ॥ सुदबुद ढौ वे छीतरी लेचेजारा गार ॥ लेचेजारा गार इसक भर पूरहै ॥ परिहाँ लग्यानेंणदा वाँणक चकनाँचूरहै ॥ ८०० ॥ इसक किया लेले ओर मजनूँवींजा सौरठ नार ॥ सिरपरढौवाँ छीतरी ले चेजारा गार लेचेजारा गार कराँझाहीरके ॥ परिहाँ सख कलंदर स्याहक झुख मल पीरके ॥ ८०१ ॥ इसक किया लंकापत रावण इंद्र हरी परनार ॥ इसक कियाकीचक कमला पत लेचेजारा गार ॥ लेचे जारा गार कवाँ जव्वाँनसूं ॥ परिहाँ पदमण पड़दा माँह सुणें नहिं कानसूं ॥ ८०२ ॥ दीपकजौत पतंग ज्यूँ जल मछलीके प्यार ॥ सुदबुद ढौवे छीं तरी ले चेजारा गार ॥ ले चेजारा गार गरजकी रीतहै ॥ परिहाँ छिपरहि पड़दामाँह करे कुँणचीतहै ॥ ८०३ ॥ मस्त परी ज्यूँ मनलग्यौ पड़दे पदमण नार ॥ इसक जहूरी जिंदवे ले चेजारा

गार ॥ ले चेजारा गार ॥ कसिरपर ढौवस्यौं ॥ परिहाँ कदेइक नाजुक नार निजर भरजौवस्याँ ॥ ५०४ ॥ झुरझुर कर पिंजर हुवा देखे सब संसार राज कँवर सिर छींतरी लेचेजारा गार ॥ लेचेजा रागार ॥ इस्यौ दिन होवसी ॥ परिहाँ राजी होसी राम निजर भर जोवसी ॥ ५०५ ॥ पढता येकण पाटड़ी रमता राज कँवार॥मिलबाका साँसापड्या लेचेजारा गार ॥ लेचेजारा गार कौल कियो रात डी परिहाँ लौटे गाल्यौ लूंण कबूली बातडी ॥ ५०६ ॥ इसक मोहौ वतक्षन लग्यौ पिंजर पीरअ-पार ॥ हेला देदेहारिया ले चेजारा गार ॥ लेचेजा रागार पुकारूं जोरसूं ॥ परिहाँ बैठी पड़दामाँहसु-णैं नहिं सोरसूं ॥ ५०७ सुदबुद तुज कारण अठे आय खडाछैवार ॥ टुकदरसणदे सुंदरी लेचे जारा गार ॥ लेचेजारा गार कृपा अब कीजिये॥ परिहाँ पूरब प्रीत विचार महौला लीजिये॥ ५०८ ॥तुज

कारण घर छौडिया राज पाट ओरनार ॥ तूं छिप बेठी महल में आडा पड़ दाडार ॥ आडा पड़दा डार यादवी नाँकरे ॥परिहाँ॥ म्हैं कुल छौडी काँण तेरा जिव क्यूं डरै ॥५०९॥ दोहा गांव बसो दीसौं नहीं नहींज अधिकौ प्यार ॥ दरसणही दुरलभ हुवो जौमिलते लखवार ॥ ५१० ॥ सज्जन दुरजन विहुतणाँ असवर वौल चितार॥ नयण भलक्का न्हाँखता दिनमें सौ सौवार ॥ ५११ ॥ सुंदर मृघनेंणीं सही भणताँ भाख्यौ बोल ॥ बचन दियो छो बागमें कदे निभास्यो कौल ॥ ५१२ ॥ वार्ता ॥ इतरा करा समा जौगमें नवो महलनें मंदर तयार हुवौ ॥ और महलनें मंदररी प्रतिष्ठा होवणरी तयारी हुई ॥ जराँ जात परसूं देवणरी ठहरी ॥ जद आज परवा बँटावणीं सरू करी ॥ अबे सबलंगाका हात सूं येक येक कटौरीतो गूघरीनें येक येक खाजौ दिरावे छै ॥ सब लंगा आपरे हात सूँ बाँटे

छै ॥ इतराकरा समाँजोगमें रातपड़ी तरे कँवरजी जोगीको भेष करनें अलख जगाव ताथका परवाले वणनें गया ॥ तर दोहो कहे छै ॥ कँवर बायक ॥ दोहा॥जेंण कुरंग सुरंग धण, सुख उज्जल वरसंत ॥ से सुंदर इणगोखमें कोको कौन कहंत ॥ ८१३ ॥ वार्ता ॥ इतरी वात जोगीका मूंढाकी सुणनें सब लंगाकी नणद बोली नणद बायक दोहा ॥ किण कारणरे जोगनाँ पर अँगणें भरमंत ॥ स्वसनेहीको बिछड़नों सो फिर फिर चाहंत ॥ ८१४ ॥ कँवर जोगी बायक ॥ खावो पीवो बीद्रमो मकरोमाँ हरी तात ॥ जिण देसाँमें म्हेवसाँ सोभिक्षा माँगे रात ॥ ८१५ ॥ वार्ता ॥ सबलंगा इतरीबात सुणकर वारे आई और कटोरी भरकर ऊपर सूं सिखर उतारनें मोडी कर दीन्हीं ॥ और आँखमें सूं काजल लेकर खाजाके लगाय आधो खाजो दीन्हौं ॥ कह्यो आधी रातका आपणें मोडे मिंदर मिलाप

हौसी पछे लेकर हातमें मौती दिखाया ॥ तरे सब लंगाकी नणद कांई दोहो कहैछै॥ नणदल वायक ॥ दोहा ॥ पारस पींपल, सजल जल, सूवासाल चरंत ॥ येकयेक सूं मिलरह्या, कोको कौन कहंत ॥ ५१६ ॥ इण नगरी नुगुरा वसे सुगरावसे नकोय ॥ कर ऊपरकागा चुगै, कोको कहैन कोय ॥ ५१७ ॥ वार्ता ॥ तरे सबलंगा पाछो दोहो कहैछै ॥ सबलंगा वायक ॥ दोहा इण नगरी सुगरावसै नुगरावसेनकोय ॥ कर ऊपर हंसा चुगै, कोको कह सीसौय ॥५१८॥ इण नगरी चातुर वसै मूरख बसैनकोय॥वालसनेही सायबो निजरन खंडे सोय ॥ ५१९ ॥ नणदल वायक ॥ दोहा ॥हात लकुटिया, पग चाखटिया, मौरपंख सिरभारौ ॥ कूड़ कपठकर जोगी आयो, भावज मित तुमारौ ॥५२०॥वार्ता ॥ तरे सवलंगा पाछो कहैछै॥ वाईजी मनें झूटो कलंक क्यूं लगावोछौ॥

जोगी पाँणीं माँग्यो तरेहूं तो मोती दिखाया,के जठे मोती निजपजेछे जठे जायपीवो ॥ कहताँ मोती सरोवरमें निपजैछें जठेथे पिण पाणीं सरो-वरमें जायपीवो॥म्हारे इणसूंबोलणें सूंई कांई काम छे इणतरह सबलंगा मुकरगई ॥ तरे नणद पाछो कांईं कहैछे ॥ हाँभाभीजी साची वातहै ॥ माडाँई नैणइणाँरे बाथ पड़गया, थेसाचाछौ ॥ नणदल वायक ॥दोहा ॥ हेज हियालूमिलगया मुखाँन बौल्या बैंण ॥ जोगीनें जल पावताँ, बाथपडगया नेंण ॥ ८२१ ॥ वार्ता ॥ जिणादिन सबलंगाघणाँ उछावमे आई ॥ और सुदबुद सूंचोनिजर हुई ॥ तरे सबलंगा नणदके मिस कँवरनेंकांई दोहोकहै छे ॥ हर कंवर काँई सुणेछे ॥ सबलंगा वायक ॥ दोहा, नणदल तुजमन कहाँ वसै सोमोहिदेह भताय ॥ इतउत चित डोलत फिरै किणादिसरो ल्योजाय ॥ ८२२ वार्ता ॥ सबलंगा, नणदनैं विचे

लेयकर कँवरजीनें पूछेछेकै डेरौ कठेछे और कठे मिलस्यौइणतरहमौगमसैंनसूं समझायनें ठिकाणौं पुछियौ ॥-तरे कँवरजी पाछो दोहो कहेछै॥कँवरजी वायक ॥ दोहा॥धुर दिस डेरौवागमें मिलस्याँ अंबे डाल।महलसँ पूरण हुय गयौ लीज्यौ सार सँभाल॥ ८२३ ॥गौरी वेठी गोखडा विंदी भाल दियाँ ॥ वागाँ वेगा आव ज्यौ लोचन लाल कियाँ ८२४॥ वार्ता॥ तरे सबलंगा समझ गईके उतरादी बाजू वागमैं कँवरजी आँवा नीचे लाधसी ॥ इतरी वात चींतसैंन पारसीसूं करनें कँवरजी तो पाछागया सूजोगीको भेष उतारनें पाछी आपकी पौसाखप हर राज कँवर वणकर वागमें आँवारा झाडकेनी चेसहजकी सारी तयारीकरनें वेठगया ॥ अबे सब लंगा आधीरात रेसमें उण नवा महलमें होमरो अगन कुंडछौ जिणमें घणी सीकतौ रूई नेयक दौ य सीधडाअततेल रा पटकनें धपलको करदीनों

और महलमें लाय लगायदीनी॥ और आपभी तरका कपाट जडती थकी झरोखामेंसूँ उतरनें बा गमें जाय पोंची॥ और लारे लोगाँनें इसी मालम पडीके सबलंगातो महलमें हीरहगई॥ और मह लरी अगन बुझाई नहीं बुझी॥ कारण घ्रततेलनें रूईको धपलको भारी उठियो जिणसूं महलरेकनें कोई नहिं जायसक्यो॥ अठी सबलंगा आधी रात रासमाँमें बागमें आई॥ और बागमें उत्तरादीका नीं आँवारा झाड रेनीचे गई॥ आगे कँवरजी बेठा छे॥ तरे सबलंगा हातजोडनें ताजीम बजाय मु-जरोकीनो॥ जद कँवरजी ऊठकर हात पकडनें आ-परे पास जाजम ऊपर बिठाय लीन्हीं॥ और दोनूं मिल कुसलात पूछी॥ अठे कँवरजी आगे सहज बिछायत कर राखीछी तिकीतो तयारहीछे नेजा-जम ऊपर बेठा बेठा कुसी किलोलरी वातां करेछे॥ नेलारली वातां सात जनमाँरी यादकरेछे॥ और

कहेछै दैखौ आपाँरे कितरी जगाँ मिलाप हुयहुय ने विछवौ पड़ियौ सब लंगा वायक (दोहा) मिल विछड़े विछडे मिले कँवराँके तीवार ॥ सातजनम दुख सुख सह्याविछड मिल्या भर तार ॥ ८२८ ॥ वार्ता।कँवरजीनें सबलंगा कहेछै।।देखौआपणें भाग में काँई लिखी छीसूं कितरी वारतो मिलाप हुवौनें कारज सारियाँ विना पाछो विछेवौ हुवाँ गयौ पह-ली तो इंद्रसराप दीनों तरे वंदरांरा न्यारा २कटक में जनमलीयौनें विछेवो भुगत्यो ॥ पछे मिलाप हुय नें कटकरा डरसूं कारज सारियौ नहीं नेंकुम्हा र कुम्हारी हुयगया पछे पिण सूम सिरोमण नगर जल गयौ तरे आपाँ असोक वनमें गयानें उठे चकवारा वचन सुण आपरा हुकमसूं म्हेंतो कूवा में पड़गई नेदेवांगणाँ रूपहुई तरे राजा लेगयौनें आप वंदर रयासू खिलाडी लेगयौ जठे आपणें फेर विछेवो पडगयौछौ ॥ पछे राजा जक्ष सेंणरा

महलमें फेर मिलाप हुवौ पणराजारा डरसूं आ पणोकारज सरियो नहीं नेंपछे राजाका कौपसूं मह लमेंसूं पड़कर मरगया तरे आपतो माहाराजकँवार हुवानें हूं दासीरी कूखमें जनम लेयकर अनसनाँ हुयनें बाराबरस विछवा भुगतिया फेर कासी कर वत लेयनें उजीणरा नगरसेठरे घरे जनम लेयनें नाम सबलंगा पायौ जठे पिण आप पंडित बणनें आयाछा और मिलापहुवो पणभावज राडरसूं उं-ठे पिण आपणो कारज सिद्ध हुवो नहीं पछे पढ णरीवखत बागांमें मिलाप हुवो तौ पिण कँवारीछी जिणसूं कारजहुवो नहींनें पाछो विछवो पड़गयो॥ पछे परणीजती वेलाँ वानांमें आपणो राज महलां फेर मिलापहुवौनें पाछो विछवो पड़गयौ पछे परणीजी जठे आपसें मुजरो हुवोनें हूं पारसनाथ जीरे मंदिर आई जठे आपनें निदरा आय गई उठे म्हें सारी रात विलाप करवौकरी पण आप जाग्या

नहीं जठे फेर मिल कर बिछसो पड़गयौनें कारज सरियौ नहीं ॥ पछे आपपारा नगर पधारिया जठे मालणरी साथे आप आयातौ पिण नण दलका डर सूंवातहुई नहीं ॥ पछै आप जोगीवणकर आया जठेपिण नणदल वैरसाजियोसू वातही करणपाई नहीं, ॥ अबे आपणें विधातामेल मिलायौछै, सू आज आनंद पुरवक, सारामनरा मनोरथ, सिद्ध हुसी, इतराकरा समाजोगमें कौयल आँबकी साग कतरी सौ आयनै कँवरजीरा माथा ऊपर पडी सो पड़ताँ इंप्रवाण कँवरजीरा प्राणतौ मोक्ष होगया, नैं सबलंगा रुदनकरवा लागी ॥और उण आँबानें और कौयलनें सरापदियौ ॥ सबलंगा वा-यक ॥ दोहा ॥ आँबा निरफल जावज्यौ कोयल भखज्यौ वाज ॥ घर लाखीणाँ होमियाँ तोहिन सरियौकाज ॥ ५२६ ॥ पीव बिदूक्यौ घरदह्यौ, कारज येकन सीज ॥कौयल आँबे कापुरुष तीनाँ

पड़्ज्यौवीज ॥ ५२७ ॥ वार्ता ॥ इण तरह त्रिसूर णाँकरतीथकी, काठ भेलौकरनैं कँवरजीनें गोदमें लेयकर अगनलगायलीनी और सती हौगई।दोहा। सतीहुई संग कँवरके,सबलंगासें देह सातजनमपूरा किया लिया अमर पुरतेह॥५२८॥प्राणतज्यौ नेह नाँ तज्यौ प्रेमप्रीतकी बात ॥ दुख भोग्या सुख त्यागके सात जनम रहिसाथ ॥ ५२९ ॥ सातज नम संग संचरया लाछन लग्यौ नलेस ॥ भेलाइ दुखसुख भोगकर, इंद्रलोक परवेस॥ ५३०॥वार्ता इण तरह बागमें कँवरजीनें गोदमें लेयने सबलंगा सतीहुई और सातजनम भोगकर आपरा सील संजमसूं पाछी इंद्रलौकमें पहुंची॥ओर इंद्रसूं ताली मवजायनें हातजोड़ कर हाजर हुई ॥तरे इंद्रसंतु ष्टहुयनें वर दियौ॥ के जावोथे संसारका सुखदेखो नें थारा मनरामनौरथ पूरणकरो ॥ जदमदन चंद बौलियौ केम्हेतो अबे कठेई जावाँ नहीं, ॥ हेसुर

पती म्हाँनें तो अबै आपकी हजूरमिंईज राखौ ॥ पछै उणहीं समाँमें सपत रुषी इंद्रलोकमें आय गया ॥ तरे इंद्र आदलेर सारा देवता साम्हाँ गया ॥ जठे मदन चंदपिंण गयौ सू मनुष्य रूप नरदेह पंच तत्वादि सरीर इस्यौ जाय नें सपत रुष्याँके पगाँ लागौ ॥ तरे रिषे स्वराँ बडो अचं भोकीयो ॥ के मृतलो करो मानवतन मनुष्य इंद्र लौकमें कठासूं आयो ॥ तरे मदन चंद पांछली सारी हगीगत कही ॥ जदरुषे स्वरां सुणकर संतुष्ट हुवा नें परम वैराग सहित अद्धेत ग्यान सुणायौ ॥ जव मदन चंदकौं श्रवण ग्यान हुयकर संसारको मिथ्या जाँणके वैराग धारण कर लीयौ ॥ और तपस्या करणकों नंदन वनमें चल्यो गयो ॥ अठी रंभा पिंण सत संजमसें अपणें सरीरकों दमन करके अेकांत बेठनें हरी सु मरण करणेंको स्थित हौंगई ॥ और समय पायकर आप आपकी आयू

घूरी करके मुक्तीकौं प्राप्त हुवा ॥ और इनके सातही जन्मताँई पाकमोहोवत और प्रीति रही प्रीतीके कारणसें जन्म जहाँ जहाँ लेकर संग रहे इसी तरह प्रीत जोकोई ईश्वरमें रखेगा उनका अय लौक और परलौकदोनू सुधरकर मुक्तीकों प्राप्त होवेगा.

इति सुदबुद सवलंगाकी वार्ता सात जन्म
वर्णन सहा शिव करण रामरतन दरक माहे-
श्वरी मारवाडी मूंडवे वाला इन्दोर नि
वासी कृत्त. छंद बंद. व. वार्ता बंद.
एकादश प्रकाश ॥ ११ ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.

इन्दोर—सदाशिव करन रामरतन दरक रामसागर छापखाना.

मूँडवा—(मारवाड) शिवकरन रामरतन दरक

भीलवाडा—(मेवाड) रामरतन कासीराम बुक-सेलर

मुंबई—सर्व पुस्तकालयमें मिलेगा.